₹ 15

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

अप्रैल 2012



- एकेश्वरवाद की मौलिकता
  –डॉ॰ मुहम्मद अहमद
- अनुपम इस्लामी अर्थव्यवस्था
  –डॉ॰ फ़रहत हुसैन
- मुहसिने इन्सानियत मुहम्मद(स)
  –विद्या प्रकाश
- सम्मानीय हैं वरिष्ठजन
  –अमित कुमार 'लाडी'

Al-Irfan
Residential School (CBSE)
العرفان
ریسیڈینشیل اسکول (سی بی ایس ای)

Khuldabad, Dist. Aurangabad, Maharashtra, INDIA
Contact : 02437 - 241603, 241972, Fax : 02437 - 241972
www.alirfanschool.org | E-mail : mail@alirfanschool.org

Salient Features

- The only Urdu medium CBSE residential School outside Delhi.
- Uudu, Semi English and English medium school.
- Qualified, Well trained and dedicated faculties.
- An effective student-teacher-relation, individual attention.
- Picturesque, serene, hygienic environment.
- Spacious, airy and well furnished class rooms.
- Utilitarian campus.
- Computer lab, rich library, Science laboratories and virtual Classrooms
- Tradition of 100% results.



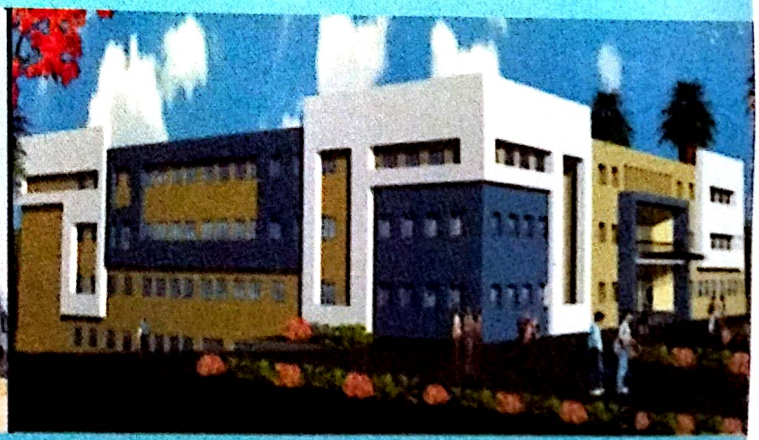

Gulam Rahmani
Secretary
9545778789

Neher Zakir
Principal
9552731638

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 21 अंक 12 जून 2012

क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह की तसबीह कर रहे हैं वे सब जो आसमानों और ज़मीन में हैं और वे पक्षी जो पंख फैलाये उड़ रहे हैं ? –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं
संपादकीय मामलों के लिए लिखें–
संपादक, 'कान्ति' मासिक
डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव
जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025
ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार
एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–
प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक
डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव
जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025
फोन–(011)–26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 15/- विशेषांक रु० 25/-
वार्षिक रु० 160/-, दो वर्ष 300/-, पांच वर्ष 700/-
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–60 रियाल
यूरोप व अमेरिका से–25 US डॉलर
वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

दोहे

जो जन महा विपत्ति में होते नहीं अधीर ।
वे ही पाते हैं विजय, वे ही होते वीर ॥

राग-द्वेष जिसमें नहीं, ऐसा मनुज महान ।
खिलता है संसार में जल पर कमल-समान ॥

नहीं परस्पर यदि हुआ मन का मन से मेल ।
जग में ऐसी मित्रता, ज्यों पानी पर तेल ॥

जिसकी जैसी वासना, उसका वैसा ध्यान ।
भौंरा सब कुछ छोड़कर करता मधुरस पान ॥

जाने कितने ही हुए धनी-बली महिमान ।
किन्तु एक दिन काल के बने सभी मेहमान ॥

जिसका दया स्वभाव, वह कभी न होता दूर ।
साबुन से क्या कोयला होता कभी कपूर ॥

नहीं लोक का शोक है, नहीं देह का दर्प ।
ज्ञानी तन त्यों त्यागता, ज्यों केंचुल को सर्प ॥

व्यर्थ लोक की साधना, व्यर्थ शास्त्र का ज्ञान ।
यदि न आत्म-विज्ञान से सके स्वयं को जान ॥

क्यों बैठे मन मार कर, चलो, करो शुभ काम ।
जग में जीवन है सदा चलने का ही नाम ॥

वाह-वाह की चाह में भूला सच्ची राह ।
पछताएगा अंत में हाथ लगेगी आह ॥

समय-समय का फेर है, समय-समय की बात ।
कभी उजाली रात है, कभी अंधेरी रात ॥

यूं ही मत बैठे रहो, धरे हाथ पर हाथ ।
उठो, चलो-आगे बढ़ो, तब सब देंगे साथ ॥

भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'
हिन्दी सहकार संस्थान, 362,
सिविल लाइंस, उन्नाव (उ०प्र०)



कहां क्या है ?

दोहे	–भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'	3
कुरआन ज्योति		5
शुभ सूचनाएं देना (हदीस मंजरी)		6
भ्रष्टाचार पर कैसे लगे प्रभावी रोक ? (संपादकीय)		7
गुजरात नरसंहार से लोकतंत्र कलंकित (आपके पत्र)		9
बदलते मानदंड (उद्‌गार)		14
प्रभु की दयालुता का प्रतीक है इस्लामी अर्थव्यवस्था	–डॉ॰ फ़रहत हुसैन	15
मुहसिने इन्सानियत हज़रत मुहम्मद साहब	–विद्या प्रकाश	18
शान्ति-धर्म इस्लाम	–डॉ॰ अब्दुल मुग़नी	19
ग़ज़ल	–डॉ॰ 'दरवेश' भारती	25
अनेकेश्वरवाद की वास्तविकता	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	26–27
ग़रीबी उन्मूलन के प्रभावी उपाय	–डॉ॰ फ़रहत हुसैन	39
घमंड का पुतला (कहानी)	–मुंशी प्रेमचन्द	41
महिला सुरक्षा का सवाल	–जे॰ के॰ शास्त्री	45
वरिष्ठ नागरिक : सम्मान एवं सेवा के पात्र	–अमित कुमार लाडी	48
स्वास्थ्य चर्चा		50



(60) ...अल्लाह की राह में जो कुछ तुम ख़र्च करोगे उसका पूरा-पूरा बदला तुम्हारी ओर पलटाया जाएगा और तुम्हारे साथ कदापि ज़ुल्म न होगा ।

(61) और ऐ नबी ! अगर दुश्मन सुलह और सलामती की ओर झुकें तो तुम भी उसके लिए तैयार हो जाओ और अल्लाह पर भरोसा करो । निश्चय ही वही सब कुछ सुनने और जानने वाला है (62, 63) और अगर वे धोखे की नीयत रखते हों तो तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है ।[45] वही तो है जिसने अपनी सहायता से और ईमान वालों के द्वारा तुम्हारी हिमायत की और ईमान वालों के दिल एक-दूसरे के साथ जोड़ दिये । तुम धरती का सारा धन भी ख़र्च कर डालते तो इन लोगों के दिल न जोड़ सकते थे, मगर वह अल्लाह है जिसने इन लोगों के दिल जोड़े,[46] निश्चय ही वह बड़ा ज़बरदस्त और तत्वज्ञ है ।

–क़ुरआन, 8 : 60-63

45. अर्थात अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में तुम्हारी नीति भीरुतापूर्ण नहीं होनी चाहिए, बल्कि अल्लाह के भरोसे पर वीरतापूर्ण और साहसपूर्ण होनी चाहिए । शत्रु जब संधि-वार्ता की इच्छा व्यक्त करे तो निस्संकोच उसके लिए तैयार हो जाओ और संधि के लिए हाथ बढ़ाने से इस कारण इन्कार न करो कि वह अच्छे इरादे से संधि नहीं करना चाहता, बल्कि विद्रोह का इरादा रखता है । किसी की नीयत बहरहाल निश्चित रूप से मालूम नहीं हो सकती । अगर वह वास्तव में संधि ही का इरादा रखता है तो तुम ख़ामख़ाह उसकी नीयत के प्रति संदेह करके ख़ून-ख़राबे को क्यों आगे बढ़ाओ और अगर वह विद्रोह का इरादा रखता हो तो तुम्हें अल्लाह के भरोसे पर वीर होना चाहिए । संधि के लिए बढ़ने वाले हाथ के जवाब में हाथ बढ़ाओ, ताकि तुम्हारी नैतिक श्रेष्ठता प्रमाणित हो और लड़ाई के लिए उठने वाले हाथ को अपने बाहुबल से तोड़कर फेंक दो, ताकि कभी कोई क़ौम का ग़द्दार तुम्हें नर्म चारा समझने का साहस न करे ।

46. संकेत है उस भाईचारे और प्रेम व लगाव की ओर जो अल्लाह ने ईमान लाने वाले अरबों में पैदा करके उनको एक मज़बूत जत्था बना दिया था, हालांकि उस जत्थे के लोग उन विभिन्न क़बीलों से निकले हुए थे ज़िनके बीच सदियों से दुश्मनियां चली आ रही थीं । मुख्य रूप से अल्लाह की यह मेहरबानी औस व ख़ज़रज के मामले में तो सबसे ज़्यादा उभरी हुई थी । ये दोनों क़बीले दो ही वर्ष पहले तक एक-दूसरे के ख़ून के प्यासे थे और बुआस की प्रसिद्ध लड़ाई को कुछ ज़्यादा दिन नहीं बीते थे जिसमें औस ने ख़ज़रज के और ख़ज़रज ने औस के अस्तित्व को ही मानो समाप्त करने का निश्चय कर लिया था । ऐसी तीव्र शत्रुताओं को दो-तीन साल के भीतर गहरी दोस्ती और भाईचारे में बदल देना और इन विरोधी तत्वों को जोड़कर एक सीसा पिलाई दीवार बना देना जैसा कि नबी (सल्ल॰) के समय में इस्लामी जमाअत (गिरोह) थी, निश्चित रूप से इन्सान की शक्ति से परे था और सांसारिक साधनों की सहायता से यह महान कारनामा अंजाम नहीं पा सकता था । अतः अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब हमारे समर्थन और सहायता ने यह कुछ कर दिखाया है तो आगे भी तुम्हारी नज़र सांसारिक साधनों पर नहीं, बल्कि अल्लाह के समर्थन व सहायता पर होनी चाहिए कि जो कुछ काम बनेगा उसी से बनेगा ।



शुभ-सूचना देना वांछनीय

● हज़रत इब्न शुमासह से रिवायत है । वे कहते हैं कि हम हज़रत अम्र बिन अल-आस (रज़ि॰) के पास मौजूद थे । उस समय वे प्राण त्यागने की अवस्था में थे । वे देर तक रोते रहे और उन्होंने अपना मुंह दीवार की ओर कर लिया । उनके बेटे ने (सांत्वना देते हुए) कहा : पिता जी, क्या अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने आपको ऐसी और ऐसी ख़ुशख़बरी नहीं दी थी ? उन्होंने अपना मुख सामने किया और कहा : जिस चीज़ को हम सर्वश्रेष्ठ समझते हैं वह यह गवाही है कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और यह कि मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के रसूल हैं । मैं तीन हालतों से गुज़रा हूं । मैंने आप (सल्ल॰) को इस हाल में भी देखा है कि मुझसे बढ़कर अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से द्वेष और दुश्मनी रखने वाला कोई और न था । और मुझे इस बात से बढ़कर कोई और चीज़ प्रिय न थी जितनी यह बात कि यदि मुझे अपने पर वश और ज़ोर प्राप्त हो तो मैं आपको क़त्ल कर दूं । यदि मैं इस हाल में मर जाता, तो निश्चय ही मैं नारकी होता । फिर जब अल्लाह ने मेरे दिल में इस्लाम को स्थान दिया, तो मैं नबी (सल्ल॰) के पास आया और कहा : आप अपना दायां हाथ बढ़ाइये ताकि मैं आपसे 'बैअत, करूं (अर्थात आपके आज्ञापालन का वचन दूं) आपने अपना दायां हाथ बढ़ाया, तो मैंने अपना हाथ समेट लिया । इस पर आपने कहा : "ऐ अम्र, तुम्हें क्या हो गया है ?" मैंने कहा : मैं एक शर्त रखना चाहता हूं । आपने कहा : "तुम क्या शर्त रखना चाहते हो ?" मैंने कहा : यह कि मुझे क्षमा कर दिया जाए । आपने कहा : "क्या तुम नहीं जानते कि इस्लाम पिछले गुनाहों को समाप्त कर देता है और यह कि हिजरत (अल्लाह के लिए घर-बार छोड़ना) भी पिछले गुनाहों को समाप्त कर देती है और यह कि हज से भी पिछले गुनाह समाप्त हो जाते हैं ?" उस समय अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से बढ़कर मुझे कोई प्रिय न था और न मेरी दृष्टि में आपसे बढ़कर कोई महान था । आपकी महानता और प्रताप के कारण मैं आपकी तरफ़ भर निगाह देख नहीं सकता था । और यदि मुझसे आपके रूप-रंग के बारे में पूछा जाए तो मुझ में उसके बयान करने का सामर्थ्य नहीं क्योंकि मैंने आपको भर निगाह देखा ही नहीं । यदि मेरी इस हाल में मृत्यु हो जाती, तो मुझे आशा है कि जन्नत वालों में सम्मिलित होता । इसके पश्चात मुझे ज़िम्मेदार और हाकिम बनाया गया । मैं नहीं जानता कि इस सिलसिले में मेरा क्या हाल है ? तो जब मेरी मृत्यु हो जाए तो न मेरे (शव के) साथ कोई रोने वाली जाए और न आग । और जब तुम मुझे दफ़्न करने लगो तो मुझ पर थोड़ी-थोड़ी मिट्टी डालना । फिर मेरी क़ब्र के गिर्द इतनी देर ठहरना जितनी देर में ऊंट ज़ब्ह करके उसका मांस वितरित कर दिया जाता है । ताकि तुम्हारी उपस्थिति से मेरी घबराहट दूर रहे और परिस्थिति मनोनुकूल हो और मैं देखूं कि अपने रब के भेजे हुए दूतों (फ़रिश्तों) को क्या जवाब देता हूं ।

–मुस्लिम

('रियाजुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय
हिन्दी वेबसाइटें
www.quranhindi.com
www.islamdharma.org
www.islamicwebdunia.com
www.islamic-videos.com

भ्रष्टाचार पर कैसे लगे प्रभावी रोक ?

भ्रष्टाचार विरोधी अभियान और जनचेतना के अल्प स्तर पर जागरण के बावजूद हमारे प्रिय देश में भ्रष्टाचार की जड़ें फैलती और गहरी होती जा रही हैं । इस वस्तुस्थिति में यह तथ्य भी शामिल है कि न्यायपालिका भी इस महारोग का शिकार होती जा रही है । देश के क़ानून मंत्रालय के न्याय विभाग की एक रिपोर्ट बताती है कि पिछले लगभग एक वर्ष के दौरान सुप्रीम कोर्ट और राज्य हाई कोर्टों के जजों के ख़िलाफ़ सरकार ने कम से कम 75 शिकायतों को 'उचित कार्रवाई' के लिए सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश और हाईकोर्टों के मुख्य न्यायाधीशों को 'फ़ारवार्ड' किया है । केन्द्र सरकार ने न्यायपालिका में भी भ्रष्टाचार का घुन लग जाने के कारण न्यायिक स्तरीकरण एवं दायित्वबोध विधेयक लोकसभा में पारित किया है । आशा की जाती है कि शीघ्र ही इसे राज्यसभा का भी अनुमोदन प्राप्त हो जाएगा । इस क़ानून के द्वारा भारतीय नागरिकों को भ्रष्ट न्यायाधीशों के ख़िलाफ़ मुक़दमा चलाने का अधिकार मिल जाएगा ।

भ्रष्टाचार के आरोपों के सिलसिले में देश के पूर्व मुख्य न्यायाधीश अर्थात सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुखिया एवं राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के पूर्व अध्यक्ष जस्टिस के॰जी॰ बालकृष्णन का नाम सबसे आगे है । सरकार ने जिन 75 शिकायतों पर कार्रवाई के लिए कहा है, उनमें से 12 मामले इनके ख़िलाफ़ हैं । इन पर भ्रष्टाचार के अन्य मामलों में भी लिप्त होने के आरोप हैं, जिनमें आय से अधिक संपत्ति रखने का मामला शामिल है । हमारे देश की न्यायपालिका जनता का विश्वास अर्जित करने में सक्षम थी, लेकिन भ्रष्टाचार की जो घटनाएं प्रकाश में आ रही हैं, उनके कारण जनता का मन अवश्य ही डगमगा रहा है । ये घटनाएं न्यायपालिका की साख को बट्टा लगाने में सक्षम सिद्ध हो रही हैं । अभी कुछ दिनों पहले सी॰बी॰आई॰ के विशेष न्यायाधीश वी॰के॰ माहेश्वरी ने दिल्ली स्थित पटियाला हाउस अदालत के पूर्व मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट 74 वर्षीय गुलाब तुलस्यानी को 1986 ई॰ में ली गयी दो हज़ार रुपये की रिश्वत के मामले में चार वर्ष क़ैद की सज़ा सुनायी । जस्टिस निर्मल यादव के ख़िलाफ़ भ्रष्टाचार का मामला अभी समाप्त नहीं हो सका है । इसके सिलसिले में मीडिया में आये दिन कुछ न कुछ ख़बरें आती रहती हैं । जस्टिस निर्मल यादव के ख़िलाफ़ सी॰बी॰आई॰ के पास इस बात के पुख़्ता सबूत हैं कि उन्होंने हिमाचल प्रदेश के सोलन में 11 बीघे ज़मीन ख़रीदने के मामले में फ़र्ज़ी दस्तावेज़ों का सहारा लिया था । 13 अगस्त 2008 को रवीन्द्र सिंह नामक व्यक्ति ने 15 लाख रुपये नक़द जस्टिस निर्मल यादव के पास भिजवाये थे, जो ग़लती से जस्टिस निर्मल कौर के घर पहुंच गये थे । सी॰बी॰आई॰ के अनुसार, यह रक़म ज़मीन ख़रीदने के लिए थी । इस गंभीर मामले में भी सुप्रीम कोर्ट के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश बालकृष्णन ने जस्टिस यादव के ख़िलाफ़ मामला दर्ज करने की इजाज़त नहीं दी थी । बाद में पंजाब बार एसोसिएशन की कोशिशों से मामला दर्ज हुआ, लेकिन जस्टिस यादव ने पिछले दिनों देश के मुख्य न्यायाधीश एस॰एच॰ कपाड़िया को चुनौती देते हुए सुप्रीम कोर्ट में दायर एक याचिका में कहा है कि उन्हें उनके ख़िलाफ़ मुक़दमा चलाने की अनुमति देने का अधिकार नहीं है । कर्नाटक हाईकोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश पी॰डी॰ दिनाकरन के ख़िलाफ़ भ्रष्टाचार के मामलों के अंतर्गत संसद में महाभियोग प्रस्ताव लाया गया, लेकिन यह भी पूर्व प्रस्तावों की भांति दिखावा सिद्ध हुआ । कई वर्ष पूर्व 22 नवम्बर 1996 को

कोलकाता हाईकोर्ट के जज रह चुके जस्टिस अजित सेन गुप्ता को 'फ़ेरा' (क़ानून) के उल्लंघन के आरोप में गिरफ़्तार किया गया था । 8 सितम्बर 1996 को आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट ने तत्कालीन मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट जनार्दन राय को तीन लाख रुपये रिश्वत लेने के मामले में निलंबित किया था । इसी प्रकार मेरठ विकास प्राधिकरण के भूमि-आवंटन मामले में कई जज अनियमितता और भ्रष्टाचार में लिप्त पाये गये । कोलकाता की पूर्व डिप्टी मजिस्ट्रेट अमिया सिन्हा अपने पद पर रहती हुई भ्रष्ट कृत्यों में लिप्त पायी गयी थीं । ऐसी ही कुछ और घटनाएं हैं । भ्रष्टाचार रूपी दरिया में न्यायपालिका के लोगों द्वारा ग़ोते लगाने का सिलसिला जारी है ।

न्यायपालिका में भ्रष्टाचार के पनपने-पुष्पित होने के कारणों में सबसे बड़ा कारण न्यायाधीशों का 'बचाव' और उनका विशेषाधिकार है, जो ढाल बनकर भ्रष्टता की रक्षा करता रहता है ? जन सूचनाधिकार क़ानून से इस विभाग को अलग रखने से भी भ्रष्टाचार का 'उत्साहवर्धन' हुआ है । वास्तव में ये बाह्य कारण हैं, लेकिन हैं बहुत महत्वपूर्ण । फिर भी ये भ्रष्टाचार के मूल कारण नहीं हैं । इसके मूल में इन्सान की धारणाएं और आस्थाएं हैं । इन्सान की धारणा जितनी अस्ल और मौलिक होगी और इन्सान जितने अच्छे ढंग से इन्हें अपनाएगा, उतना ही उसमें चारित्रिक एवं नैतिक निखार आएगा । अत: भ्रष्ट आचार-विचार पर क़ाबू पाने और भ्रष्टता को शिष्टता में परिवर्तित करने के लिए आवश्यक है कि इन्सान मौलिक धारणाओं को ही अपनाए, ताकि उसका सांसारिक जीवन भी विकारों और भ्रष्ट आचार-विचार से मुक्त हो सके और मृत्यु उपरांत पारलौकिक जीवन भी सफल हो सके । वास्तव में जब तक इन्सान के अन्दर ईशपरायणता और यह एहसास न हो कि उसके सभी कर्मों को ईश्वर देख रहा है और उसके अच्छे-बुरे कर्मों पर वह उसे पुरस्कार व दंड देगा, तब तक इन्सान में नैतिक उच्चता कदापि नहीं आ सकती । भ्रष्टाचार-उन्मूलन के लिए कठोर क़ानूनों का होना भी अति आवश्यक है ।

'जिज़्या' की वास्तविकता

'जिज़्या' छोटा-सा शब्द है किन्तु इस छोटे से शब्द की तकरार करके भारत में इस्लाम को बहुत नक्कू बनाया गया है, बहुत बदनाम किया गया है, बहुत खिल्ली उड़ायी गयी है ।

जिज़्या केवल इस्लामी राज्य (मुसलमान राज्य नहीं !) वसूल कर सकता है, उसकी भी परिस्थितियां हैं । एक तो उस दशा में जबकि कोई ऐसा राज्य जो इस्लामी राज्य से युद्ध कर रहा हो, उसे मिटा डालने पर तुला हो सुलह करने का प्रस्ताव रखे । ऐसी दशा में इस्लामी राज्य सुलह करने के लिए अधिक से अधिक जो शर्त पेश कर सकता है वह जिज़्या ही है और जिज़्या की शर्त पेश करने से पहले यह अनिवार्य है कि इस्लामी राज्य शत्रु राज्य को सत्य धर्म का प्रतिष्ठान करने का आमंत्रण दे । जब शत्रु देश इस आमंत्रण को अस्वीकार कर दे तभी जिज़्या देने की शर्त रखी जा सकती है, इससे पहले नहीं ।

ग़ैर-मुस्लिमों से जिज़्या लेने की दूसरी दशा यह हो सकती है कि किसी इस्लामी राज्य (फिर ध्यान रहे कि मुसलमान राज्य नहीं !) में रहने वाले ग़ैर-मुस्लिमों से जिज़्या लिया जाए ।

यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखनी चाहिए कि इस्लामी राज्य ग़ैर-मुस्लिमों से जिज़्या के अलावा और कोई टैक्स नहीं वसूल कर सकता जबकि मुसलमानों से ज़कात तो अनिवार्य रूप से ली ही जाएगी साथ ही राज्य के अन्य टैक्स भी उन्हें अदा करने होंगे । स्पष्ट है कि ग़ैर-मुस्लिमों पर कोई न कोई टैक्स लगाये बिना काम चल ही नहीं सकता और यदि इस्लामी राज्य यह महसूस करे कि ग़ैर-मुस्लिमों से जिज़्या लिए बिना ही काम चलाया जा सकता है तो फिर जिज़्या लेने की कोई आवश्यकता नहीं । मजबूर असहाय व्यक्ति पर तो किसी दशा में भी जिज़्या नहीं लगाया जाएगा । इस दशा में ग़ैर-मुस्लिमों पर सामान्य टैक्स लगाये जा सकते हैं ।

गुजरात संहार से लोकतंत्र कलंकित

मासिक 'कान्ति' का अप्रैल अंक देखने को मिला । 'कान्ति' ने अपनी साहसिक और बेबाक पत्रकारिता के क्रम में विशेष आयोजन के तहत 'गुजरात हिंसा' कुछ यादें, कुछ बातें–दशक पूर्व का निर्मम जन संहार' शीर्षक डॉ॰ मुहम्मद अहमद लिखित लेख प्रकाशित किया है जो पठनीय होने के साथ विचारोत्तेजक तथा असलियत को बेनक़ाब करने वाला है ।

एक दशक पूर्व गुजरात में मुसलमानों के साथ सुनियोजित ढंग से जो हिंसा हुई और जिस तरह से जुल्म ढाया गया, वह इन्सानियत को शर्मसार कर डालने वाली घटना तो है ही, इससे हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था भी कलंकित हो गयी । गुजरात हिंसा के पीछे का जो सच है, उसे विशेष आयोजन में मार्मिक शैली में बयान किया गया है और आश्चर्य तथा दुख की बात तो यह है कि इतने बड़े कांड को अंजाम देने के ज़िम्मेदार लोग आज रियासत की सियासत पर बेख़ौफ़ हावी हैं ।

हिन्दू हितवादी संगठनों ने जो यह सब किया, क्या वह हिन्दू धर्मानुकूल है ? क्या यह हिन्दू धर्म को कलंकित करने वाला नहीं है ? हिन्दू धर्म तो जियो और जीने दो के महान आदर्श का हिमायती है । चन्द लोग हैं जो अपने संकीर्ण स्वार्थ की पूर्ति के लिए धर्म को आड़ बनाकर अपने ख़ौफ़नाक मंसूबों और नापाक इरादों को अंजाम देने से बाज़ नहीं आते । ऐसे लोग अपने कुत्सित इरादों से खुद अपने ही धर्म को बदनाम करते हैं । ये वास्तविक हिन्दू धर्म के अनुयायी नहीं बल्कि साम्प्रदायिक हैं । धर्मपरायणता तथा साम्प्रदायिकता में अन्तर है । धर्मपरायणता में मानवता, करुणा तथा लोकापकार की भावना होती है जबकि साम्प्रदायिकता हानिकारक तथा ख़तरनाक होती है ।

गुजरात हिंसा के पीछे ऐसी ही साम्प्रदायिक सोच वाले मौजूद तथा सक्रिय थे जिनमें हमें हर वक़्त क़दम-ब-क़दम सावधान रहने की आवश्यकता है ।

विद्या प्रकाश
जौनपुर (उ॰प्र॰)

धर्म का मर्म

'कान्ति' मासिक का अप्रैल 2012 अंक ख़ूबसूरत-सा मुख्यपृष्ठ और उतनी ही ख़ूबसूरत पाठ्य सामग्री लिए हाज़िर हुआ । संपादक महोदय और सभी लेखकगण बधाई के पात्र हैं । आज की इस अंधेर नगरी में आपने जो सत्य की मशाल रोशन की हुई है वो क़ाबिले तारीफ़ है । अल्लाह आपकी क़लम को और ज़्यादा ताक़त दे । 'आपके पत्र' से लेकर लाला काशीराम चावला जी का लिखा 'इस्लाम में क्षमाशीलता' दृष्टिकोण के अंतर्गत रामस्वरूप झंवर जी का लिखा 'चरित्र निर्माण' बेहद रोचक और ज्ञानवर्धक लगा । विशेष आयोजन के तहत डॉ॰ मुहम्मद अहमद का लिखा 'गुजरात हिंसा : कुछ यादें कुछ बातें'' दशक पूर्व का निर्मम जनसंहार हर सहृदय इन्सान के दिल को झकझोर कर रख देता है । आज जबकि इन्सान भौतिकवाद के क्षेत्र में तरक़्क़ी के नित नये आयाम स्थापित कर रहा है फिर भी न जाने क्यों ये लगता है जैसे यही इन्सान ज़िन्दगी के एक दूसरे अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र यानी आध्यात्म में तो निपट कोरा बनकर रह गया है । एक सब्जेक्ट में 100 प्रतिशत मार्क्स और दूसरे में ज़ीरो । यह विकासशील इन्सान ईश्वर के बारे में, धर्म के बारे में, इन्सानों के साथ अपने रिश्ते के बारे में कोई सही राय या समझ क़ायम करने में नाकाम साबित हो रहा है ।

गोधरा में ट्रेन के डिब्बे को आग लगाने वाले, उसके तदोपरांत गुजरात में दंगे आयोजित, प्रायोजित करने वाले, न्याय प्रक्रिया में बाधा डालने वाले, मज़लूमों पर जुल्म ढाने वाले, चाहे किसी भी मत, सम्प्रदाय के लोग थे ये तय है कि धार्मिक हरगिज नहीं थे । वो शैतान भक्त थे ईश भक्त नहीं थे । धार्मिक वो व्यक्ति होता है जो ईश्वर की मर्ज़ी के अनुसार ज़िन्दगी बसर करे, इस सच्चाई को आत्मसात करे कि ईश्वर ने तमाम इन्सानों को एक मां-बाप के ज़रिये पैदा किया है और इस बात पर यक़ीन करे कि वो निरंकुश नहीं छोड़ दिया गया अपितु अपने तमाम क्रियाकलापों के लिए वो ईश्वर के प्रति जवाबदेह है । इससे विपरीत राय रखने वाले को साम्प्रदायिक तो कहा जा सकता है, धार्मिक नहीं कहा

जा सकता । आज भ्रष्टाचार के ऊपर बड़ी-बड़ी बातें होती हैं, अपितु भ्रष्टाचार की बड़ी संकुचित-सी परिभाषा बना दी गयी है । भ्रष्ट+आचार अर्थात, वे आचार या व्यवहार जो भ्रष्ट हैं, अनैतिक हो । भ्रष्टाचार को केवल विदेश में जमा काले धन और घोटालों तक सीमित कर दिया गया है । तो क्या अन्य सभी सामयिक बुराइयां या कुरीतियां जैसे झूठ, फ़रेब, चोरी, लूटमार, मर्डर, रिश्वतख़ोरी, कालाबाज़ारी, मिलावट, जमाख़ोरी, गुंडागर्दी, दहशतगर्दी, कन्या भ्रूण हत्या, बलात्कार, दहेज हत्या इत्यादि शिष्टाचार की श्रेणी में आते हैं । लगता है भ्रष्टाचार को परिभाषित करने में भी कहीं न कहीं स्वार्थ छिपा है । ईश्वरीय ग्रंथों की कसौटी पर परखे बिना भ्रष्टाचार को पूर्णतया परिभाषित नहीं किया जा सकता ।

इन्सान भ्रष्टाचार यानी अनैतिक व्यवहार से बचे इसके पीछे सिर्फ़ दो कारण होते हैं तीसरा नहीं । या तो इन्सान ईश्वर से डरता हो या क़ानून से । दुर्भाग्यवश अपने देश में दोनों ही पक्ष कमज़ोर नज़र आते हैं । धर्म सिर्फ़ कुछ कर्मकांडों और रीतिरिवाजों का नाम बनकर रह गया है और क़ानून बेबस और लाचार है या कुछ ताक़तवर लोगों की मुट्ठी का खिलौना है । खाड़ी के कुछ देशों में आज भी लोग ज्वैलरी की दुकान का शटर गिराये बग़ैर बेख़ौफ़ नमाज़ पढ़ने चले जाते हैं तो इस बेख़ौफ़ी की वजह यह नहीं है कि सारे के सारे लोग ख़ुदा से डरने वाले होते हैं, बल्कि अस्ल वजह वहां के सख़्त क़ानून हैं । सौ फ़ीसदी लोग किसी भी समाज में ख़ुदा से डरने वाले नहीं होते हैं । अलबत्ता वहां के क़ानून बनाने वालों में ज़रूर ईशभय रहा होगा तभी उन्होंने ऐसे सार्थक और क़ारगर क़ानून रचे कि मुजरिम जुर्म करने से पहले दस बार अंजाम सोच ले ।

मेरी तमाम हमवतनों से गुज़ारिश है कि भौतिक तरक़्क़ी की इस अंधी होड़ से कुछ पल निकाले, आत्म-मंथन करे, ईश्वर को समझे, धर्म के मर्म को समझे, इन्सानों से अपने रिश्ते पर ग़ौर करे, ईश्वर के प्रति जवाबदेही का एहसास करे क्योंकि ज़िन्दगी दोबारा न मिलेगी । वर्ना तो सुदर्शन 'फ़ाकिर' की ये पंक्तियां बड़ी सार्थक महसूस होती दिखायी देती है–

ताउम्र ढूंढ़ता रहा मंज़िल में इश्क़ की,
अन्जाम यह कि गर्दे सफ़र लेके आ गया ।

दिलशाद अली सैफ़ी
फ़रीदाबाद (हरियाणा)

ऐसे बढ़ता है भ्रष्टाचार

आज से 25 वर्ष पूर्व हरिशंकर परसाईजी की "धर्मयुग" में एक कहानी "तरक़्क़ी" छपी थी संक्षेप में है कि एक नवजवान आई०ए०एस० की एक ज़िले में नियुक्ति हुई । नवजवान ज़िलाधीश ने अपने अल्प समय में ही ईमानदारी, लगन व जनसेवा के ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किये कि पूरे ज़िले की जनता उसकी कार्य शैली से अत्यंत प्रसन्न हो गयी ।

रिश्वतख़ोरों, अपराधियों, कालाबाज़ारियों, तस्कर, के विरुद्ध ऐसी कार्रवाइयां कीं कि साधारण जनता सुखी हो गयी । अपने कर्मचारियों की परेशानियों पर वह सदा ध्यान देता था । रात में वेष बदल कर गश्त करता, साधारण से साधारण व्यक्ति की परेशानी सुनकर उसका न्यायपूर्ण हल निकालता था । ग़रीबों की परेशानियों को दूर करता था । उचित मूल्य की दुकानों की स्वयं चैकिंग करता था । एक दुकानदार ने बेईमानी की तो उसका लाइसेंस निरस्त कर दिया वह दुकानदार स्थानीय एम०एल०ए० का रिश्तेदार था ।

एम०एल०ए० साहब ज़िलाधीश कार्यालय में उससे मिलने गये चपरासी ने रोका कि साहब एक किसान की शिकायत सुन रहे हैं । आप अपना नाम लिखकर दे दीजिए ताकि मैं साहब को बता दूं । इस पर एम०एल०ए० ने चपरासी को डांट दिया और कक्ष में घुस गये । ज़िलाधीश ने उनसे बड़े अदब से कहा कि आप तशरीफ़ रखें इस किसान की शिकायत सुनकर आप से बात करता हूं । इस पर एम०एल०ए० साहब बोले पहले मेरी बात सुननी होगी । इस पर ज़िलाधीश ने कहा आप बैठिये । आपकी बात बाद में ही सुनूंगा । इस पर एम०एल०ए० साहब को बहुत बुरा लगा और कहने लगे कि आपने ज़िले में तानाशाही मचा रखी है । आपने मेरे रिश्तेदार की दुकान का लाइसेंस क्यों निरस्त किया । इस पर ज़िलाधीश ने उन्हें सारी स्थिति से अवगत कराना चाहा मगर एम०एल०ए० साहब ने उन्हें अपशब्द कहे और उनका तबादला आठ दिन में कराने की धौंस देकर कक्ष से बाहर चले गये ।

एम०एल०ए० ने राजधानी में जाकर मुख्यमंत्री जी से ज़िलाधीश की शिकायत की और फ़ौरन तबादला करने की मांग की । मुख्यमंत्री जी ने उनसे लिखित शिकायत मांगी । उस पर कमिश्नर साहब को जांच का आदेश दिया । कमिश्नर साहब ने मौक़े पर जांच कर एम०एल०ए० की ग़लती बतायी और ज़िलाधीश की तारीफ़ लिखी । एम०एल०ए० ने मुख्यमंत्री पर 10-15 एम०एल०ए० लेकर दबाव बनाया इस

पर मुख्यमंत्री ने ज़िलाधीश को राजधानी बुलाया और कहा आपका क्या कहना है ? ज़िलाधीश ने पूरी हक़ीक़त बतायी और साथ ही कहा कि अगर मेरा तबादला किया तो मैं त्याग पत्र अभी पेश कर देता हूं ।

मुख्यमंत्री ने सीनियर मंत्रियों से चर्चा की और हल यह निकाला कि ज़िलाधीश को (अतिरिक्त) कमिश्नर के पद पर तरक़्क़ी दी जाए क्योंकि उन्होंने अपनी सेवा काल में निहायत ईमानदारी और लगन से जनता की सेवा की है ।

इस तरह एम०एल०ए० को भी प्रसन्न कर दिया और ज़िलाधीश को भी ।

उपरोक्त कहानी दोहराने का मक़सद यह है कि मध्य प्रदेश इन्दौर के सिटी एस०पी० ने अपने क्षेत्र में शराब माफ़ियाओं पर सख़्ती बरती । अवैध शराब बिक्री पर रोक लगा दी । शराब माफ़ियाओं पर पाबन्दी स्थानीय एम०एल०ए० साहब को पसन्द नहीं आयी क्योंकि माफ़िया के लोग उनके मतदाता हैं ।

उन्होंने उस ईमानदार पुलिस अधिकारी की शिकायत मुख्यमंत्री से की कि इस ईमानदार पुलिस अधिकारी को मेरे क्षेत्र से तुरंत हटा दिया जाए । पुलिस अधिकारी का पिछला रिकार्ड देखा गया साथ ही पुलिस का मनोबल भी न गिरे और एम०एल०ए० की बात भी रह जाए तो ऐसे ईमानदार पुलिस अधिकारी का प्रमोशन अगली रैंक पर करने के लिए मुख्यमंत्री ने डायरेक्टर जनरल ऑफ़ पुलिस की रिपोर्ट तलब की और डायरेक्टर जनरल ने उनके अनुसार ज़ोरदार सिफ़ारिश कर भेज दी ।

उस पुलिस अधिकारी का प्रमोशन अगली रैंक पर हो गया पुलिस का मनोबल भी नहीं गिरा और एम०एल०ए० भी प्रसन्न रहे कि एक दबंग ईमानदार पुलिस अधिकारी उनके क्षेत्र से चला गया और उन्हें अपनी मनमानी करने का सुअवसर मिल गया ।

मुहम्मद मुश्ताक़ बेग
(एडवोकेट)
175/3 जूना रिसाला, इन्दौर (म०प्र०)

मुसलमान फ़क़ीरों की वाणी

'कान्ति' पत्रिका की दो मासिक प्रतियां मुझे मिली, आपका धन्यवाद । पत्रिका में इस्लाम संबंधी जानकारी बहुत अच्छी और ज्ञानवर्धक है । गुरु ग्रंथ साहब में तो बाबा फ़रीद साहब, बाबा कबीर साहब, भक्त साधना आदि मुसलमान फ़क़ीरों की वाणी शामिल है जिसका रोजाना गुरुद्वारों से गायन भी किया जाता है तथा हज़ारों लोग उसको श्रवण करते हैं ।

अव्वल अल्लाह नूर उपाइया, क़ुदरत के सब बन्दे ।
एक नूर से सब जग उपजया, कौन भले कौन मन्दे ।

सुरजीत सिंह जोबन
विष्णु गार्डन, नयी दिल्ली

'राशिफल' न देना ही अच्छा

'कान्ति' का अप्रैल 2012 अंक प्राप्त हुआ । रचनाएं हमेशा की तरह श्रेष्ठता लिए हुए है । आजकल बहुत से समाचार पत्रों में राशिफल प्रकाशित किये जाते हैं, क्या पूरा संसार इन 12 राशियों के तहत ही चलता है । एक राशि में करोड़ों व्यक्ति आते हैं तो क्या उन सभी लोगों के साथ एक ही तरह के मामलात होते हैं । जब एक व्यक्ति बीमार या दुर्घटनाग्रस्त होता है तो क्या सभी के साथ ऐसा होता है ।

'कान्ति' में राशिफल न प्रकाशित कर आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं ।

यशपाल जैन आदर्श
494/5, राजापार्क, जयपुर

ईश्वर पर भरोसा

'कान्ति' का अप्रैल 2012 अंक अभिक्रांत हुआ ।

निश्चितत: मानव को अपना कर्तव्य निर्वाह करना चाहिए किंतु सर्वदा ईश्वर को अपने हृदय में अवश्य ही स्थान देना चाहिए । मनसा वाचा कर्मणा हमें हर हाल में ईश्वर पर भरोसा करना चाहिए । अल्लाह ही हम सबका मालिक है वह जिस हाल में रखे उसमें प्रसन्न रहना ही श्रेयस्कर है । धैर्यपूर्वक प्रयास करते रहने से अल्लाह व्यक्ति को मनोवांछित अवश्य ही देगा ।

अभिराम सत्यज्ञ जयशील
हथुआ, बिहार

शर्त–जिसे हारना ही पड़ता है

तैरते-तैरते एक छोटी मछली बड़ी मछली के सामने आ गयी । बड़ी मछली ने उसे निगलना चाहा, छोटी मछली बोली–यह अन्याय है, मैं भी जीना चाहती हूं । सारी मछलियां क़ानून के सामने बराबर हैं । बड़ी मछली हंसी और बोली–मेरी बहना कहना नहीं चाहती कि हम सब समान हैं या नहीं–पर मैं तुम्हें एक मौक़ा देना चाहती हूं । यदि तुम मुझे निगल सको तो निगल जाओ ।

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)



एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 94 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2010-2011 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 12000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 15 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 125 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,
UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)
में अपनी रक़म भेज सकते हैं

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE
At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

LOCAL DONARS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)
CORE BANKIN G A/C NO.: 300402010010581, ☎ 0631-2734428 ● Mobile : 9955655960
E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

अध्यक्ष
डॉ० फ़रासत हुसैन

एज़ाज़ी नाज़िम
डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

काफ़ी देर तक छोटी मछली बड़ी मछली को अपने मुंह में डाल लेने की असफल प्रयास करती रही और जैसा कि होता आया है छोटी मछ्ली के साथ वह हार गयी शर्त । संसार की भी यही रीत है इसलिए कहा गया है–समरथ को नहीं दोष गुंसाई ।

घेवरचन्द गोदीका
किशनपोल बाज़ार, जयपुर

उद्घोष

सद्भावों की बात कर, लुटा रही है प्यार
'कान्ति' पत्रिका दे रही, जीवन को नव सार
धर्म, क़ौम में भेद ना, यही आज उद्घोष ।
रखना हरदम प्रेम का, मन में प्रिय तुम जोश ।।
लेख और कविता-ग़ज़ल, सबसे झरते फूल ।
शनैःशनैः हट जाएंगे, पथ के सारे शूल ।।

डॉ॰ शरद नारायण खरे
विभागाध्यक्ष इतिहास
शासकीय महिला महाविद्यालय,
मंडला (म॰प्र॰)-481661

समृद्धि का सवाल

मासिक पत्रिका 'कान्ति' का मार्च 2012 अंक प्राप्त हुआ । पत्रिका पढ़कर बहुत ही अच्छी लगी । 'संपादकीय' पर ''अभिव्यक्ति का नहीं, समृद्धि का सवाल'' बहुत पसन्द आया ।

बहुत ही सुन्दर मनमोहक एवं दिल को छूने वाली पत्रिका को पढ़कर अच्छा लगा । सारगर्भित लेखों का सम्मिलन बहुत ही रोचक लगा । संपादक मंडल को मेरा कोटिशः धन्यवाद ।

रावत गर्ग गोयल
04 गर्गवास राजबेरा,
पोस्ट अंडू, ज़िला-बाड़मेर

प्रभावोत्पादक

आपके द्वारा संपादित 'कान्ति' (हिन्दी मासिक) के इधर लगातार कई अंक प्राप्त हुए । पत्रिका प्रेषित करने के लिए बधाई । वर्षों पहले पटना के भूमि विकास बैंक की लाइब्रेरी में आपकी यह पत्रिका आती थी । उस वक़्त परमानंद दोषी जी लाइब्रेरी के इंचार्ज हुआ करते थे । उस लाइब्रेरी में आपकी यह पत्रिका मुझे बराबर देखने को मिल जाती थी । कई वर्ष के अंतराल के बाद यह पत्रिका पुनः देखने-पढ़ने को मिली । पत्रिका क़ाबिले तारीफ़ है । किताब लिखने में व्यस्त रहने के कारण पत्रिका की पावती को सूचना देर से दे रहा हूं । प्रकाशित रचनाएं सरस, विचारोत्तेजक और प्रभावोत्पादक है ।

श्रीकांत व्यास
संपादक : नीलायल (हिन्दी मासिक)
पोस्ट बॉक्स-16, जी॰पी॰ओ॰,
पटना-800001 (बिहार)

'कान्ति' की विशिष्टता

एक मित्र के माध्यम से आपकी पत्रिका 'कान्ति' के अध्ययन का सौभाग्य प्राप्त हुआ । यह देखकर अति प्रसन्नता हुई कि आप हिन्दी भाषा में अपनी पत्रिका के माध्यम से लोगों को 'इस्लाम' के सही अर्थ समझाने का अथक प्रयास कर रहे हैं । आज हमारे देश के अधिकांश हिस्सों में हिन्दी भाषा के जानने वालों की ही अधिकता है । इसलिए इस पत्रिका का हिन्दी में होना अपना एक अलग महत्व रखता है । मैं ईश्वर से कामना करता हूं कि आप अपने इस प्रयास में सफलता प्राप्त करें । आपके इस शुभ कार्य के लिए मेरी ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं ।

इस पत्रिका को पढ़ने के बाद मैं भी स्वयं को केवल इसके अध्ययन तक ही सीमित न रख सका, मैं क़लम उठाये बिना न रह सका ।

मुहम्मद कामरान अंसारी
शाहजहांपुर (उ॰प्र॰)

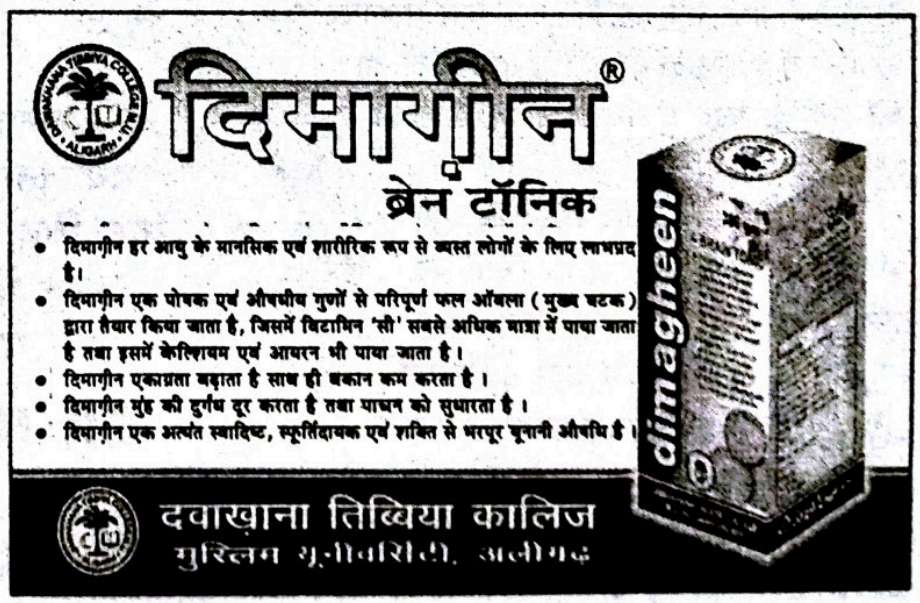

बदलते मानदंड !

युवा वर्ग देश का भविष्य होता है जो आगे चलकर देश की बाग-डोर संभालता है लेकिन आज यह चिंता का विषय है कि हमारे देश की बाग-डोर जिन हाथों में जाने वाली है क्या वह इस लायक़ हैं कि इसे संभाल सकें । इस दौर में भविष्य पर लगा यह एक बड़ा प्रश्न है ।

युवा पीढ़ी आज भारतीय सभ्यता और संस्कृति से दूर होती जा रही हैं और उस पर पश्चिमी सभ्यता हावी हो रही है । आज का प्रत्येक युवक खुद को एक्टर व युवती खुद को एक्ट्रेस के रूप में देखना चाहती है जब कोई बड़े-बड़े कंधे तक बालों वाला, कानों में कुंडल पहने अंग्रेज़ी लिबास में लिपटा लड़की नुमा युवक सड़कों पर बाइक दौड़ाता है तो शायद उसके मन में यही सोच होती है कि वह किसी फ़िल्म की शूटिंग कर रहा है । यह हाल केवल युवकों का ही नहीं बल्कि पूर्वी सभ्यता संस्कृति की धज्जियां उड़ाने में युवतियां भी किसी से पीछे नहीं हैं । जब कोई युवती घर से मॉडलिंग करने के से अंदाज़ में इठलाती हुई कॉलेज के लिए निकलती हैं तो चाहे उसके बैग में पाठ्य-पुस्तकें हों या न हों लेकिन हाथ में एक दो मल्टीमीडिया मोबाइल अवश्य होंगे । कॉलेज या यूनीवर्सिटी कैम्पस में नवयुवक जोड़े बाहों में बाहें डाले इस तरह घूमते व बतियाते दिखते हैं जैसे वह शिक्षा के पावन मन्दिर में न होकर किसी रेस्टोरेन्ट में पार्टी मना रहे हैं । यह नज़ारे महानगरों में तो आम हैं । मान-मर्यादा, लाज़-लज्जा तो आज की स्त्री के लिए गुज़रे ज़माने की बाते हो गयी है ।

पुस्तकों में छपे आदि मानव के पत्तों से आधे-अधूरे ढ़के शरीर के चित्रों की तुलना आज की किसी फैशनेबल युवती से की जाए तो कोई ख़ास अंतर न दिखायी देगा । अन्तर है तो सिर्फ़ इतना पत्तों का स्थान स्कर्ट और टॉप ने ले लिया है । सुसभ्य और सुसंस्कृत देश की स्त्री के शरीर पर लिपटे इन नाम मात्र कपड़ों के टुकड़ों को देखकर बड़ा दुख होता है ।

इन बातों के लिए और युवा पीढ़ी में होते नैतिक मूल्यों के ह्रास के लिए केवल युवा वर्ग को ही दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। बल्कि उनके बड़े भी बदलते दौर और आधुनिकीकरण का बहाना लेकर उन्हें सभ्यता और संस्कृति से अलग करने में काफ़ी हद तक योगदान दे रहे हैं । जिसके लिए वे इन्हें सुसभ्य न बनने के साधन भी उपलब्ध करा देते हैं । जब कोई व्यक्ति अपने घर में टेलीवीज़न लेकर आता है तो वह इसे अपने बच्चों की ख़ुशी का पिटारा मानते हुए व प्रसन्नता प्रकट करते हुए उन्हें इसके सामने अश्लील प्रोग्राम देखने के लिए बैठा देता है । शायद उसके ध्यान में भी नहीं आता कि आज टी०वी० पर 'सत्यवादी हरिश्चन्द' जैसे नाटक नहीं आते जिसे देखकर गांधी जी ने आजीवन सत्य बोलने का निश्चय कर लिया था । बल्कि आज इस पर खुलेआम अश्लीलता पड़ोसी जा रही है । जिसके प्रतिकूल प्रभाव हमारे सामने हैं । लेकिन न जाने कब हमारी आंखें खुलेंगी और कब हमें होश आएगा । यदि समय रहते हमें होश न आया तो इसमें कोई संदेह नहीं कि हम अपनी बरबादी का मंज़र अपनी आंखों से देखेंगें ।

मुहम्मद कामरान अंसारी
महमानशाह, शाहजहांपुर (उ०प्र०)

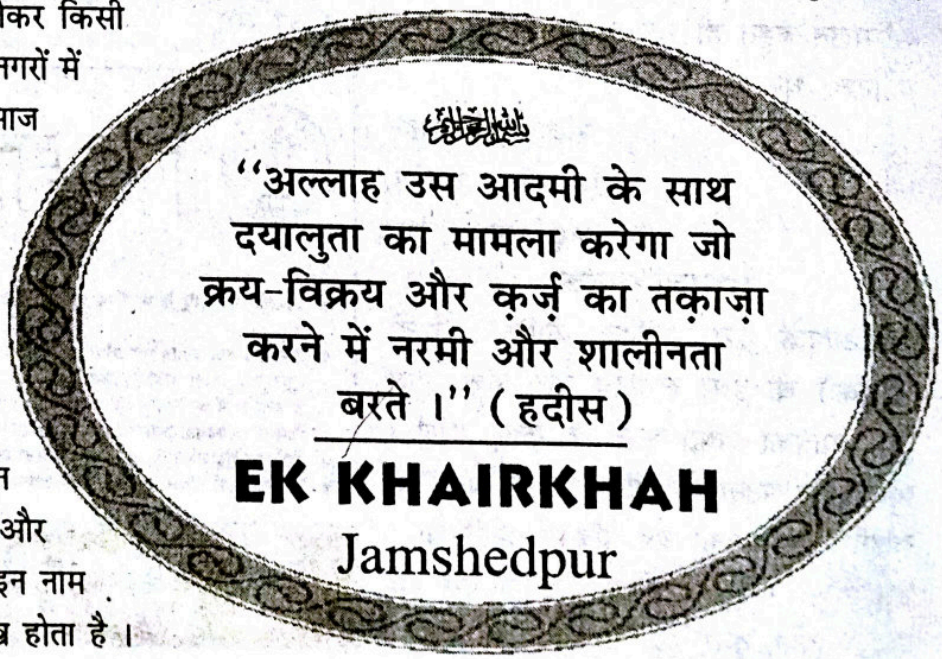

प्रभु की दयालुता का प्रतीक है इस्लामी अर्थव्यवस्था

❖ डॉ॰ फ़रहत हुसैन

'इस्लाम' शब्द का अर्थ है अमन शांति तथा आज्ञापालन व समर्पण । दूसरे शब्दों में मालिक के आज्ञापालन और उसके आगे समर्पण के द्वारा सलामती की प्राप्ति । वास्तव में इस्लाम की संपूर्ण जीवन व्यवस्था ईश्वरीय दयालुता की प्रतीक है । अल्लाह का सबसे प्रमुख गुण रहमान और रहीम (कृपाशील दयावान) है ।

पवित्र कुरआन का प्रत्येक अध्याय जिस वाक्य से प्रारंभ होता है वह यह है–"अल्लाह कृपाशील और दयावान के नाम से" कुरआन में 114 बार यही वाक्य दोहराया गया है । इसके अतिरिक्त भी अल्लाह के रहमान और रहीम होने का उल्लेख अनेक स्थानों पर है । ईश्वर ने मनुष्यों के व्यावहारिक मार्गदर्शन हेतु जो संदेशवाहक भेजे उनकी अंतिम कड़ी महामहिम हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) हैं जिनकी विशेषता कुरआन के अनुसार 'रहमते आलम' अर्थात संपूर्ण जगत के लिए रहमत, दयालुता । इसी प्रकार जो दीन धर्म या जीवन पद्धति अवतरित की गयी वह अमन, शांति और ईश्वरीय दयालुता से परिपूर्ण है । उसको अपनाकर सांसारिक जीवन भी सुखी और परलोक में स्वर्ग प्राप्ति ।

इस्लाम ने अपनी नैतिक, सामाजिक, पारिवारिक और आध्यात्मिक व्यवस्था में संतुलन और दयाभाव का जो उच्चतम आदर्श प्रस्तुत किया वह पाठक को चकित कर देता है परंतु इससे आगे बढ़कर ठेठ सांसारिक समझी जाने वाली आर्थिक प्रणाली को दयाभाव और इन्सानी हमदर्दी से भर दिया गया उसे देखकर तो आदमी कह उठता है कि यह वास्तव में अल्लाह, रहमान और रहीम द्वारा प्रदत्त प्रणाली है । सोच-विचार हेतु कुछ बिन्दु प्रस्तुत है–

1. अर्थजगत में नैतिकता, ईमानदारी

व्यापार, व्यवसाय, लेन-देन में नैतिकता वह भी वास्तविक नैतिकता कि ईश्वर देख रहा है, उसके यहां जवाब देना है । सोचिये उस माहौल में जब आदमी की परिस्थितियों से लाभ उठाने का अवसर हो, जब कृत्रिम तरीक़े से वस्तुओं को दुर्लभ बनाकर मूल्य बढ़ाए जाते हों, जब मिलावटी और नक़ली माल बेचा जाता हो, जब नापतौल में हेराफेरी एक

Prop : Abid Hussain
09413037652
09252235194

Shop : Mujahid Hussain
09214747172

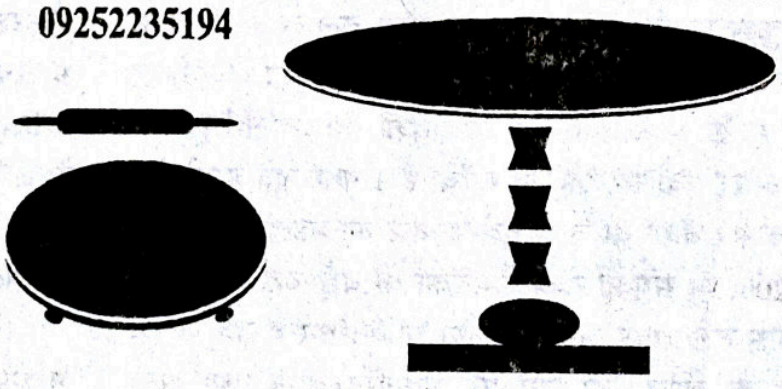

कान्ति मार्बल हैंडीक्राफ्ट

सभी प्रकार के वन पीस और ज्वाइंट पीस चकलों के निर्माता व थोक विक्रेता, मार्बल के फव्वारे तथा टेबल, टेलीफ़ोन स्टेंड, नोजल लैंप, गमले, घड़ी व फैंसी आइटम

Shop : Hotel Moti Mahal, Manglana Road, Makrana-341505
Fact : Bypass Mor, Opp : Sai Kirpa Petrol Pump, Makrana Road, Borawad (Raj.)

'कला' बन गयी हो, 'नैतिकता' का न केवल पाठ पढ़ाना बल्कि उसे बाज़ार में लागू करना यह है ईश्वरीय दयालुता की पराकाष्ठा ।

2. ज़रूरतमन्द पर ध्यान केन्द्रित

तनिक क़ुरआन के इस वाक्य पर तो विचार कीजिये– "ऐसा न हो कि तुम्हारा माल केवल धनवानों के बीच ही चक्कर लगाता रहे ।" (क़ुरआन, 59:7)

धन-दौलत, रुपया-पैसा साधन हैं । ये साधन ग़रीब तक तो पहुंचे उसकी तो सुध लो । ग़रीब के प्रति कितनी सहानुभूति है इस वाक्य में ।

3. सूदख़ोरी

इन्सानियत पर कठोरतम अत्याचार है 'सूद'। ईश्वर को कितना नापसन्द है कि 'युद्ध का एलान' है सूदख़ोरों के विरुद्ध । क़ुरआन के इस वाक्य को पढ़िये–"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और और तुम्हारा जो ब्याज लोगों पर है उसे छोड़ दो अगर तुम मोमिन हो । परन्तु यदि तुमने ऐसा न किया तो अल्लाह और उसके रसूल की ओर से तुम्हारे विरुद्ध युद्ध की घोषणा है । (क़ुरआन, 2:278-279)

सूदख़ोर की मनोदशा का चित्रण देखिये–"जो लोग सूद खाते हैं उनकी दशा उस व्यक्ति जैसी होती है जिसे शैतान ने छूकर बावला कर दिया हो ।" (क़ुरआन, 2:275)

कुछ पहले तक शायद यह बात चल जाती कि यह केवल महाजनी सूद का मामला है जिसका नक़्शा शेक्सपियर ने 'द मर्चेंट ऑफ़ वेनिस' में और मुंशी प्रेमचन्द ने 'पूस की रात' और 'सवा सेर गेहूं' में खींचा है । मगर जब हमारे देश के किसान बैंकों के क़र्ज़ तले दबकर आत्महत्या करें, और सन 2008 में संयुक्त राज्य अमेरिका के बड़े-बड़े बैंक क़र्ज़ों के बोझ तले अपने को दिवालिया घोषित कर दें तब प्रत्येक प्रकार के ब्याज और उस पर आधारित बीमा तथा अन्य आर्थिक क्रियाकलाप कितने घातक हैं इसका अनुमान सहज लगाया जा सकता है । तब सूदख़ोरों के विरुद्ध एलान-ए-जंग की वास्तविकता समझ में आ जाती है और साथ ही यह बात भी कि मात्र सूदी व्यवस्था ही ग़लत है : व्यापार , व्यवसाय साझेदारी सब सही है । देखिये ईश्वरीय आदेश–"अल्लाह ने व्यापार को वैध किया है और ब्याज को अवैध ।" (क़ुरआन, 2:276)

एलान-ए-जंग में कितना दयाभाव निहित है, क़र्ज़ से चक्रवृद्धि ब्याज के दबी सिसकती मानवता के लिए । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने ऐसे ऋणी का जो ऋण अदा नहीं कर पा रहा, क़र्ज़ माफ़ करने को पुण्य कार्य बताया । ऋणी का ऋण चुकाने में उसकी सहायता करने पर उभारा ।

4. ज़कात

प्रत्येक संपन्न मुस्लिम का कर्तव्य है कि अपनी जमा धनराशि या सोना-चांदी में से प्रतिवर्ष 2½ प्रतिशत दान करे । व्यापारिक स्टॉक पर भी ज़कात अदा करनी होती है । कृषि उपज, पशुपालन, मधुपालन आदि पर 5 से 10 प्रतिशत ज़कात है । यह किसके लिए है–ग़रीब, अनाथ, असंपन्न, ऋण के बोझ तले दबे व्यक्ति की सहायतार्थ । एक ओर ग़रीब की मदद हो रही है तथा दूसरी ओर मालदार को दीन-दुखियों का हमदर्द बनाया जा रहा है । उनके धन के मोह को स्वार्थ को नियंत्रित किया जा रहा है । बताया जा रहा है कि ब्याज मत खाओ बल्कि अपनी कमाई में से ग़रीब पर ख़र्च करो–"अल्लाह ब्याज का मठ मार देता है और दान-पुण्य को बढ़ाता है ।" (क़ुरआन, 2:276)

यह अपने धन का व्यय ईश प्रसन्नता के लिए, परलोक में अच्छे बदले के लिए । इस प्रकार संपन्न और असंपन्न दोनों की मानसिक ट्रेनिंग साथ-साथ होती है । ज़कात प्रचलित टैक्सों से भिन्न है जो ग़रीबों से वसूल तो किये जाते हैं परन्तु उनका अधिकांश भाग सरकारी कार्यों, मंत्रियों, नौकरशाहों पर ख़र्च होता है । ग़रीबों के कल्याण की स्कीमें भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाती हैं । ईश्वरीय विधान द्वारा जो प्रणाली दी गयी है वह संपूर्ण समाज के लिए कल्याणकारी है । ज़कात के कुछ बड़े लाभ इस प्रकार हैं–

(1) असंपन्न और आर्थिक रूप से वंचित वर्ग की सहायतार्थ एक प्रकार का सामाजिक बीमा ।

(2) संपन्न वर्ग में इन्सानी हमदर्दी और भाइचारे की भावना उत्पन्न करना ।

(3) समाज के कमज़ोर वर्ग को सहारा देकर ऊपर उठाना ।

(4) संपन्न और असंपन्न में भाईचारे द्वारा वर्ग संघर्ष को पनपने न देना ।

(5) मालदार के माल से कम से कम 2½ प्रतिशत का प्रवाह ग़रीब की ओर होने से अमीर ग़रीब के बीच की खायी का निरंतर घटते जाना ।

(6) आर्थिक जगत में वास्तविक धन का प्रवाह बाज़ार की ओर होने से वस्तुओं तथा सेवाओं की मांग बढ़ना जिससे

उत्पादन एवं रोज़गार में वृद्धि के फलस्वरूप आर्थिक खुशहाली का वातावरण बनना ।

(7) टैक्स नहीं ईश-भक्ति (इबादत) है इसलिए चोरी का रुझान नहीं बल्कि स्वयं हिसाब लगाकर ज़कात देने की प्रवृत्ति ।

5. आय के स्रोतों पर प्रतिबंध

यह भी ईश्वर की दयालुता का नमूना है कि उसने अपनी सूक्ष्मदर्शिता और तत्वदर्शिता के आधार पर आय व्यय के उन स्रोतों को सील कर दिया जो व्यक्ति और समाज के लिए अहितकर हैं । आय के प्रतिबंधित स्रोतों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–किसी का माल उसकी सहमति के बग़ैर या अनुचित दबाव डालकर या उसे धोखे में रखकर लेना । किसी का माल रिश्वत देकर हड़प लेना ।

(कुरआन, 2:188)

- अमानत से ख़यानत। (कुरआन, 2:283)
- चोरी, डकैती । (कुरआन, 60:12)
- नाप-तौल में हेरा-फेरी द्वारा कमाई करना । (कुरआन, 83:1-3)
- व्यभिचार और वेश्यावृत्ति से आय । (कुरआन, 24:33)
- सूदी कारोबार से आय । (कुरआन, 2:275)
- शराब और जुआ की आय । (कुरआन, 4:90)

6. व्यय पर भी कुछ पाबन्दी

अपने कमाये धन को फ़ुज़ूल में उड़ाने, दिखावे पर ख़र्च करने के बजाय संतुलित व्यवहार पर बल दिया गया है जिससे संसाधनों का अपव्यय न हो और संपन्न की इस बचत का ग़रीबों के उद्धार के लिए सदुपयोग हो सके । कुरआन की कुछ शिक्षाएं प्रस्तुत हैं–

"अल्लाह के नेक बन्दे वे हैं जो ख़र्च करने में न 'अति' करते हैं और न कंजूसी, वरन् इन दोनों के बीच 'संतुलन' पर रहते हैं ।"

(कुरआन, 25:67)

"फ़िज़ूलख़र्ची (अपव्यय) न करो, फ़िज़ूलख़र्ची करने वाले शैतानों के भाई हैं ।" (कुरआन, 17:27)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने पुरुषों को सोने के आभूषण आदि पहनने पर रोक लगायी । इसी प्रकार सोने-चांदी के बर्तनों के प्रयोग से भी रोका है । आप (सल्ल०) ने ऐसे प्रीति भोज को 'बुरा' बताया जिसमें केवल अमीरों की दावत हो ।

सारांश यह है आर्थिक क्षेत्र में यदि इस्लामी शिक्षाओं को लागू किया जाए तो आर्थिक संपन्नता और विकास के साथ-साथ इन्सानी हमदर्दी और भाईचारे का माहौल बनता है क्योंकि यह व्यवस्था ईश्वर में विश्वास और परलोक की जवाबदेही को मनुष्य के मन में तार्किक ढंग से बैठाती है । उसके स्वार्थपरता, लोभ, लालच और घमंड में कमी आती है । इन्सानों और जीव-जंतुओं के प्रति हमदर्दी का भाव उत्पन्न होता है । यही इस व्यवस्था का सबसे बड़ा योगदान है ।

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities -

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **INTEREST-FREE SOCIETY :** Provides short-term loan without interest to needy people.
4. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov - March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your cheque/draft in favour of the society

(Q. Hoda)
Chairman

(Prof. M. B. Zaman)
Secretary

JISSS, Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

मुहसिने इन्सानियत हज़रत मुहम्मद साहब

❖ विद्या प्रकाश

विश्व के तमाम धर्म प्रवर्तकों तथा महापुरुषों की फ़ेहरिस्त में ताजदारे अंबिया, मोहसिने इन्सानियत और अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शख़्सियत सबसे आला और किरदार सबसे ऊंचा, पाक और बेमिसाल है। जिस वक़्त उनकी पैदाइश हुई, उस वक़्त मुल्के अरब की सामाजिक स्थिति बहुत ख़राब थी। औरतों की न कोई सामाजिक हैसियत थी और न सम्मान था। समाज में दुख़्तरकुशी की रिवायत थी तथा लोग अपनी पुत्रियों को ज़िन्दा दफ़्न कर दिया करते थे। छोटे-छोटे क़बीलों में बंटे लोग मामूली-मामूली बातों को प्रतिष्ठा का विषय बनाकर परस्पर लड़ाई-झगड़ा करते थे, जिसमें हज़ारों लोगों के बेवजह अपनी जान गंवानी पड़ती थी। लोग शराब और जुए के लती और आदी थे। उनमें आपसी भाईचारा और प्यार व मुहब्बत का भावनात्मक रिश्ता समाप्त हो चुका था। इन तमाम अख़्लाक़ी और किरदारी बुराइयों के ख़िलाफ़ हज़रत मुहम्मद साहब ने पहल की और इन्सानियत को हिदायतुल्लाह के अनुसार ज़िन्दगी को बेहतरीन तरीक़े से जीने का रास्ता सुझाया।

पैदाइश से पहले हज़रत मुहम्मद साहब के वालिद का इन्तिक़ाल हो गया और 6 साल की मासूम कम उम्र में उनके सिर से मां के आंचल का शीतल साया भी उठा गया। इस स्थिति में उनकी परवरिश उनके चाचा हज़रत अबू तालिब ने की। उनका संपूर्ण जीवन इन्सानियत की ख़िदमत में व्यतीत हुआ। बाल्यावस्था में उन्होंने अपने चाचा की सहायता के लिए बकरियां चरायी क्योंकि उनके चाचा की माली हालत बेहतर और इत्मीनानबख़्श न थी। चाचा के लिए उन्होंने तिजारत भी की। बड़े होकर उन्होंने अरब की बिगड़ती और बदतर होती सामाजिक अवस्था को सुधारने में महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय भूमिका निभायी। उन्होंने अपने से 15 साल बड़ी विधवा हज़रत ख़दीजा से विवाह कर लिया और समाज के सम्मुख एक मिसाल क़ायम की क्योंकि उस दौर में यह बड़ी प्रगतिशीलता की बात थी और उन दिनों समाज में विधवाओं की कोई क़द्र तथा इज़्ज़त-आबरू नहीं थी। हज़रत मुहम्मद साहब के इस कार्य से समाज में यह संदेश गया कि विधवाओं को भी पूरा सामाजिक सम्मान मिलना चाहिए। उन्होंने समाज में महिलाओं के साथ होने वाले जुल्मो-सितम को रोका तथा उनकी कोशिशों से ख़्वातीन को समाज में इज़्ज़त की ज़िन्दगी मिली और उन्हें ससम्मान जीवनयापन का हक़ मिला।

मुहम्मद साहब ने लोगों को इन्सानियत का पाठ पढ़ाया। एक प्रसंग है। जब वे एक घर के सामने से गुज़रते, एक महिला उन पर कूड़ा फेंक दिया करती थी। कई रोज़ तक यह सिलसिला चलता रहा। एक दिन जब उन पर कूड़ा नहीं पड़ा तो उन्होंने लोगों से महिला के बारे में पूछा। पता चला कि वह बीमार है। वे उसका हालचाल पूछने के लिए उसके घर चले गये। उनके इस व्यवहार तथा सद्भावना से महिला बहुत लज्जित हुई। उसने पैग़म्बर से अपने दुर्व्यवहार के लिए क्षमायाचना की।

अल्लाह के रसूल तथा पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद साहब की इन्सानियत से मुताल्लिक़ अनेक उदाहरण तथा क़िस्से हैं। हज़रत मुहम्मद साहब के इसी मानवीय व्यवहार तथा जज़्बए इन्सानियत की वजह से उन्हें रहमतुललिल आलमीन यानी संपूर्ण संसार पर कृपा दृष्टि करने वाला कहा जाता है। लोग उन्हें सादिक़ यानी सत्यवादी कहते हैं। लोग अपनी दौलत उनके पास सुरक्षित रखते थे। इसलिए उन्हें अमीन भी कहा जाता है। उन्होंने अपने जीवनकाल में एक ही हज किया जिसे हज्जतुल विदा के नाम से जाना जाता है।

उनका इरशाद है, 'जब तुम रब से मिलोगे तो वह तुम से तुम्हारे कर्म के बारे में पूछेगा। ...तक़वा का पालन करने पर व्यक्ति को बुलन्दी मिलती है। ...मेरे बाद गुमराह मत होना कि एक दूसरे का गला काटने लगो।' उन्होंने कहा, अपनी पत्नी का पूरा ख़याल रखना। उसे उसका हक़ देना। उस पर ज़्यादती मत करना। अच्छा खाना और पोशाक पाना उसका हक़ है।' उन्होंने गुलामों पर भी जुल्मो-ज़्यादती न करने का संदेश दिया। वे संपूर्ण मानवता के सच्चे पथप्रदर्शक हैं।

शान्ति-धर्म इस्लाम

■ डॉ॰ अब्दुल मुग़नी

पवित्र कुरआन की प्रस्तावना अर्थात सूरा-ए-फ़ातिहा में अल्लाह की विशेषताएं, रहमान व रहीम से पहले उसकी हस्ती को "रब्बुल आलमीन" अर्थात समस्त जगत का पालनहार कहा गया है और ये दोनों विशेषताएं ईश्वर की उसी कृपाशीलता से संबंधित हैं, बल्कि उसकी व्याख्या हैं। अरबी में "रब्ब" का अर्थ बहुत विस्तृत है और उसकी एक मौलिक विशेषता सबके लिए रहमत है। ईश्वर पूरे जगत और उसमें विद्यमान समस्त वस्तुओं का पालनहार और संरक्षक है और पूरी सृष्टि अपने सृष्टिकर्ता की छत्रछाया ही में परवरिश पा रही है। रब की व्याख्या में दो पहलू मुख्य हैं। पहला यह कि ईश्वर को अपने बन्दों के साथ ऐसा गहरा और प्रबल प्रेम है जैसा कि मां को अपने बच्चे से होता है, दूसरा यह कि बन्दों पर खुद की शफ़क़त (स्नेह) बाप के स्नेह की तरह छाया किये है। ये दोनों पहलू प्रेम एवं स्नेह की पराकाष्ठा से संबंध रखते हैं।

इस दृष्टिकोण से इस्लाम में "ईश्वर" की कल्पना ईश्वर को मसीही कल्पना के अनुसार केवल बाप कह देने के "दोषपूर्ण विश्वास" से बहुत बेहतर है, क्योंकि इस कल्पना के अनुसार ईश्वर के साथ इन्सान का कोई वंशानुगत संबंध नहीं होते हुए भी इस रिश्ते की मुहब्बतों का इतना बड़ा अनुदान खुदा की ओर से इन्सान को मिल जाता है जो किसी वंशगत संबंधों से कभी मिल नहीं सकता। यही कारण है कि रब का अर्थ स्वामी व संरक्षक और मालिक व हाकिम भी है, अर्थात सामान्य एवं सामूहिक रूप से ईश्वर हर दृष्टि से इन्सान का पालनहार, संरक्षक, सहायक और मार्गदर्शक है। यह सामान्य और व्यापक रहमत की भावना है और उससे बढ़कर दया एवं करुणा की कोई कल्पना नहीं हो सकती। यह सत्य बहुत ही स्पष्ट रूप से कुरआन की निम्नलिखित आयतों में व्यक्त किया गया है–

"दंड तो मैं जिसे चाहूंगा दूंगा, मगर मेरी दयालुता हर चीज़ पर छायी हुई है।" (कुरआन, 7:156)

यही बात एक और आयत में इस प्रकार कही गयी है–

"उसने दयालुता की नीति अपने लिए अनिवार्य कर ली है।" (कुरआन, 6:12)

इसी ईश्वरीय कृपा का चमत्कार है कि मनुष्य की अनेक ग़लतियों और अवज्ञा के बावजूद उसे लगातार छूट दी जाती रही है।

"अगर कहीं वह लोगों को उनकी करतूतों पर (तुरंत) पकड़ता तो धरती में किसी प्राणधारी को जीवित न छोड़ता। किन्तु वह उन्हें एक नियत समय के लिए मोहलत दे रहा है।" (कुरआन, 35:45)

प्रतिकार का विधान

निश्चय ही इस जगत का पालनहार सर्वशक्तिमान और न्यायप्रिय है और उसने दुनिया में एक सर्वव्यापी, अपरिवर्तनशील प्रतिकार का विधान स्थापित किया है, जिसके आधार पर जीवन में ऐसा संतुलन पाया जाता है, जो यदि नहीं होता तो पूरे विश्व में बिखराव पैदा हो जाता और कोई ऐसी मापदंड व्यवस्था स्थिर नहीं रहती जिसके अनुसार भले-बुरे के नैतिक फ़ैसले करके दुष्टों को सज़ा और नेक लोगों को इनाम दिया जा सके। यह व्यवस्था भी ईश्वर की करुणा का ही एक पहलू है। क्योंकि इसी के अन्तर्गत बड़े-बड़े अपराधियों को दंड देकर बिगाड़ एवं भ्रष्टाचार का निरंतर दमन होता रहता है और इस धरती का वातावरण अभी तक इन्सान के लिए आनन्दमय है। प्रतिकार का विधान ही इस वातावरण को बार-बार साफ़ करके दूषित होने से बचाता रहता है, वरना ज़ालिमों की फैलायी हुई गन्दगियों में मानवता का दम घुट चुका होता। वास्तव में विश्व इतिहास में असामाजिक तत्वों की विध्वंसकारियों और आतंकवादी गतिविधियों पर सबसे बड़ी बाधा और चेतावनी ईश्वरीय शक्ति का प्रतिकार विधान ही है। कुरआन में है–

"फिर जिस किसी ने कण भर नेकी की होगी, वह उसको देख लेगा। और जिसने कण भर बुराई की होगी, वह उसको देख लेगा।" (कुरआन, 99:7-8)

मदद के लिए अपील

जामिया मिस्बाहुल उलूम चौकोनियां, पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जाना-माना तालीमी इदारा है। यह इदारा सिद्धार्थ नगर ज़िला के ग्रामीण क्षेत्र में है। यहां लगभग सभी राज्यों और पड़ोसी देश नेपाल के छात्र तालीम हासिल कर रहे हैं। यह इदारा आधी सदी से तालीम व तर्बियत के मोर्चे पर मुस्लिम समाज की सेवा कर रहा है। यहां प्राइमरी से लेकर आलिमीयत तक की तालीम का पूरा इन्तिज़ाम है। यहां दीनी और अस्री उलूम को एक ख़ास इम्तिज़ाज के साथ समोया गया है, जिसके कारण जामिया को तालीमी मैदान में एक अलग और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। यहां क़याम और तआम की सारी सहूलतें उपलब्ध हैं। जामिया मिस्बाहुल उलूम की विशेषता तालीम के साथ इस्लामी बुनियादों पर छात्रों की मिसाली तर्बियत करना है।

जामिया के मंसूबे

● मर्कज़ी लाइब्रेरी की तामीर ● जामिया की मस्जिद के अधूरे कामों को पूरा करना ● लड़कियों के लिए अलग दर्सगाह की ताम़ीर ● टेक्निकल सेन्टर का क़याम ● होस्टल की तामीर ● अनाथालय की तामीर ● फैमिली क्वार्टर्स की तामीर

अह्ले ख़ैर हज़रात से दरख़्वास्त है कि जामिया की दिल खोलकर मदद करें और अल्लाह के यहां उसका बदला पाएं।

—: भेजने का पता :—

जामिया मिस्बाहुल उलूम

चौकोनियां भारत भारी, सिद्धार्थनगर-272191

फ़ोन : 09670641947, 09451097177

जामिया का बैंक खाता नं॰

A/c No. 30290663653 S.B.I. डुमरियागंज, कोड-1250

A/c No. F.C.R. CD-149 सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया बेवॉ चौराहा

"थल और जल में बिगाड़ पैदा हो गया है लोगों के अपने हाथों की कमाई से, ताकि (ईश्वर) मज़ा चखाये उनको उनके कुछ कुकर्मों का, कदाचित वे बाज़ आ जाएं।" (कुरआन, 30:41)

"तेरा प्रभु ऐसा नहीं है कि बस्तियों को अकारण विनष्ट कर दे, जबकि उनके निवासी सुधारक हों।" (11:117)

"आख़िर अल्लाह को क्या पड़ी है कि तुम्हें अकारण यातना दे ? अगर तुम कृतज्ञता दिखलाते रहो और ईमान की नीति पर चलो।" (कुरआन, 4:147)

"यदि इस प्रकार अल्लाह मानवों के एक गिरोह को दूसरे गिरोह के द्वारा हटाता न रहता, तो धरती की व्यवस्था बिगड़ जाती, किन्तु संसार के लोगों पर अल्लाह की बड़ी उदार कृपा है।" (कुरआन, 2:251)

यह विश्व का निरीक्षण है जो दुनिया से आख़िरत तक जारी है, प्रकृति का पहरा हर ओर लगा हुआ है, प्रत्येक वस्तु की समीक्षा की जा चुकी है और सारे काम एक नियम से हो रहे हैं, कठोरता एवं कोमलता के मिश्रण से एक संतुलित मार्ग स्पष्ट है, व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों प्रकार की समीक्षा व्यक्तिगत एवं सामुदायिक रूप से की जा रही है और इतिहास सबको सबक़ दे रहा है।

रहमते आलम (जगत के लिए रहमत)

जिस प्रकार ईश्वर ने स्वयं को 'रब्बुल आलमीन' (जगत का पालनहार) कहा है, उसी प्रकार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को 'रहमतुल्लिल आलमीन' की उपाधि दी है। कुरआन में है–"हे नबी हमने तो तुमको दुनिया वालों के लिए दयालुता बनाकर भेजा है।" (कुरआन, 21:107)

इस प्रकार रहमते आलम (सल्ल०) का चरित्र चित्रण करते हुए पवित्र कुरआन ने आप (सल्ल०) के लिए "रऊफुर्रहीम" (अत्यंत दयालु और कृपाशील) की उन दयालुतापूर्ण विशेषताओं का प्रयोग किया है जिनसे विश्व स्वामी ईश्वर की हस्ती भी अलंकृत है। अपने अन्तिम संदेष्टा की विनम्रता और स्नेहयुक्त स्वभाव का वर्णन ईश्वर ने कुरआन में एक स्थान पर इस व्याख्या के साथ किया है कि यह उसकी विशेष कृपा है–

"(हे पैग़म्बर) यह अल्लाह की बड़ी कृपा है कि तुम इन लोगों के लिए बहुत नर्म स्वभाव के हो। (3:159)

इस संबंध में ख़ुदा के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का यह कथन अत्यंत विचारणीय है–"संपूर्ण सृष्टि ईश्वर का परिवार है, अतः ईश्वर को सबसे अधिक प्रिय वह है जो उसके परिवार के साथ अच्छा व्यवहार करे।"

अब जो शरीअत (जीवन-व्यवस्था) रब्बुल आलमीन (समस्त विश्व के पालनहार) द्वारा प्रस्तावित हो और उसको अपने जीवन में अपना कर रहमतुल्लिल आलमीन (विश्व के लिए दयालुता) ने दिखाया हो, उस शरीअत में ईश्वर की सृष्टि के लिए कृपा, दया और न्याय का होना स्वाभाविक है। यही कारण है कि मानवता के इतिहास में सामाजिक न्याय (Social Justice) का सर्वोत्तम उदाहरण दुनिया के समक्ष हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शरीअत ही ने प्रस्तुत किया है। ऐसी आदर्श जीवन-व्यवस्था मानव के लिए आतंक नहीं शांति का साधन है, भय और ख़तरा नहीं, शांति और सुरक्षा का कारण है।

इस्लाम में युद्ध और शांति की कल्पना

सर्वसुलभ दयालुता और रहमते आलम के परिप्रेक्ष्य में इस्लाम में शांति और युद्ध की कल्पना का अध्ययन अत्यंत लाभकारी रहेगा। इस संबंध में सर्वप्रथम देखना चाहिए कि इस्लाम की दृष्टि में मानव-प्राण का महत्व कितना अधिक है। संसार की पहली हत्या का वर्णन करते हुए दिव्य कुरआन में धरती के सबसे पहले आतंकवादी, क़ाबील (आदम के पत्र) को उसके भाई उसकी दुश्मनी का शिकार, हाबील का यह जवाब दर्ज किया गया है कि, "यदि तू मुझे क़त्ल करने के लिए हाथ उठाएगा तो मैं तुझे क़त्ल करने के लिए हाथ न उठाऊंगा।" अर्थात एक सदाचारी ईश-भक्त कभी क़त्ल की चेष्टा नहीं करेगा। परन्तु जब इस सुधारवादी और समझौतावादी जवाब के बावजूद दृष्ट क़ाबील ने अंततः हाबील को क़त्ल कर दिया तो इस घटना पर प्रकाश डालते हुए और टिप्पणी करते हुए कुरआन, अल्लाह के इस आदेश की घोषणा करता है–

"इसी कारण से बनी इसराईल के लिए हमने यह आदेश लिख दिया था कि जिसने किसी मनुष्य को हत्या के बदले या धरती में बिगाड़ फैलाने के सिवा किसी और कारण से मार डाला उसने मानो सारे ही मानवों की हत्या कर दी और जिसने किसी के प्राण बचाए उसने मानो सारे मानवों को जीवन दान किया।" (कुरआन, 5:32)

इस आयत के तुरंत बाद दूसरी ही आयत में भूतल पर दंगा-फ़साद फैलाने वालों की सज़ा यह बतालायी गयी है कि अगर वे पकड़ में आने से पहले तौबा (बुराई छोड़ने का

प्रण) न करें तो उन्हें परिस्थिति के अनुसार क़त्ल या देश निकाले की सज़ा दी जाए। इस सज़ा की व्याख्या करते हुए वर्तमान युग के सबसे बड़े इस्लामी चिंतक, मौलाना अबुल आला मौदूदी (रह०) अपने अनूदित क़ुरआन मजीद में लिखते हैं–"भूतल से अभिप्राय यहां वह देश या वह क्षेत्र है जिसमें शांति-व्यवस्था स्थापित करने का दायित्व इस्लामी सत्ता ने ले रखा हो और ख़ुदा व रसूल (सल्ल०) से लड़ने का अर्थ उस सदाचारपूर्ण व्यवस्था के विरुद्ध युद्ध करना है जो इस्लामी सत्ता ने देश में स्थापित कर रखी हो। इस्लामी विधि शास्त्रियों की दृष्टि में इससे मुराद वे लोग हैं जो सशस्त्र होकर और जत्था बनाकर डाकाज़नी और लूटमार करें।"

स्पष्ट रहे कि इस आयत में बिगाड़ और फ़साद फैलाने वालों को ख़ुदा और रसूल से लड़ने वाला बताया गया है। इसके अतिरिक्त दूसरे कई स्थानों पर पवित्र क़ुरआन ने "फ़ितना" को क़त्ल से बड़ा और अधिक जघन्य अपराध घोषित किया है। क्योंकि इसकी विनाशकारियां इतनी विस्तृत और इतनी ज़बरदस्त होती हैं कि पूरी की पूरी क़ौम तबाह और बर्बाद होकर रह जाती है। अत: 'फ़ितना' व फ़साद के अभियुक्तों के लिए इस्लाम शीघ्र प्रभावी सज़ाएं प्रस्तावित करता है, ताकि समाज में बिगाड़ और आतंकवाद को फलने-फूलने का अवसर न मिले और निर्दोष व्यक्ति उसका शिकार न बनें। स्पष्ट है कि जिस समाज में बिगाड़ और फ़साद की खुली छूट होगी उसमें मनुष्य को वास्तविक राहत और प्रगति का अवसर प्राप्त नहीं हो सकता, चाहे वहां कुछ व्यक्ति अपनी सत्ता और धन के बल पर कुछ दिनों के लिए कितनी ही मौज-मस्ती कर लें। अत: फ़ितना व फ़साद फैलाने वाले स्वार्थी तत्वों को क़ुरआन चेतावनी देता है–"वह परलोक का घर तो हम उन लोगों के लिए आरक्षित कर देंगे, जो धरती में अपनी बड़ाई नहीं चाहते, और न बिगाड़ पैदा करना चाहते हैं। और परिणामत: भलाई (ईश्वर का) डर रखने वालों ही के लिए है।" (28:83)

इस संबंध में इस्लाम विश्व में एक सर्वव्यापी सुधार का सिद्धांत प्रस्तुत करके मानवता के सकारात्मक आधारों और उसके रचनात्मक उद्देश्यों पर बल देता है। क़ुरआन में है–

"धरती में बिगाड़ पैदा न करो, जबकि उसका सुधार हो चुका है, और अल्लाह ही को पुकारो भय के साथ और लोभ के साथ। निश्चय ही अल्लाह की दयालुता अच्छे चरित्र वाले लोगों के समीप है।" (क़ुरआन, 7:56)

इस आयत में एक विश्वव्यापी संतुलन की ओर संकेत है, जिसकी स्थापना पर ही जीवन की समस्त क्रिया-कलापों का अस्तित्व निर्भर करता है। अत: जो लोग सरकशी और अत्याचार करके इस संतुलन को भंग करते हैं वे फ़ितना (फ़साद) फैलाने वाले और भ्रष्ट एवं अपराधी हैं जिनसे संघर्ष और उनका दमन हर इन्सान का एक नैतिक दायित्व होने के साथ-साथ उसकी प्रकृति की मांग भी है। क़ुरआन इस मांग को स्वीकार करते हुए भी प्रतिकार के लिए उचित सीमाएं निश्चित करता है–

"अत: जो तुम पर हाथ उठाये, तुम भी उसी तरह उस पर हाथ उठा सकते हो, अलबत्ता ईश्वर से डरते रहो और यह जान रखो कि ईश्वर उन्हीं लोगों के साथ है, जो उसकी सीमाओं के उल्लंघन से बचते हैं।" (क़ुरआन, 2:194)

यह अत्याचार के मुक़ाबले में एक रक्षात्मक ढंग है जिसका उद्देश्य स्पष्टत: अत्याचार की रोकथाम और न्याय-व्यवस्था की स्थापना है। यही वह उच्चतम सृजनात्मक एवं सुधारवादी उद्देश्य है जिसके लिए इस्लाम ने अपने अनुयायियों पर जिहाद अनिवार्य किया है। क़ुरआन में है–

"अनुमति दी गयी उन लोगों को जिनके विरुद्ध युद्ध किया जा रहा है, क्योंकि वे उत्पीड़ित हैं, और अल्लाह को निश्चय ही उनकी सहायता की सामर्थ्य प्राप्त है। ये वे लोग हैं जो अपने घरों से अनुचित रूप से निकाल दिये गये केवल इसलिए कि वे कहते थे, हमारा प्रभु अल्लाह है।"

(क़ुरआन, 22:39-40)

इस आयत (39) पर मौलाना मौदूदी क टिप्पणी इस प्रकार है–"यह अल्लाह के रास्ते में युद्ध करने के बारे में सबसे पहली आयत है जो अवतरित हुई। इस आयत में सिर्फ़ अनुमति दी गयी थी। बाद में सूरह बक़रा की आयतें 190 से 193 और 316 और 224 अवतरित हुई, जिनमें युद्ध का आदेश दिया गया है। इन आदेशों में केवल कुछ महीनों का अंतराल है। हमारे शोध के अनुसार यह अनुमति ज़िलहिज्जा सन 1 हिजरी में अवतरित हुई और आदेश बद्र की लड़ाई से कुछ पूर्व रजब या शाबान 2 हिजरी में अवतरित हुआ।"

जिहाद का आदेश भी न्याय की शर्त के साथ दिया गया–"और तुम अल्लाह के मार्ग में उन लोगों से लड़ो, जो तुमसे लड़ते हैं, परंतु ज़्यादती न करो कि अल्लाह ज़्यादती

करने वालों को पसन्द नहीं करता ।'' (2:190)

इस आदेश में न्याय की शर्त और उसकी नसीहत के अलावा दो मौलिक बातें ये हैं कि लड़ना उन लोगों से है जो लड़ाई की शुरुआत कर रहे हैं और लड़ना भी केवल ईश्वरीय मार्ग में है, किसी देश की सत्ता हथियाने की लोलुपता, युद्ध में प्राप्त संपत्ति के लोभ और निजी प्रतिशोध की भावना से नहीं । इसलिए इसी परिप्रेक्ष्य में आगे की आयतें स्पष्ट करती हैं कि–

(1) अल्लाह और रसूल से अनुचित लड़ने वाले अगर अपनी युद्ध प्रवृत्ति से ''बाज़ आ जाएं तो अल्लाह क्षमा करने और दया करने वाला है ।''

(2) लड़ाई केवल उस समय तक जारी रखी जाए जब तक फ़ितना (अत्याचार) बाक़ी है और ख़ुदा और रसूल की अवज्ञा करने वाले ये अत्याचारी इस सीमा तक हतोत्साहित न हो जाएं कि सत्य का बोलबाला हो जाए ।''

(3) और ''ज़ालिमों (अत्याचारियों) के अतिरिक्त किसी पर हाथ उठाना उचित नहीं ।''

एक दूसरे अवसर पर सूरह अन-निसा की आयतें 75 और 76 में बताया गया है कि जब किसी स्थान पर ''कमज़ोर मर्द, औरतें और बच्चे'' अत्याचारों के विरुद्ध फ़रियाद करें तो उनकी दादरसी भी करनी चाहिए और ज़ालिमों के पंजे से उनकी रिहाई के लिए हथियार उठाना चाहिए, मगर ईश्वर के आज्ञाकारी बन्दों का युद्ध हमेशा ''ईश्वर की राह में'' होता है, जबकि अवज्ञाकारियों का युद्ध ''शैतान की राह'' में होता है । इसी प्रकार सूरह निसा ही की 88 से 91 तक की आयतों में दुष्टों और धोखेबाज़ों से युद्ध का निर्देश देते हुए व्याख्या की गयी है कि : ''अगर वे तुम से दूर हो जाएं और लड़ाई से रुके रहें और तुम्हारी तरफ़ शांति एवं मित्रता का हाथ बढ़ाएं तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए उन पर हाथ उठाने की कोई राह नहीं रखी है ।''

दुष्टों एवं दंगाइयों को शिक्षाप्रद पराजय देने के लिए हर प्रकार की आवश्यक ''शक्ति'' और सामरिक साधनों को उपलब्ध करने का निर्देश देते हुए भी क़ुरआन शांति की इच्छा का जवाब शांति की चेष्टा से ही देने की ताकीद करता है ।

''और हे नबी, अगर दुश्मन सुलह और सलामती की ओर तैयार हो तो तुम भी इसके लिए तैयार हो जाओ और अल्लाह पर भरोसा करो, निश्चय ही वही सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है ।'' (क़ुरआन, 8:61)

इन व्याख्याओं से यह सत्य बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम का मौलिक और स्थायी उद्देश्य शांति है, जबकि युद्ध एक अस्थायी और क्षणिक घटना है, एक सामयिक संकट है, जिसको दूर करने के लिए कुछ उचित शर्तों के साथ और निश्चित सीमाओं के अन्दर शक्ति का प्रयोग न केवल वैध बल्कि आवश्यक है ।

बहरहाल, इस्लाम के मानने वालों के लिए युद्ध नाम है सत्य एवं असत्य की लड़ाई का, जिसमें सम्मिलित होकर उन्हें अपने ईमान का सबूत देने के लिए असत्य के विरुद्ध सत्य के लिए जान लड़ानी है । इसीलिए इस्लामी जिहाद का दूसरा नाम 'शहादत-ए-हक़' अर्थात अपने कर्मों से सत्य की गवाही देना और उसकी सुरक्षा में जान व माल और आबरू सबका ख़तरा मोल लेना है । सामूहिक हितों और मानवता की सुरक्षा के लिए क़ुरबानी देनी है । यह जिहाद जिसका अर्थ ख़ुदा की राह में सतत प्रयास है, जीवन के हर पल और हर क्षेत्र में अल्लाह पर ईमान रखने वालों को ईश्वरीय आदेशों के अनुसार अपनी अंतिम सांस तक अपनी पूरी शक्ति के साथ करना है ।

इस्लामी जिहाद की इसी शान का एक मुख्य पहलू प्रत्येक स्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों की मर्यादाओं को निभाना है, उस समय तक जब तक कि दूसरा पक्ष विश्वासघात और अपने समझौते को तोड़ने के लिए तत्पर न हो जाए, जिसके बाद उसके विरुद्ध किसी कार्रवाई से पहले समझौते के ख़त्म होने की घोषणा कर देनी है । क़ुरआन में है–''हां, यदि वे धर्म के मामले में तुम से सहायता मांगें तो उनकी सहायता करनी तुम पर अनिवार्य है, लेकिन किसी ऐसी जाति के विरुद्ध नहीं जिससे तुम्हारा समझोता हो ।'' (क़ुरआन, 8:72)

''और अगर तुम्हें किसी जाति से विश्वासघात की आशंका हो तो उसकी संधि को खुल्लम-खुल्ला उसके आगे फेंक दो ।'' (क़ुरआन, 8:58)

हुदैबिया संधि के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल॰) ने मक्का विजय की कार्रवाई क़ुरआन की उपर्युक्त निर्देशों के अनुसार ही की ।

शांति और युद्ध की इस्लामी कल्पना से अधिक यथार्थवादी और न्यायोचित कल्पना इस भौतिक संसार में असंभव है और न इतिहास के पर्दे पर कभी उभरी है ।

TARBIAT EDUCATION SOCIETY, BHATKAL

SHAMS ENGLISH MEDIUM SCHOOL

SYED ALI CAMPUS JAMIA ABAD ROAD, BHATKAL

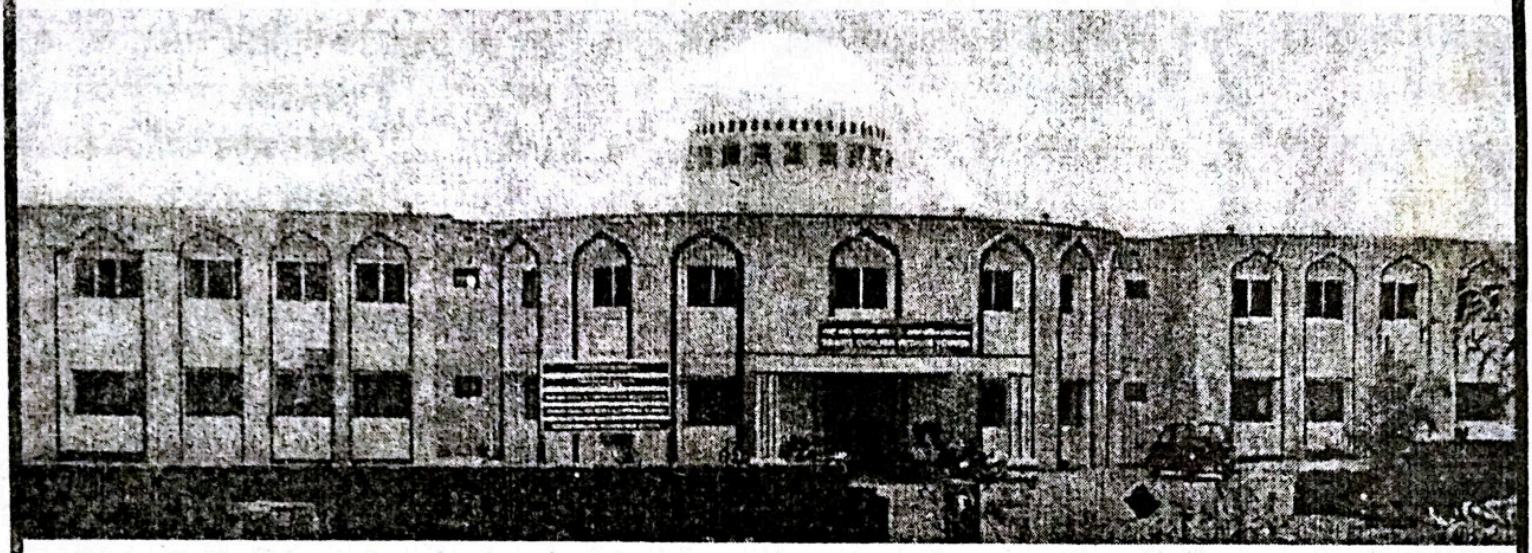

WANTED
TEACHERS

Features :

- ❖ School with CISCE curriculum/state syllabus
- ❖ Fusion of Islamic Culture and Modern Education
- ❖ Large playground
- ❖ Isolated campus in the vieinity of the town
- ❖ Well Trained dedicated staff

हरियाणा के साहित्य पर राज्य स्तरीय संगोष्ठी आयोजित

मानव भारती शिक्षा-समिति, हिसार द्वारा हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला के सौजन्य से 'हरियाणा का हिन्दी एवं हरियाणवी साहित्य' विषय पर एक राज्य स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन हिसार में किया गया, जिसमें सभी वक्ताओं ने, हरियाणवी साहित्य के विकास हेतु, उसके मूल्यांकन पर ज़ोर दिया ।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए दूरदर्शन-केन्द्र, हिसार के निदेशक विजय राजदान ने कहा कि हरियाणा की साहित्यिक परंपरा बड़ी पुष्ट और प्राचीन है । यहां के साहित्य के मूल्यांकन के लिए ऐसी संगोष्ठियों का आयोजन आवश्यक है । अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में हरियाणा साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ॰ श्यामसखा 'श्याम' ने कहा कि हिन्दी के साथ हरियाणवी साहित्य का विकास भी आवश्यक है ।

इस अवसर पर विशिष्ट साहित्य-सेवा के दृष्टिगत, दिल्ली से पधारे प्रख्यात साहित्यकार डॉ॰ जयनारायण कौशिक का सार्वजनिक अभिनंदन किया गया तथा हरियाणा के साहित्य और साहित्यकारों पर केन्द्रित पुस्तकों की प्रदर्शनी भी लगायी गयी ।

दोहा-साहित्य पर डी॰लिट्॰

डॉ॰ (श्रीमती) सुमन शर्मा को उनके शोध प्रबंध "हिन्दी का दोहा साहित्य : कथ्य और शिल्प के बदलते रूप (भक्तिकाल से आज तक)" पर डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा ने डी॰लिट्॰ की उपाधि प्रदान की है ।

डॉ॰ सुमन शर्मा प्रसिद्ध गीतकार और समीक्षक डॉ॰ रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' की बड़ी पुत्री और एन॰टी॰पी॰सी॰ दिल्ली के कंपनी सेक्रेट्री श्री अविनाश उपाध्याय की सहधर्मिणी हैं । वे दिल्ली प्रशासन के हायर सेकेंड्री विद्यालय में स्नातकोत्तर प्राध्यापिका हैं ।

सतीश चन्द्र शर्मा सुधांशु को "आलराउंड कवि" की उपाधि

अंग्रेज़ी, हिन्दी और पंजाबी साहित्य के विकास व प्रसार के लिए तत्पर ग़ैर-सरकारी साहित्यिक संस्था "आलराउंड अकादमी" की ओर से मैनपुरी के सतीश चन्द्र शर्मा सुधांशु को "आलराउंड कवि" की उपाधि दी गयी है ।

पंजाब में स्थापित आलराउंड अकादमी के अध्यक्ष श्री अमित कुमार लाडी ने इस उपाधि के लिए श्री सतीश चन्द्र शर्मा सुधांशु को हार्दिक बधायी एवं शुभकामनाएं दी हैं । उन्हें यह उपाधि उनके बहुमुखी व्यक्तित्व व उनके काव्य साहित्य को ध्यान में रखते हुए दी गयी है । ज़्यादा जानकारी के लिए पाठक-लेखक साथी संपर्क कर सकते हैं–

अमित कुमार लाडी, अध्यक्ष "आलराउंड अकादमी", डोडां स्ट्रीट, फ़रीदकोट (पंजाब)-151203

ग़ज़ल

वो मुश्किलों से कहां हार मान सकते हैं
जो जीने-मरने का जज़्बा दिलों में रखते हैं

निखरते हैं वही कुन्दन की तरह जीवन में
तो जिद्दोजेहद की भट्ठी में तपते रहते हैं

सियासी रंगमहल है अजीब रंगमहल
यहां अवाम को सपने सलोने छलते हैं

ग़ज़ल पे ऐसे अरूज़ी भी मेहरबान हैं आज
जो हाथ सर पे न रखकर गले पे रखते हैं

खुलूस और मुहब्बत से क्या ग़रज़ उनको
जो साते-जागते नफ़रत के ख़ाब बुनते हैं

तू जिनकी आस लगाये हुए हैं वो तो खुद
पराये पंखों के दम पर उड़ान भरते हैं

अदब में भी हैं कुछ ऐसे अदीब ऐ 'दरवेश'
जो अपना काम निकलते ही चल निकलते हैं।

● डॉ॰ 'दरवेश' भारती

अनेकेश्वरवाद की वास्तविकता

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

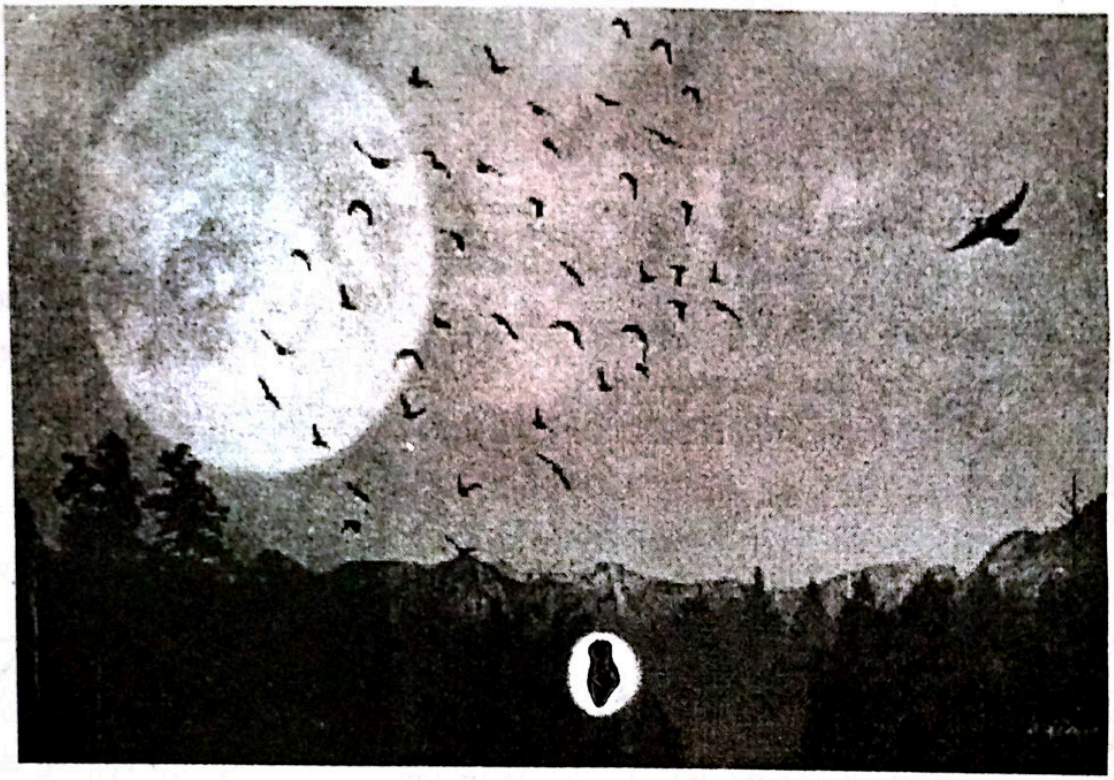

यह एक सर्वमान्य सच्चाई है कि मनुष्य सृजनकार-ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है। सृष्टि के अन्य सभी जीवों, वस्तुओं, चीज़ों और प्राकृतिक संरचनाओं में केवल मनुष्य को ही कुछ विशिष्ट अधिकार मिले हुए हैं, जिसके अंतर्गत वह अपनी बुद्धि और अक़्ल का प्रयोग सकारात्मक और नकारात्मक दोनों दिशाओं में करने के लिए स्वतंत्र है। वह अपने इच्छानुसार जीवन बरतता और जीता है। वास्तव में यह स्वतंत्रता और इरादे की शक्ति उसकी परीक्षा है, अन्यथा वह भी सूर्य, चन्द्रमा आदि प्राकृतिक रचनाओं की भांति निश्चित नियम का पाबंद होता है। वह चाहता है तो ईश्वरीय आदेशों और निर्देशों के अनुसार जीवन व्यतीत करता है और इस प्रकार अपने लौकिक व पारलौकिक जीवन को सफल बनाता है। इसके विपरीत वह स्वच्छंद जीवन जीकर सर्वथा असफल परिणाम का भुक्त भोगी बनता है।

मनुष्य वह प्राणी है जिसको ईश्वर ने इतनी शक्ति व सामर्थ्य प्रदान की है कि वह एक सीमा के अंतर्गत सृष्टि के संसाधनों से लाभ उठा सकता है और उसका दोहन भी कर सकता है। इस दृष्टि से यह स्पष्ट है कि सृष्टि में जो मानव को स्थान प्रदान किया गया है, वह सोद्देश्य है और विशिष्ट उद्देश्य के अंतर्गत ही मनुष्य के लिए वे असीमित और असंख्य संसाधन जुटाए गए हैं।

स्वाभाविक रूप से एवं सुगमता के साथ यह तथ्य और मर्म समझा जा सकता है कि जिस स्रष्टा-पालनकर्ता प्रभु ने मनुष्य सहित सारी सृष्टि को उत्पन्न किया है वह उसे उपकृत ही नहीं, बल्कि उसे उसके प्रति निष्ठावान एवं आभारी होकर उसकी भक्ति व बन्दगी करनी चाहिए। इस प्रकार स्रष्टा और उसकी रचनाओं के बीच एक विशिष्ट प्रकार का मधुर संबंध पाया जाता है। कुछ अनेकेश्वरवादी लोग इस संबंध का इन्कार और उसकी अवहेलना कर सकते हैं, लेकिन मानव के इस कोमल नैसर्गिक संबंध में कदापि कोई परिवर्तन नहीं ला सकते। यह तथ्य स्वमेव सप्रमाण हर काल और समय में उपस्थित रहा है। फिर भी आश्चर्य और चिंता का विषय है कि अंधता के विश्वासियों की दृष्टि नहीं खुल पा रही है!

स्रष्टा और मनुष्य के बीच इस संबंध को अपेक्षित है कि मनुष्य अपने पालनकर्ता प्रभु का आज्ञाकारी बने और उसके आदेशों व इच्छाओं के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करे। उस एक ईश्वर स्रष्टा, पालनकर्ता को छोड़कर किसी अन्य को पूज्य, उपास्य, नियंता, अधिपति न बनाए। वह विशुद्धभाव से एकेश्वरवादी बने और एक ईश्वर को ही अपना उपास्य और पूज्य माने। अपनी आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और अपेक्षाओं आदि के लिए उसी की ओर रुजू करे, उसी से विनीत भाव से प्रार्थना करे और उसकी ही प्रसन्नता प्राप्त

एकेश्वरवाद की मौलिकता



मानव इतिहास यह बताता है कि मनुष्य अपने विवेक का प्रयोग उद्दंडता, निरंकुशता और मनमाने व्यवहार के रूप में भी करता रहा है, वहीं दूसरी ओर करुणामय, पालनहार, स्रष्टा ने उसे बार-बार सन्मार्ग दिखाया और इस्लाम को परिपूर्ण रूप से ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के द्वारा भेजा। ईश्वरीय शिक्षाओं को जब भी झुठलाया गया या इनमें परिवर्तन आ गया तो उसका समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा और उसमें बिगाड़ आ गया। इन अवसरों पर सर्व-शक्तिमान संप्रभु, ईश्वर मनुष्य के मार्गदर्शन के लिए अपने दूत, संदेशवाहक, पैग़म्बर और रसूल भेजता रहा एवं आवश्यकता के अनुसार इन पर अपनी किताब उतारी। इस प्रकार करुणामय दयावान प्रभु ने उन शिक्षाओं को मनुष्य तक पहुंचाने का प्रबंध किया जिन्हें वे भुला बैठे थे। ईश्वर के दूत और पैग़म्बर संसार के प्रत्येक भू-भाग में भेजे गए, अत: भारत में भी वे ईश्वर का संदेश लेकर आए होंगे। सभी नबियों ने अपने आह्वान का आरंभ एकेश्वरवाद (तौहीद) से किया और इस पर इस प्रकार जमे रहे कि किसी भी हाल में इससे बाल बराबर भी हटने को तैयार न हुए। अल्लाह के अंतिम रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से विरोधियों ने बार-बार चाहा कि आप इस विषय में थोड़ी-सी नरमी दिखाएं, लेकिन आपने ज़रा भी नरमी नहीं दिखाई, यहां तक कि आपको प्रलोभन दिया गया, रिश्वत में वह सब कुछ पेश किया जिसकी उन्हें सामर्थ्य थी, लेकिन इन सब उपायों के बावजूद भी वे पैग़म्बर को विचलित न कर सके।

करने के लिए निरंतर प्रयास करे। मनुष्य के पास एक ही हृदय है, जो एक ईश्वर की भक्ति की सामर्थ्य रखता है, फिर भक्ति को विखंडित तो किया ही नहीं जा सकता । अन्तरात्मा को भी यही वांछित है कि वह एक ही ईश्वर की भक्ति करे।

मनुष्य का अपने स्रष्टा के साथ इस प्रकार के मधुर संबंध की उक्त और अन्य अपेक्षाओं-वांछाओं को मानव जीवन में सही तौर पर उतारने, बरतने और उन्हें अमल में लाने के परिणामस्वरूप जीवन में जो गुण, विशिष्टताएं, शील-स्वभाव, नैतिकता और सदाचार पैदा होते हैं वे जीवन को विकारों और चिंताओं से मुक्त करते ही हैं, ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्ति का इतना उत्तम साधन बन जाते हैं कि मनुष्य का लोक-परलोक दोनों सुधर-संवर जाता है। यही सफलता मानव जीवन की वास्तविक सफलता है। इसके विपरीत जो मनुष्य स्रष्टा के नैसर्गिक संबंध को झुठलाता है, उससे मुंह फेरता है वह बड़ा कृतघ्न तो है ही अपने जीवन को अत्यंत जटिल और समस्याग्रस्त बना लेता है। अंतत: उसके हाथ असफलता और निराशा ही लगती है।

इस्लाम : विशुद्ध एकेश्वरवादी धर्म

'इस्लाम' का शाब्दिक अर्थ है–आज्ञा मानना अर्थात्

एक ईश्वर सर्वशक्तिमान की आज्ञा का पालन करना। आज्ञापालन करनेवाले को मुस्लिम कहते हैं। इस्लाम 'स्लिम' धातु अक्षर से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ अम्न और शांति है। 'इस्लाम' शब्द का अर्थ भी यही है।

इस्लाम विशुद्ध एकेश्वरवादी धर्म है। अर्थात् उसकी यह धारणा है कि संपूर्ण जगत का एक ही ईश और खुदा है और वही एक मात्र पूज्य और उपास्य है। इस्लामी शब्दावली में ईश, पूज्य प्रभु, पालनहार को अल्लाह कहा जाता है, परन्तु अल्लाह शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है। आगे बढ़ने से पहले इसे जान लेना उचित और समीचीन होगा। ''अल्लाह'' शब्द का अर्थ निरुपण मौलाना अबुल-कलाम आज़ाद ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''तफ़्सीर सूरह फ़ातिहा'' में निम्न-लिखित शब्दों में किया है–

''सामी भाषाओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि व्यंजनों और स्वरों का एक मुख्य समूह है, जो ''पूजित'' के अर्थ में प्रयुक्त होता रहा है। इबरानी, सुरयानी, कलदानी, हमीरी, अरबी आदि समस्त भाषाओं में उसका यही शाब्दिक गुण पाया जाता है। यह 'अलिफ़', 'लाम' और 'हे' का धातु है। कलदानी और सुरयानी का 'अलाहिया', इबरानी का 'उलूह' और अरबी का 'इलाह' इसी से बना है। और निस्सन्देह यही 'इलाह' है, जो 'अलिफ़' और 'लाम' अक्षरों के बढ़ा देने से 'अल्लाह' हो गया है, और इस प्रयोग ने 'अल्लाह' नाम को उस सत्ता के लिए विशिष्ट कर दिया है, जो संपूर्ण सृष्टि का रचयिता है। परन्तु यदि 'अल्लाह', 'इलाह' से बना है तो 'अल्लाह' का अर्थ क्या है? इसके संबंध में विद्वानों के विभिन्न कथन हैं। परन्तु सबसे अधिक प्रबल पक्ष यह ज्ञात होता है कि इस नाम का उद्‌गम शब्द 'अलह' है। 'अलह' का अर्थ चकित और विवश हो जाना है। कुछ ने कहा है कि 'अल्लाह', 'वलह' शब्द से बना है। इसका अर्थ भी यही है। अत: सृष्टि के रचयिता का नाम 'अल्लाह' इसलिए हुआ कि इस सत्ता के विषय में मनुष्य जो कुछ जानता है और जान सकता है वह इससे अधिक और कुछ नहीं है कि बुद्धिचकित रह जाए और उसकी वास्तविकता को समझने के लिए विवश हो जाए।''

''अल्लाह'' शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए मौलाना अबू-मुहम्मद इमामुद्दीन 'रामनगरी' लिखते हैं–

'इलाह' का अर्थ है : पूज्य। इसलिए 'इलाह' प्रत्येक उस व्यक्ति, जीव और निर्जीव वस्तु को कह सकते हैं जिसकी पूजा की जाए। इस 'इलाह' शब्द में 'अलिफ़' और 'लाम' संयुक्त कर 'अल्लाह' कर देने का अभिप्राय यह है कि एक ईश्वर ही पूज्य है। इसके अतिरिक्त कोई पूजा और उपासना का अधिकारी नहीं है।

(इस्लाम का एकेश्वरवाद, पृ॰ 1, इस्लामी साहित्य सदन, रामनगर, वाराणसी)

'अल्लाह' शब्द में यह विशिष्ट गुण निहित है कि उसका प्रयोग एक ही उपास्य-प्रभु के लिए हो सकता है। भाषा विज्ञान के अनुसार, उसके सिवा किसी अन्य के लिए इसका प्रयोग नहीं हो सकता। इस शब्द का न तो कोई बहुवचन है और न ही इसका कोई लिंग (Gender) है। इस शब्द का सटीक हिन्दी अनुवाद 'ईश्वर' इसलिए नहीं हो सकता क्योंकि यह शब्द भगवान, देवी-देवता, देव, विशिष्ट पुरुष अथवा जीव आदि उपास्यों के लिए भी भाववाचक रूप में प्राय: प्रयुक्त होता है। यह ज़रूर है कि काम चलाने अथवा समझने-समझाने के लिए अल्लाह का अनुवाद ईश्वर किया जा सकता है। वैसे सारे अच्छे नाम अल्लाह के ही लिए है। एक हदीस के

मनुष्य का अपने स्रष्टा के साथ इस प्रकार के मधुर संबंध की उक्त और अन्य अपेक्षाओं-वांछाओं को मानव जीवन में सही तौर पर उतारने, बरतने और उन्हें अमल में लाने के परिणामस्वरूप जीवन में जो गुण, विशिष्टताएं, शील-स्वभाव, नैतिकता और सदाचार पैदा होते हैं वे जीवन को विकारों और चिंताओं से मुक्त करते ही हैं, ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्ति का इतना उत्तम साधन बन जाते हैं कि मनुष्य का लोक-परलोक दोनों सुधर-संवर जाता है। यही सफलता मानव जीवन की वास्तविक सफलता है।

अनुसार अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने अल्लाह के लिए 99 नामों का उल्लेख किया है, जिसे "अस्समाउलहुस्ना" (अल्लाह के अच्छे नाम) कहा जाता है।

कुरआन में है–

"कह दो अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान कहकर जिस नाम से भी पुकारो उसके सब अच्छे ही नाम हैं।" (17:110)

"अल्लाह अच्छे नामों का अधिकारी है–उसको अच्छे ही नामों से पुकारो और उन लोगों को छोड़ दो, जो उसके नाम रखने में सच्चाई से हट जाते हैं।" (7:180)

"वह अल्लाह ही है उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, उसके लिए सर्वोत्तम नाम हैं।" (20:8)

अल्लाह एक है

"अल्लाह" शब्द में उसके एक होने का अर्थ निहित है। पवित्र कुरआन में अल्लाह के एक होने के संबंध में अनेक आयतें अवतरित हुई हैं, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं–

"तुम्हारा पूज्य प्रभु एक ही पूज्य प्रभु है, उस करुणामय और दयावान के सिवा कोई और पूज्य प्रभु नहीं है।" (2:163)

"वही अल्लाह है उसके सिवा कोई पूज्य प्रभु नहीं।" (28:70)

"कह दो वह अल्लाह है यकता (अकेला)।" (112:1)

"अल्लाह का आदेश है दो खुदा न बनाओ, खुदा तो बस एक ही है।" (16:51)

वास्तव में इस्लाम की शिक्षाओं का सार तत्व एकेश्वरवाद (तौहीद) है। दूसरे शब्दों में यह इस्लाम की आधारशिला है। "ला इलाह इल्लल्लाह" अर्थात् अल्लाह के सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं–इस्लाम के प्रथम सूत्र-वाक्य (कलिमा) का आरंभिक वाक्यांश है, जिस पर ईमान लाना प्रत्येक मुसलमान के लिए अनिवार्य है। हम अपनी खुली आंखों और बुद्धि-विवेक एवं चेतना के ज़रिए से जब समूची सृष्टि पर नज़र डालते हैं, तो एक से अधिक ईश्वर के चिन्ह नहीं मिलते। स्वयं 'ब्रह्माण्ड' शब्द भी इस सत्य-तथ्य का द्योतक है। अन्य धर्म-ग्रंथों में भी इस सिलसिले में कई उद्धरण पाए जाते हैं, जो इस सच्चाई और वास्तविकता को प्रकट करते हैं। मानव की प्रकृति एकेश्वरवाद के प्रति ही मौलिक रूप से आकर्षित होती है, क्योंकि यह उसके सर्वथा अनुकूल है। कुरआन में है–

"अल्लाह एक मिसाल देता है। एक व्यक्ति तो वह है जिसके मालिक होने में बहुत-से दुःशील स्वामी साक्षी हैं जो उसे अपनी-अपनी ओर खींचते हैं और दूसरा व्यक्ति पूरा का पूरा एक ही स्वामी का दास है। क्या इन दोनों का हाल एक-सा हो सकता है? –प्रशंसा अल्लाह के लिए है, मगर ज़्यादातर लोग नादानी में पड़े हुए हैं।" (39:29)

उसका कोई साझी नहीं

अल्लाह का कोई साझी और शरीक नहीं है। उसकी सत्ता अखंड है। जिस प्रकार किसी राज्य में दो शासक नहीं हो सकते, उसी प्रकार पूरी सृष्टि में एक ही शासक की सत्ता संभव है। यदि किसी भी स्थान पर एक साथ दो आदेश चलाए जाएंगे तो व्यवस्था सुचारू रूप से नहीं चल सकती। कुरआन में है–

"अगर आसमान और ज़मीन में एक अल्लाह के सिवा दूसरे पूज्य होते तो (ज़मीन और आसमान) दोनों की व्यवस्था बिगड़ जाती।" (21:22)

अल्लाह संपूर्ण जगत का स्रष्टा है। वह किसी के द्वारा स्रष्ट नहीं कि उसमें स्रष्ट प्राणियों की भांति कमज़ोरियां पायी जाती हैं। कुरआन में है–

"अल्लाह सबसे निरपेक्ष है और सब उसके मुहताज हैं, न उसकी कोई सन्तान है और न वह किसी की सन्तान है। और कोई उसका समकक्ष नहीं है।" (112:2-4)

सारी सृष्टि अल्लाह की आज्ञाकारी है–

"क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह के आगे सजदे में हैं वे सब जो आसमानों में हैं और जो धरती में हैं, सूरज, चांद और तारे और पहाड़ और पेड़ और जानवर और बहुत-से इन्सान और बहुत से वे लोग जो अज़ाब के अधिकारी हो चुके हैं?" (22:18)

अल्लाह ने किसी को न बेटा-बेटी बनाया और न ही अन्य किसी को साझीदार ठहराया। कुरआन की निम्नलिखित आयतें इस मिथ्यापूर्ण बातों का पूर्णतः खंडन करती हैं–

Md. Rashid
9835125717

N. S. ENCLAVE

Masud Ahmad
9431107797

आप मकान,
दुकान, कोठी,
रिहाइशी मकान एवं
सस्ते और सुन्दर
प्लाट एवं फ्लैट
के लिए
संपर्क करें।



साथ में
बी॰ एड॰ कॉलेज
एंवं
इंजीनियरिंग कॉलेज
की भी सुविधा
उपलब्ध है।

साथ में मस्जिद एवं क़ब्रिस्तान भी है।

नग़मा ड्रेसेज

हमारे यहां फैंसी साड़ियां, रेडिमेड ड्रेस, टी शर्ट,
बाबा सूट, फ्रॉक, मिडी, नाइटी, स्कूल ड्रेस,
जींस पैंट एवं फैंसी रेडिमेड होजरी वस्त्रों के लिए पधारें।

OFFICE CONTACT : NAGMA DRESSES
Booti Chowk, Dubey Market, Ranchi (Jharkhand)

CONTACT No. 2 Masud Ahmad, Hamid Book Depot,
Opp. Urdu Library,
Main Road, Ranchi-834001 (Jharkhand)

Mobile : 09431107797

"उनका कहना है कि अल्लाह ने किसी को बेटा बनाया। अल्लाह पाक है इन बातों से। वास्तविक तथ्य यह है कि धरती और आकाशों में पायी जानेवाली सभी चीज़ों का वह मालिक है। सबके सब उसके आज्ञाकारी हैं।" (2:116)

"अल्लाह ने किसी को अपनी संतान नहीं बनाया है, और कोई दूसरा खुदा उसके साथ नहीं है। अगर ऐसा होता तो हर खुदा अपनी सृष्टि को लेकर अलग हो जाता और फिर वे एक-दूसरे पर चढ़ दौड़ते। पाक है अल्लाह उन बातों से जो ये लोग बनाते हैं। खुले और छिपे को जाननेवाला, वह उच्चतर है उस शिर्क से जो ये ठहरा रहे हैं।" (23:91,92)

"लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का साझीदार ठहरा दिया, हालांकि वह उनका पैदा करनेवाला है और उन्होंने जाने-बूझे उसके लिए बेटे और बेटियां रच दी। हालांकि वह पाक और उच्च है उन बातों से जो ये लोग कहते हैं। वह तो आकाशों और धरती का आविष्कारक है उसका कोई बेटा कैसे हो सकता है जबकि उसका कोई जीवन साथी ही नहीं है। उसने हर चीज़ को पैदा किया है और उसे हर चीज़ का ज्ञान है।" (6:100,101)

"उसके साथ किसी को साझीदार न बनाओ।" (6:151)

शिर्क (अनेकेश्वरवाद)

'शिर्क' शब्द का शाब्दिक अर्थ है–शरीक करना या साझी ठहराना, अर्थात् अल्लाह के साथ किसी अन्य को शरीक करना या उसका साझी ठहराना। ईश्वर की सत्ता उसके गुणों व अधिकारों में किसी को सम्मिलित करना या उसका साझी ठहराना शिर्क है। इसका बौद्धिक और तार्किक प्रमाण सिरे से अनुपलब्ध है। मानव की भूल प्रकृति इसके विरुद्ध है। पवित्र कुरआन में इसकी निंदा की गयी है और इससे जनसामान्य को बचने का आदेश दिया गया है।

अल्लाह शिर्क को कदापि क्षमा नहीं करता। कुरआन में है–"अल्लाह बस शिर्क (साझीदार बनाने) ही को माफ़ नहीं करता, इसके सिवा दूसरे जितने भी गुनाह हैं वह जिसके लिए चाहता है माफ़ कर देता है।" (4:48)

"ये लोग अल्लाह के सिवा उनको पूज रहे हैं, जो इनको न हानि पहुंचा सकते हैं न लाभ और कहते हैं कि ये अल्लाह के यहां हमारे सिफ़ारिशी हैं–पाक है वह और उच्च है उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं।" (10:18)

"इन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर अपने कुछ खुदा बना रखे हैं कि वे इनके पृष्ठपोषक होंगे। कोई पृष्ठपोषक न होगा। वे सब इनकी उपासना का इन्कार करेंगे और उल्टे इनके विरोधी बन जाएंगे।" (19:81,82)

"ख़ूब सुन लो, वास्तव में ये लोग अपनी मनगढ़ंत कहते हैं कि अल्लाह संतान रखता है और वास्तव में ये लोग झूठे हैं।" (37:151,152)

"(ऐ नबी) इनसे कहो, फिर क्या ऐ अज्ञानियों तुम अल्लाह के सिवा किसी और की बन्दगी मुझसे करने के लिए कहते हो? (यह बात तुम्हें उनसे साफ़ कह देनी चाहिए क्योंकि) तुम्हारी ओर और तुमसे पहले गुज़रे हुए सारे नबियों की ओर यह प्रकाशना भेजी जा चुकी है कि अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा सारा कर्म व्यर्थ हो जाएगा और तुम घाटे में रहोगे। अत: तुम बस अल्लाह ही की बन्दगी करो और कृतज्ञ बन्दों में से हो जाओ।" (39:64,65)

"तुम स्पष्ट रूप से कह दो कि "मुझे तो सिर्फ़ अल्लाह की बन्दगी का आदेश दिया गया है और इससे रोका गया है कि किसी को उसका साझीदार ठहराऊं, अत: मैं उसी की ओर बुलाता हूं और उसी की ओर मेरा रुजू (पलटना) है।" (13:36)

"जिसने तागूत का इन्कार करके अल्लाह को माना उसने एक ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटनेवाला नहीं।" (2:256)

शिर्क करनेवाला अर्थात् अनेकेश्वरवादी/बहुदेववादी व्यक्ति आश्रयहीन, बेसहारा और दुर्दशाग्रस्त हो जाता है। उसकी हालत ऐसी हो जाती है मानो वह आकाश से गिर पड़ा हो और बुरी तरह धूल-धूसरित हो गया हो। कुरआन में है–

"एकाग्रचित होकर अल्लाह के बन्दे बनो, उसके साथ किसी को साझी न ठहराओ। और जो कोई अल्लाह के साथ साझी ठहराए तो मानो वह आसमान से गिर गया, अब तो उसे पक्षी उचक ले जाएंगे या हवा उसको ऐसे स्थान पर ले जाकर फेंक देगी जहां उसके चीथड़े उड़ जाएंगे।" (22:31)

"वही एक आसमान में भी ईश्वर है और ज़मीन में भी ईश्वर, और वही तत्वदर्शी और सर्वज्ञ है। बहुत उच्च और सर्वोपरि है वह जिसके अधिकार में ज़मीन और आसमानों और हर उस चीज़ की बादशाही है जो ज़मीन और आसमानों के बीच पायी जाती है। और वही क़ियामत की घड़ी का ज्ञान रखता है, और उसी की ओर तुम सब पलटाये जानेवाले हो। उनको छोड़कर ये लोग जिन्हें पुकार रहे हैं उन्हें किसी सिफ़ारिश का अधिकार प्राप्त नहीं, सिवाय इसके कि कोई ज्ञान के आधार पर हक़ की गवाही दे। और अगर तुम इनसे पूछो कि इन्हें किसने पैदा किया है, तो ये खुद कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर कहा ये धोखा खा रहे हैं।"

(43:84-87)

हिन्दू धर्म में एकेश्वरवाद

वेद हिन्दू धर्म का आधार हैं। इन्हें ईश्वरीय ग्रंथ कहा जाता है। अतएव ईश्वर के वास्तविक स्वरूप और उसकी सत्ता को जानने का एक माध्यम वेद हो सकते हैं। इनमें ईश्वर के एक होने अर्थात् एकेश्वरवाद की बात बहुत खुलकर आयी है। इनमें अनेकेश्वरवाद/बहुदेववाद नहीं पाया जाता। ऋग्वेद (1-164-46), अथर्ववेद (9-10-28), ऋग्विधा० (1-25-7), बृहद्देवता (4-42) और निरुक्त (7-18, 14-1) नामक पुस्तकों में आया है–

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः॥

पं० दामोदर सातवलेकर ने इस मंत्र का अनुवाद इन शब्दों में किया है–

"एक ही सत् स्वरूप परमात्मा को अनेक प्रकार से बोलते हैं। इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, दिव्य, सुपर्ण, गरुत्मान्, सत्, सम, मातरिश्वा आदि नामों से एक ही परमात्मा का वर्णन करते हैं।"

("यजुर्वेद का सुबोध भाष्य", पृ० 530)

इस मंत्र से मिलता-जुलता मंत्र यजुर्वेद (32-1) में भी आया है।

पं० सातवलेकर इस मंत्र के संबंध में लिखते हैं–"जिस प्रकार एक ही पुरुष को पिता, भाई आदि गुणबोधक अनेक शब्द प्रयुक्त होते हैं, तथापि इन अनेक शब्दों से उस एक ही व्यक्ति का बोध होता है, उसी प्रकार अग्नि, वायु आदि अनेक गुण-बोधक शब्दों से एक ही परमात्मा का बोध होता है। इसलिए भिन्न नामों के भ्रम से अनेक-देवतावाद में फंसना किसी को भी उचित नहीं।"

("यजुर्वेद का सुबोध भाष्य", पृ० 530)

सारी सृष्टि का एक ही ईश्वर है और वही पूजनीय व वंदनीय है। ऋग्वेद में है–

य एक इत्। तमुष्टिहि। (6-45-16)

अर्थात्, वह एक ही है। उसी को पूजो।

मा चिदन्यद् विशंसत। (8-1-1)

अर्थात्, किसी दूसरे को मत पूजो।

(उक्त दोनों मंत्रांशों के अनुवाद पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय ने किये हैं। –'इस्लाम के दीपक', पृ० 402, 385, अमर स्वामी प्रकाशन विभाग, ग़ाज़ियाबाद, उ०प्र०)

पतिर्बभूथासमो जनानामेको विश्वस्य भुवनस्यराजा।

(ऋग्वेद 6-36-4)

अर्थात्, संसार का स्वामी जिसके समान और नहीं, वह (एक) सहायरहित प्रकाशमान राजा है।

(स्वामी दयानंद सरस्वती, ऋग्वेद भाष्य, पृ० 498)

भुवनस्य पस्यपतिरेभ एव
नमस्यो विक्ष्वीड्यः।

(अथर्ववेद, 2-2-1)

अर्थात्, सब ब्रह्माण्ड का एक ही स्वामी, नमस्कार योग्य और स्तुति योग्य है। (पं० क्षेमकरण दास त्रिवेदी)

अथर्ववेद (2-2-2) में है–

एक एव नमस्यः सुशेवाः।

अर्थात्, वह एक ही है, जो नमस्कार और पूजा के योग्य है।

(पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय, 'इस्लाम के दीपक', पृ० 386)

ईश्वर शरीर धारण नहीं करता। यजुर्वेद (40-8) में है–

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविर शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽ
अर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥

श्री नारायण स्वामी ने इस मंत्र का अनुवाद इस प्रकार किया है–

"वह (ईश्वर) सर्वत्र व्यापक, जगदुत्पादक, शरीर-रहित,

शारीरिक विकार-रहित, नाड़ी और नस के बंधन से रहित, पवित्र, पाप से रहित, सूक्ष्मदर्शी, मननशील, सर्वोपरि, वर्तमान, स्वयंसिद्ध, अनादि प्रजा (जीव) के लिए ठीक-ठीक कर्मफल का विधान करता है।''

(''वेद रहस्य'', पृ॰ 94, वैदिक पुस्तकालय, वाराणसी, 1972)

डॉ॰ पं॰ श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है–''वह (ईश्वर) सर्वत्र गया हुआ है। वह देहरहित, स्नायुरहित है। वह व्रणरहित है। वह पवित्र और वीर्यवान है। वह पाप से विद्व (बिंधा) हुआ नहीं है। वह मन का स्वामी है, विचारशील है। वह सबसे श्रेष्ठ व विजयी है। वह अपनी शक्ति से स्थित है। करने योग्य कार्य वह करता रहता है।''

('यजुर्वेद का सुबोध भाष्य', पृ॰ 647)

अथर्ववेद (13-4-16 से 18, 20, 21) में उसकी अविभाज्यता का स्पष्ट शब्दों में उल्लेख आया है–

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते ॥16॥
न पंचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते ॥17॥
नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते ॥18॥
तमिदं निगतं सहः स एष एक एकवृदेक एव ॥20॥
सर्वे अस्मिन् देवा एकवृतो भवन्ति ॥21॥

दयानन्द सरस्वती जी इन मंत्रों का भावार्थ व्यक्त करते हुए लिखते हैं–

''इन सब मंत्रों से यह निश्चय होता है कि परमात्मा एक ही है, उससे भिन्न कोई न दूसरा, न तीसरा, न कोई चौथा परमेश्वर है। (16) न पांचवां, न छठा, और न कोई सातवां ईश्वर है। (17) न आठवां, न नौवां, और न कोई दसवां ईश्वर है। (18) किन्तु वह सदा एक अद्वितीय ही है। उससे भिन्न दूसरा कोई भी नहीं। ...वह अपने काम में किसी की सहायता नहीं लेता, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान है। (20) उसी परमात्मा की सामर्थ्य में वसु आदि सब देव अर्थात् पृथ्वी आदि लोक ठहर रहे हैं और प्रलय में भी उसकी सामर्थ्य में लय होकर उसी के बने रहते हैं। (21)

(''दयानन्द ग्रंथ-माला'', (द्वितीय खंड), पृ॰ 337,338)

इसी से मिलता-जुलता अनुवाद पं॰ क्षेमकरण दास त्रिवेदी और पं॰ सातवलेकर ने किया है। अलबत्ता इन मंत्रों की क्रम संख्या में समानता नहीं है।

ईश्वर के एकत्व की बात ऋग्वेद (1-164-6, 3-54,8, 8-58-2, 10-82-3, 10-82-6, 10-82-7, 10-129-2 और 10-129-3), अथर्ववेद (10-2-23, 10-7-21, 10-8-6, 10-8-11, 10-8-28 और 10-8-29) के अतिरिक्त यजुर्वेद (32-8, 32-9, 40-4, 40-5) में भी आयी है।

(''विश्व ज्योति'', वेद अंक, पृ॰ 164 से 169, डॉ॰ विश्व बंधु के आलेख से उद्धृत, होशियारपुर जून-जुलाई 1972)

इन मंत्रों में ईश्वर के एक होने, उसी के पूर्व सामर्थ्यवान होने और उसकी तत्वदर्शिता का बहुत ही खुलकर उल्लेख हुआ है। डॉ॰ पी॰वी॰ काणे के अनुसर ऋग्वेद के 8-58-1 और 10-129-2 मंत्रों में भी ईश्वर के एक होने का वर्णन है। डॉ॰ काणे महाभारत और कुछ पुराणों के अतिरिक्त कुमार संभव (7-44) में भी एकेश्वरवाद की धारणा के पाए जाने की बात कहते हैं और निम्नलिखित हवाले पेश करते हैं–

वन पर्व (39-76, 77), शांति पर्व (343-131), ब्रह्म पुराण (192-51), विष्णु पुराण (5-18-50) और हरिवंश (विष्णु पुराण 25-31)।

(''धर्मशास्त्र का इतिहास'', (पंचम भाग), पृ॰ 393)

एक ईश्वर ही के होने का तथ्य इन मंत्रों में भी पाया जाता है : ऋग्वेद (10-12-3, और (10-12-11), यजुर्वेद (13-4, 23-1 और 23-3)। इनके अतिरिक्त वेदों में और भी मंत्र मिलते हैं, जो एकेश्वरवाद की धारणा का प्रतिपादन करते हैं। अतः वेदों में बहुदेववाद की धारणा नहीं पायी जाती। इस सत्य के विपरीत किसी प्रकार के प्रयास को अनुचित ही कहा जाएगा।

ईश्वर वास्तविक सम्राट है, किन्तु उसकी कोई प्रतिमा (मूर्ति) नहीं है। वह सम्राट है (इन्द्रश्च सम्राड्, यजुर्वेद 8-37), वह चल-अचल का राजा है (इन्द्रो पातोऽवसितस्य राजा, यजुर्वेद, 36-8), उससे श्रेष्ठ कोई नहीं (यस्मान्नान्यत्परमस्ति भूतम्, यजु॰ 32-6), इसकी कोई प्रतिमा नहीं (न तस्य प्रतिमाऽअस्ति, यजु॰, 32-3)।

(''यजुर्वेद का सुबोध भाष्य'', पृ॰ 551)

हज़रत मुहम्मद(सल्ल०) की जीवनी

हज़रत मुहम्मद(स०) जीवन और संदेश	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	10.00
प्यारे नबी कैसे थे?	इरफ़ान ख़लीली	16.00
प्यारे नबी ऐसे थे !	माइल ख़ैराबादी	10.00
जगत-गुरु	अबू ख़ालिद	40.00
जीवनी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)	मु० इनायतुल्लाह सुब्हानी	90.00
बड़ों की माँए	माइल ख़ैराबादी	12.00
रह्मतुल-लिल-आलमीन	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
विश्व-नायक	डॉ० कौसर यज़दानी नदवी	30.00
विश्व-नेता हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
हज़रत मुहम्मद : एक संक्षिप्त परिचय	डॉ० मुहम्मद अहमद	6.00
हज़रत मुहम्मद एक महान समाज सुधारक	प्रो० मिर्ज़ा रफ़ीउद्दीन अहमद	10.00
हज़रत मुहम्मद का आदर्श	श्री नाथूराम	16.00
हज़रत मुहम्मद सल्ल० का संदेश	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
हज़रत मुहम्मद सल्ल०के संदेशों के मूल तत्त्व	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	4.00
आख़िरी नबी (सल्ल०)	हमूदा अब्दुल आती	05.00
अल्लाह के रसूल का व्यावहार अपने शत्रुओं के साथ	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ	08.00
क्रान्ति-दूत हज़रत मुहम्मद सल्ल०	नईम सिद्दीक़ी	70.00

परिवार इस्लाम की नज़र में

औरत और इस्लाम	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	24.00
औरत और प्राकृतिक नियम	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
इस्लाम और बर्थ कंट्रोल	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	45.00
नारी और इस्लाम	मक़बूल अहमद फ़लाही	6.00
परदा	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	90.00
परिवार इस्लाम की नज़र में	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	10.00
बहुविवाह	मौलाना सय्यद हामिद अली	50.00
माँ-बाप के अधिकार	मौलाना सय्यद लुत्फ़ुल्लाह क़ादरी	20.00
मुस्लिम पर्सनल ला और समान सिविल कोड	शम्स पीरज़ादा	12.00
मुस्लिम पर्सनल ला धार्मिक व सामुदायिक...	मौलाना सदरुद्दीन इस्लाही	6.00
मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा समस्या...	उमर अफ़ज़ल	35.00

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858

E-mail: mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

गुणों का उल्लेख इस प्रकार किया है–वह पोषक है (पूषा) वह एक ज्ञानी है (एक ऋषिः) वह नियायक है (यमः) वह प्रकाशक है (सूर्यः) वह पालक शक्ति से युक्त है (प्रजापत्य : 40-16) वह उत्तम मार्ग से ऐश्वर्य की ओर ले जाता है (सुपथारपेनयरति), वह सब कर्मों को जानता है (विश्वानिवयुनानि विद्वान्) वह कुटिलता और पाप से युद्ध करता है (जुहुराणां एनः युध्यते : 40-18)।

("यजुर्वेद का सुबोध भाष्य", पृ॰ 648)

ऋग्वेद (1-4-1 से 5) में है :

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे।
जुहूमसि द्यविद्यवि॥1॥
उप नः सवनागहि सोमस्य सोमपाः पिब।
गोदा इद्रेवतो मदः॥2॥
अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम।
मा नो अतिख्या आगहि॥3॥
परेहि विग्रमस्तृतमिन्द्रं पृच्छा विपश्चितम्।
यस्ते सखिभ्य आ वरम्॥4॥
उत ब्रुवन्तु नो निदो निरन्यतश्चिदारत।
दधाना इन्द्र इददुवः॥5॥

पं॰ दुर्गाशंकर सत्यार्थी ने इन मंत्रों का अनुवाद इस प्रकार किया है–

"सुन्दर रूपों वाली मूर्ति बनाकर, गाय दुहकर (अपनी समझ में) और द्यवि द्यवि अर्थात् दिवि दिवि अर्थात् संपूर्ण पृथ्वी में ये उन मूर्तियों की उपासना करते हैं। (1) ये हमारे सब (मार्गों का) परित्याग कर चन्द्रमा की महत्ता (अर्थात् चन्द्रमा को देखते हुए भी हमारी शक्ति) भूलकर शराब पीते हैं। (अर्थात् मूर्तिपूजक ईश्वर की शक्ति एवं सामर्थ्य का विस्मरण कर मूर्तिपूजा में चूर रहते हैं) ये नशे की गोद में दुराचारियों के समान सो गए हैं। (2) वे अन्तिम दिन का विस्मरण कर विधा एवं बुद्धि का तिरस्कार कर हमारी निश्चित की हुई सीमा को पकड़ रहे हैं। (3) अपनी विस्तृत इन्द्रियों से परे ये विपत्तियों का ठिकाना पूछते हैं। जो ऐसे साथियों के लिए परम अर्थात् श्रेष्ठ हैं (हम उन्हें विपत्तियां ही देंगे) (4) और ये हमारी निन्दा करते हैं। तुम जो कि अपनी इन्द्रियों को वश में करनेवाले हो, हमारा स्तवन करो। और विधर्मियों को इस देश से दूर भाग जाने को कहो अर्थात् उन्हें देश से निकाल दो, वे पवित्र आर्यावर्त में रहने योग्य नहीं हैं। (5)

(मधुर उपहार, पृ॰ 128, 129, मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी)

यजुर्वेद में भी कई ऐसे मंत्र हैं, जिनके द्वारा एक ईश्वर की भक्ति पर बल दिया गया है। उसे छोड़कर अन्य की भक्ति करने वाले को चेतावनी दी गयी है। कुछ मंत्रों पर दृष्टिपात कीजिए–

ईशा वास्यमिदम् सर्व यत्किं च जगत्यां जगत।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥

(यजुर्वेद, 40:1)

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने इस मंत्र का निम्नलिखित शब्दों में अनुवाद किया है–"हे मनुष्य! जो कुछ इस संसार में जगत् है उस सब में व्याप्त होकर जो नियंता है वह ईश्वर कहाता है। उससे डरकर तू अन्याय से किसी के धन की आकांक्षा मत कर। उस अन्याय के त्याग और न्यायाचरणरूप धर्म से अपने आत्मा से आनन्द को भोग।

(सत्यार्थ प्रकाश, समुल्लास : 7)

इसी वेद में है–

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसंभूतिमुपासते।
ततो भूयऽइव ते तमो यऽउसम्भूत्याम् रताः॥

(यजुर्वेद, 40:9)

भावार्थ–"जो 'असंभूति' अर्थात् अनुत्पन्न अनादि प्रकृति कारण की ब्रह्म के स्थान में उपासना करते हैं वे अंधकार अर्थात् अज्ञान और दुःख सागर में डूबते हैं। और संभूति जो



कारण से उत्पन्न हुए कार्य रूप पृथ्वी आदि भूत, पाषाण और वृक्षादि अवयव और मनुष्यादि के शरीर की उपासना ब्रह्म के स्थान पर करते हैं, वे उस अंधकार से भी अधिक अंधकार अर्थात् महामुर्ख चिरकाल घोर दुःख, नरक में गिरके महाक्लेश भोगते हैं।" (सत्यार्थ प्रकाश, समुल्लास : 11)

गीता में एकेश्वरवाद

श्रीमद् भगवद् गीता में है–

अंतवन्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि॥
अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्वयः।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम्॥
नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः।
मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम्॥

(अध्याय, 7:23-25)

अर्थात् जो मेरे अतिरिक्त किसी और को पूजते हैं, वे उसी को प्राप्त होते हैं। (अर्थात् पत्थर, नदी, पहाड़ों को पूजनेवालों को पत्थर, नदियां और पहाड़ों की ही प्राप्ति होती है) किन्तु मुझे पूजनेवाले मुझ तक पहुंच जाते हैं। ऐसा होने पर भी सब मनुष्य मुझे नहीं पूजते (इसका कारण यह है कि बुद्धिहीन पुरुष मेरे अनुत्तम अर्थात् जिससे उत्पन्न कुछ भी नहीं ऐसे अविनाशी परमभाव को तत्व से न जानते हुए मन इन्द्रियों से घिरे मुझको मनुष्यों की भांति मानते हैं। मैं उनके सामने प्रत्यक्ष नहीं होता हूं। इसलिए अज्ञानी मनुष्य मुझ जन्मरहित अविनाशी परमात्मा को तत्व से नहीं जानते हैं और मुझे जन्म लेने तथा मरनेवाला समझते हैं।"

(अनुवाद : दुर्गाशंकर सत्यार्थी, मधुर उपहार, पृ० 123, मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी)

एक अन्य श्लोक में ईश्वर को अजन्मा बताया गया है। श्लोक निम्नलिखित है–

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः।
मूढोऽयं नभिजानाति लोको मामजमव्ययम्॥

(7:25)

श्री जयदयाल गोयन्दका ने इस श्लोक का अनुवाद इस प्रकार किया है–

"अपनी योगमाया से छिपा हुआ मैं सबके प्रत्यक्ष नहीं होता, इसलिए यह अज्ञानी जनसमुदाय मुझ जन्मरहित अविनाशी परमेश्वर को नहीं जानता अर्थात् मुझको जन्मने-मरनेवाला समझता है।" ("गीता तत्व-विवेचनी", पृ० 323)

उपनिषदों में एकेश्वरवाद

उपनिषदों में भी एकेश्वरवाद की धारणा पायी जाती है। कुछ उपनिषद तो वेद मंत्र ही हैं, जैसे शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा और काण्व शाखा की संहिताओं के अन्तिम अध्याय को ईशोपनिषद या ईशावास्योपनिषद (माध्यन्दिन) और ईशोपनिषद या ईशावास्योपनिषद (काण्वीय) कहा जाता है। इसी प्रकार के कुछ और उपनिषद हैं। श्वेताश्वेतरोपनिषद (3-1,2) में एकेश्वरवाद को इस प्रकार निरूपित किया गया है–

य एको जालवानीशत ईशनीभिः सर्वांल्लोकनीशत ईशनीभिः।
य एवैक उद्भवे संभवे च य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति॥1॥
एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुर्य
इमांल्लोकानीशत ईशनीभिः।
प्रत्यङ्जनांस्तिष्ठति संचुकोपान्तकाले संसृज्य विश्वा भुवनानि गोपा॥2॥

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने इन श्लोकों का निम्नलिखित शब्दों में अनुवाद किया है–

"विश्वरूप जाल का स्वामी अपनी प्रभु-सत्ता द्वारा संसार पर प्रभुत्व रखता है। वह सब लोकों का नियामक अकेला ही सृष्टि रचना करने और उसे विस्तृत करने में समर्थ है। उसे जो ज्ञानीजन जान लेते हैं, वे अमृत्व को प्राप्त होते हैं। जो अपनी शक्तियों से सब लोकों पर प्रभुत्व रखता है वह रुद्र एक ही है, इसलिए अन्य का आश्रय ज्ञानियों ने नहीं लिया। वह सभी देहधारियों में स्थित होकर लोक रचना करता हुआ सबकी रक्षा करता है और सृष्टि के लय काल (प्रलय) में सबको अपने भीतर समेट लेता है।

("108 उपनिषद", (ज्ञान खंड), पृ० 302,303, संस्कृति संस्थान, बरेली, संशोधित संस्करण : 1990)

एक ही ईश्वर के अनेक नाम हैं। कैवल्योपनिषद (8) में आया है :

स ब्रह्मा स शिवः सेन्द्रः सोऽक्षरः परमः स्वराट्।
स एव विष्णुः स प्राणः स कालोऽग्निः स चन्द्रमाः॥8॥

डॉ॰ रणजीत सिंह शास्त्री ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है–''यह ईश्वर ही ब्रह्मा है, वही विष्णु है, वही रुद्र है, वही शिव है, वही अक्षर है, वही स्वराट् है, वही इन्द्र है, वही कालाग्नि है और वही चन्द्रमा है।

(''ईश्वर की सत्ता और उसका स्वरूप'', पृ॰ 28, 29, मधुर प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण : 1992)

ईश्वर एक है, वह अद्वितीय है (एकमेवाद्वितीयम्-छान्दोग्योपनिषद, 6- 2-1)। उससे श्रेष्ठ कोई नहीं (श्वेताश्वतरोपनिषद, 3-9)। उसके अनेक रूप नहीं। उसे जो अनेक रसों में मानते हैं, उनको सावधान करते हुए कठोपनिषद (द्वितीय अध्याय, प्रथम बल्ली) में कहा गया है–

''यदेवेह तदमुत्र यदमुत्र तदन्विह।
मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति ॥10॥
मनसैवेदमाप्तव्यं नेह नानास्ति किंचन।
मृत्योः स मृत्यु गच्छति य इह नानेव पश्यति॥11॥

पं॰ श्रीराम शर्मा आचार्य के शब्दों में इन श्लोकों का अनुवाद इस प्रकार है–

''जो मनुष्य इहलोक (संसार) में परमेश्वर को अनेक रूपों वाला देखता है, वह मृत्यु से मृत्यु को प्राप्त होता है. ..यह सत्य मन के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। इस लोक में अनेकत्व किंचित नहीं है। जो मनुष्य अनेकत्व देखता है, वह मृत्यु से मृत्यु को प्राप्त होता है।''

(''108 उपनिषद'', (ज्ञान खंड), पृ॰ 46, 47)

यजुर्वेद (40-9) में भी इसकी ओर संकेत है–

''जो लोग परमेश्वर को छोड़कर अन्य की उपासना करते हैं, वे अज्ञान- अंधकार में प्रविष्ट होते हैं और जो व्यसनों में रत हैं, वे और भी अधिक अंधकार में पड़ हैं।''

(अनुवाद : राज बहादुर पाण्डेय, ''यजुर्वेद'', (संक्षिप्त), पृ॰ 159, डायमंड पाकेट बुक्स)

ईश्वर के वास्तविक स्वरूप, उसके गौरव और प्रताप के विषय में वेदों, उपनिषदों और श्रीमद् भगवद्गीता में जो चीज़ें मिलती हैं, उनमें से कुछ को ही उपर्युक्त विवरणों में प्रस्तुत किया गया है।

अगर हम किसी प्रमाण की भी बात करें तो पूरी सृष्टि में जिधर भी नज़र डालें एक ईश्वर की धारणा के प्रमाण ही प्रमाण नज़र आएंगे। पूरा ब्रह्माण्ड और समग्र सृष्टि कितनी सुव्यवस्थित, क्रमबद्ध और संतुलित है, हम सहज ही समझ व देख सकते है। इसकी नियमितता और विधेयात्मकता आश्चर्यचकित करनेवाली है। इसमें ज़रा भी स्वच्छंदता और प्रतिफलित होनेवाले परिवर्तन नहीं हैं। अतः हम देखते हैं कि अल्लाह द्वारा सभी स्रष्ट चीज़ों में तत्वदर्शिता, बुद्धिमत्ता, पूर्णता, सौंदर्य उपयोगिता और नैतिक प्रयोजन सब कुछ विद्यमान है। सूर्य और चन्द्रमा की गतियों का भी यही हाल है। यदि ईश्वर अनेक हो जाए, तो प्रत्येक अपनी-अपनी प्रभुसत्ता और महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए सृष्टि में अव्यवस्था उत्पन्न कर दे और वह छिन्न-भिन्न हो जाए।

अतएव हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि ईश्वर एक है, अकेला है, अद्वितीय और अविनाशी है। उसका कोई साक्षी नहीं। उसके अनेक नाम हैं, किन्तु उसका कोई रूप नहीं। उसका न तो कोई शरीर है और न ही वह शरीर ग्रहण करता है। वह सारे ब्रह्माण्ड का स्वामी है, नियामक है, पालनकर्ता, स्रष्टा और संहारक भी है। वह प्रत्येक कार्य करने में समर्थ और सबसे अधिक शक्तिशाली है। वही संपूर्ण जगत का सम्राट है। उस जैसा कोई नहीं।

कपोल-कल्पित अवधारणा के दुष्परिणाम

ईश्वर के इन और अन्य गुणों एवं विशेषताओं के विरुद्ध जो बातें कही जातीं हैं उनकी हैसियत बस इतनी है कि वे वास्तविकता से परे और कल्पना पर आधारित हैं। शाश्वत सत्य अपने आप में सत्य होता है। उसे किसी प्रमाण की

आवश्यकता नहीं होती है।

अगर हम किसी प्रमाण की भी बात करें तो पूरी सृष्टि में जिधर भी नज़र डालें एक ईश्वर की धारणा के प्रमाण ही प्रमाण नज़र आएंगे। पूरा ब्रह्माण्ड और समग्र सृष्टि कितनी सुव्यवस्थित, क्रमबद्ध और संतुलित है, हम सहज ही समझ व देख सकते है। इसकी नियमितता और विधेयात्मकता आश्चर्यचकित करनेवाली है।

इसमें ज़रा भी स्वच्छंदता और प्रतिफलित होनेवाले परिवर्तन नहीं हैं। अत: हम देखते हैं कि अल्लाह द्वारा सभी स्रष्ट चीज़ों में तत्वदर्शिता, बुद्धिमत्ता, पूर्णता, सौंदर्य उपयोगिता और नैतिक प्रयोजन सब कुछ विद्यमान है। सूर्य और चन्द्रमा की गतियों का भी यही हाल है। यदि ईश्वर अनेक हो जाए, तो प्रत्येक अपनी-अपनी प्रभुसत्ता और महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए सृष्टि में अव्यवस्था उत्पन्न कर दे और वह छिन्न-भिन्न हो जाए।

तार्किक और बौद्धिक सभी दृष्टियों से यदि हम विचार करते हैं, तो हम इस वास्तविकता और सच्चाई को स्वमेव पा जाते हैं कि ईश्वर का अस्तित्व है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं, उसी के पास सर्वाधिकार है, वह सर्वशक्ति सम्पन्न है। उसका और उसकी सत्ता का इन्कार वास्तव में ईश्वर की महानता और शान में धृष्टता है।

एक ही ईश्वर को न मानना और उसका साझी ठहराना सर्वशक्ति सम्पन्न ईश्वर का अपमान और अनादर है। यह केवल मनुष्य की ईश्वर के प्रति धृष्टता ही नहीं, एक गंभीर प्रकार का विश्वासघात है। स्पष्ट है, जब मनुष्य उस सृजनकार-सत्ता के साथ विश्वासघात करेगा, जिसने उसे पैदा किया है, तो यह अपराध कितना गंभीर हो जाएगा इस तथ्य को सहज ही समझा जा सकता है। यह विश्वासघात चरित्र पर आघात करेगा और जीवन में भांति- भांति के विकार पैदा कर देगा।

एकेश्वरवाद वह मज़बूत आश्रय है, जिससे वंचित होकर एवं ईश्वर से अपने नैसर्गिक व मधुरिम संबंध का विच्छेद करके मनुष्य भ्रम, संशय और दुर्बलता की स्थिति में आकर अपने जीवन को विभिन्न प्रकार के विकारों, व्याधियों और झंझावातों में डाल देता है। उसके जीवन में आशा, उत्साह, उमंग, साहस और कर्मठता, उत्तरदायित्व जैसे उत्तम गुण क्षीण हो जाते हैं और इनके विपरीत भाव जन्म लेकर बढ़ने लगते हैं, जो लौकिक जीवन को कष्टकर बनाते ही हैं, पारलौकिक जीवन को असफल बना देते हैं। तात्पर्य यह कि अनेकेश्वरवादी, बहुदेववादी व्यक्ति के व्यक्तित्व का वांछित विकास बाधित और खंडित हो जाता है। इस प्रकार वह मनुष्यत्व और पुरुषार्थ से अपना संबंध तोड़ डालता है, जो सही अर्थों में एक ईश्वर पर विश्वास के परिणामस्वरूप जीवन में उद्‌भूत और पैदा होते हैं। एकेश्वरवाद के बिना मानव जगत में वास्तविक भाईचारे व एकत्व की बुनियाद नहीं क़ायम की जा सकती है। यह ऐसी धारणा है जो जब भी कमज़ोर पड़ेगी मानव एकत्व व भाईचारा खंडित होगा और इसके नतीजे में विषमतामूलक शोषणकारी समाज जन्म लेगा।

यह भी मनुष्य पर ईश्वर का महान उपकार है कि उसने अपने अतिरिक्त अन्य के समक्ष उसका सिर झुकने से बचा लिया। इस प्रकार उसके आत्मसम्मान और उसकी गरिमा को सुरक्षित रखा और उसे अधमता व हीनता से बचा लिया।

अत: मनुष्य का परम कर्तव्य है कि वह एक ईश्वर की भक्ति और बन्दगी करे जो सर्वशक्तिमान, निराकार, न्यायकारी, क्षमाशील, दयावान, अजन्मा, अनुपम, अजर, अमर, निर्विकार, अनन्त, सर्वाधार, सर्वव्यापक, सर्वसत्ताधारी, सर्वान्तरयामी, पवित्र और सृष्टिकर्ता है।

कुरआन में है–

"अल्लाह वह जीवन्त शाश्वत सत्ता है, जो सम्पूर्ण जगत को संभाले हुए है, उसके सिवा कोई प्रभु, पूज्य नहीं है। वह न सोता है और न उसे ऊंघ लगती है। ज़मीन और आसमानों में जो कुछ है, उसी का है। कौन है जो उसके सामने उसकी अनुमति के बिना सिफ़ारिश कर सके? जो कुछ बन्दों के सामने है उसे भी वह जानता है और उसके ज्ञान में से कोई चीज़ उनके ज्ञान की पकड़ में नहीं आ सकती यह और बात है कि किसी चीज़ का ज्ञान वह खुद ही उनको देना चाहे। उसका राज्य आसमानों और ज़मीन पर छाया हुआ है और उसकी देखरेख उसके लिए कोई थका देनेवाला काम नहीं है। बस वही एक महान और सर्वोपरि सत्ता है।"

(कुरआन, 2:255)

ग़रीबी उन्मूलन के प्रभावी उपाय

ग़रीब किसे कहा जाए इस पर बड़ी रोचक बहसें चल रही हैं । अनेक सूत्र और फ़ार्मूले प्रस्तुत कर अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, राजनेता और अख़बारों के कालमनवीस खुश हैं कि उन्होंने ग़रीबों की मदद कर दी, मगर बेचारा ग़रीब दरिद्रता की दलदल में निरंतर धंस रहा है । ग़रीब और ग़रीब हो रहा है, बेरोज़गारों की लाइन और लंबी हो रही है, क़र्ज़ के नीचे दबा किसान सिसक रहा है और कुछ आत्म-हत्या कर रहे हैं।

समाधान

आज के इस वैज्ञानिक और प्रगतिशील युग में भी कोई देश ऐसा नहीं है जो बेरोज़गारी, ग़रीबी, आर्थिक असमानता जैसी समस्याओं से न जूझ रहा हो । समाधान खोजे जा रहे हैं मगर रोग निरन्तर बढ़ रहा है। वास्तविक समाधान सिर्फ़ 'इस्लाम' के पास है । इस्लाम समाज के अन्तिम व्यक्ति (Marginal Man) पर फ़ोकस करके नियम बनाता है और समाज में आश्चर्यजनक संतुलित ढंग से इस प्रकार लागू करता है कि प्रत्येक वर्ग को उंसका हिस्सा प्राप्त हो जाता है। समस्या समाधान के कुछ बिन्दु प्रस्तुत हैं–

1. वैचारिक बुनियाद

सबसे पहले इस्लाम मनुष्य के मन-मस्तिष्क में यह विचार बैठाता है कि जिन संसाधनों के तुम मालिक हो उसका वास्तविक स्वामी और दाता ईश्वर है–

● आकाश समूह और धरती में जो कुछ है सब अल्लाह का है सब उसी (अल्लाह) का है, सबको उसकी का आज्ञापालन करना है ।" (क़ुरआन, 21:116)

● वही तो है जिसने तुम्हारे लिए धरती को वशीभूत कर दिया है, चलो उसके ऊपर और खाओ उसकी उपज, तुम्हें पुनः जीवित होकर उसी के पास लौटना है।"

(क़ुरआन, 67:15)

यह सांसारिक साधन तुम्हें ईश्वर की अनुकम्पा से बतौर अमानत प्राप्त हैं, इनका अपव्यय न करो (6:141) ग़रीबों और वंचितों का सहारा बनो, (4:2), तुम्हारा माल अमीरों में ही सीमित न रहे (59:7), माता-पिता, नातेदार, पड़ोसी, यतीम, पर जो व्यय किया जाएगा उसका अच्छा बदला मिलेगा (17:26) समाज के लिए यह मानसिक उत्थान पूंजीवाद या समाजवाद में संभव नहीं है । इस्लाम के अतिरिक्त अन्य धर्म इस प्रकार की शिक्षा तो देते हैं मगर वह संसार त्याग और संन्यास की ओर ले जाते हैं । आर्थिक और आध्यात्मिकता का सुन्दर सामंजस्य केवल इस्लाम की देन है और इसी वैचारिक क्रान्ति से ग़रीबी, भुखमरी और दरिद्रता से निबटा जा सकता है ।

2. भाग्य भरोसे नहीं

मनुष्य पर अपने जीविकोपार्जन हेतु दौड़ धूप करना 'फ़र्ज़' है । हां अनाथों, अपंगों, बूढ़ों की बात अलग है । उनके लिए राजकोष, समाजसेवी संस्थाएं, उनके नातेदार और पड़ोसी ज़िम्मेदार हैं कि उनकी बुनियादी आवश्यकताएं अवश्य पूर्ण हों । क़ुरआन में है–

"नमाज़ पूरी कर लेने के बाद आजीविका प्राप्ति हेतु ज़मीन में फैल जाओ ।" (62:10)

3. ग़रीबी आने के मार्ग अवरुद्ध किये

इस्लाम ने सभी तरीक़े बन्द किये जो ग़रीबी का कारण हो सकते हैं । उनमें सबसे बड़ा कार्य सभी प्रकार के ब्याज पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना है । ब्याज ही वह हथियार है जिसके माध्यम से सरमायादार ग़रीब का ख़ून चूसता रहा है । इस्लाम ने इसे अवैध घोषित किया, जबकि व्यापार व्यवसाय में साझेदारी को वैध रखा जिसमें जोख़िम जोख़िम सब के लिए होता है । जुआ, लॉटरी, सट्टा, वायदे के कारोबार बन्द किये जिनसे ग़रीबी बढ़ती है । शराब और नशा हराम घोषित किया (4:90) क्योंकि यह दरिद्रता और अपराध को पोषित करते हैं ।

"अल्लह ने व्यापार को वैध और ब्याज को अवैध घोषित किया ।" (क़ुरआन 2:275)

4. ज़कात–ग़रीबी उन्मूलन का कारगर इलाज

इस्लाम में नमाज़ अर्थात इबादत की भांति 'ज़कात' देना भी अनिवार्य है । हर संपन्न मुस्लिम अपने जमा धन, सोना, चांदी आदि का कम से कम 2.5 प्रतिशत अनिवार्य दान देगा । कृषि उपज, पशु पालन, मधु पालन आदि पर 5 से

10 प्रतिशत तथा व्यापारिक स्टाक पर 2.5 प्रतिशत योगदान ज़रूरी है । यह बहुत बड़ा सामाजिक बीमा है और ग़रीबी उन्मूलन का अत्यन्त कारगर हथियार रहा है । ज़कात के अतिरिक्त रोज़े पूर्ण करने पर 'फ़ितरा' तथा अन्य दान पुण्य भी समाज के पिछड़ेपन को दूर करने का सशक्त माध्यम है शर्त यह है कि हम इसे प्रभावी ढंग से लागू करें।

5. सामाजिक व्यवस्था

इस्लाम ने समाज का ताना-बाना इस प्रकार बुना है कि सब एक-दूसरे के सहयोगी हैं, सहारा है । इस सहयोग में धर्म, जाति, भाषा या क्षेत्र कोई मतभेद पैदा नहीं कर सकता। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के इस आदेश पर विचार करें–

"वह आदमी आस्थावान नहीं जो स्वयं रात को पेट भर खाकर सो रहे और उसका पड़ोसी भूखा रहे ।"

इसी प्रकार माता-पिता, नातेदारों, पड़ोसियों, का ध्यान रखने की बार-बार ताक़ीद क़रआनी शिक्षाओं में पायी जाती है । किसी कारणवश वो लोग आर्थिक दौड़ में पिछड़ जाएं उन्हें उनके संबंधी पड़ोसी सहारा दें । यदि फिर भी ज़रूरत हो तो ज़कात और दान-पुण्य और सरकारी कोष उनकी सहायता हेतु उपलब्ध हो ।

6. स्वरोज़गार की प्रेरणा

जैसा कि ऊपर बताया गया कि नमाज़ के बाद जीविका की दौड़-धूप के आदेश दिये गये अर्थात कर्म पर उभारा गया । परिश्रम से बचने के लिए भाग्य का सहारा लेने की अनुमति नहीं । भाग्य की बात भी सही है कि अनावश्यक चिन्ता न करो, भाग्य के अनुसार ही मिलता है, मगर कर्म करना हमारा कर्तव्य है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने श्रम को सम्मानित किया। एक व्यक्ति ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से आर्थिक मदद की याचना की । आप (सल्ल०) ने कहा कि तुम्हारे पास जो सामग्री है ले आओ । वह व्यक्ति एक कंबल और प्याला लाया। आप (सल्ल०) ने सामान नीलाम करके उससे कहा कि आधी रक़म से घर में खाना ले जाए और आधी रक़म से कुल्हाड़ी ख़रीदे और लकड़ियां काटकर बाज़ार में बेचा करे ।

इसी प्रकार आपने मांगने या क़र्ज़ लेने को हतोत्साहित किया कि यह केवल अपरिहार्य कृत ही हो। व्यापार व्यवसाय, कृषि, दस्तकारी, मज़दूरी करने को प्रोत्साहित किया ।

इस्लाम एक आदर्श समाज की परिकल्पना करता है । यह तभी संभव है जब ग़रीब और अमीर के बीच आपकी असमानता कम से कम हो, परस्पर सहयोग और भाईचारे की भावना हो, बुनियादी आवश्यकताओं–रोटी, कपड़ा, मकान, इलाज, शिक्षा से कोई भी वंचित न रहे । संपन्न अपनी संपन्नता पर घमंड न करते हुए एहसास रखे कि माल-दौलत ईश्वर प्रदत्त है इसलिए इसमें समाज के वंचित वर्ग का भी हिस्सा है । ग़रीबी उन्मूलन के लिए एक सकारात्मक माहौल की ज़रूरत है, जो ईश्वर में आस्था के बिना संभव नहीं है । जब लोगों को यक़ीन हो कि हम जो कुछ आज कर रहे हैं उसका हिसाब देना है। मृत्यु के उपरांत भी एक जीवन है वहां स्वर्ग और नरक है । अच्छे कर्मों का इनाम भी है और दुष्कर्म पर पकड़ भी है । इस आस्था के साथ जीवन यापन करने पर समाज में वह वातावरण बनेगा जिसमें सामाजिक आर्थिक समस्याओं को कोई स्थान नहीं होगा । अमन-चैन का वातावरण, परस्पर भरोसा, आर्थिक खुशहाली होगी । उसमें मानसिक अवसाद की जो आत्म-हत्या तक पहुंचा दे क़तई कोई गुंजाइश नहीं होगी । ■ **डॉ० फ़रहत हुसैन**

क़ुरआन की पहली सूरः
अल-फ़ातिहा और अंतिम 30 सूरः

(क़ुरआन फ़ाउंडेशन, इंडिया की पेशकश)

दावती महत्व की यह किताब सैयद मंसूर आग़ा ने प्रो० डॉ० इरफ़ान अहमद ख़ान (यू०एस०ए०) की बहुचर्चित पुस्तकों 'इनसाइट इनटू क़ुरआन' और 'लास्ट थर्टी सूरः ऑफ़ क़ुरआन' से संकलित व अनुवादित की है । क़ुरआन की प्रमुख धारणाओं, पारिभाषिक शब्दों और क़समों पर चर्चा ख़ास महत्व की है । 'सूरः फ़ातिहा' के अध्ययन से क़ुरआन को समझने की राह खुलती है । सुबोध एवं रोचक शैली, दिलकश गेटअप, उम्दा छपाई व काग़ज़ ।

पेज 208, मूल्य केवल 100 रुपये–

MMI Publishers, A.F. Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-25
Islamic Book Foundation, 1781, Hauz Suiwalan, N.Delhi-02

(syyedmansooragha@gmail.com)

घमंड का पुतला

■ मुंशी प्रेमचन्द

शाम हो गयी थी । मैं सरयू नदी के किनारे अपने कैम्प में बैठा हुआ नदी के मज़े ले रहा था कि मेरे फुटबाल ने दबे पांव पास आकर मुझे सलाम किया कि जैसे वह मुझ से कुछ कहना चाहता है ।

फुटबाल के नाम से जिस प्राणी का ज़िक्र किया गया वह मेरा अर्दली था । उसे सिर्फ़ एक नज़र देखने से यक़ीन हो जाता था कि यह नाम उसके लिए पूरी तरह उचित है । वह सिर से पैर तक आदमी की शक्ल में एक गेंद था । लम्बाई-चौड़ाई बराबर । उसका भारी-भरकम पेट, जिसने उस दायरे के बनाने में ख़ास हिस्सा लिया था, एक लम्बे कमरबन्द में लिपटा रहता था, शायद इसलिए कि वह इन्तिहा से आगे न बढ़ जाए । जिस वक़्त वह तेज़ी से चलता था बल्कि यूं कहिये लुढ़कता था तो साफ़ मालूम होता था कि कोई फुटबाल ठोकर खाकर लुढ़कता चला आता है । मैंने उसकी तरफ़ देखकर पूछ–क्या कहते हो ?

इस पर फुटबाल ने ऐसी रोनी सूरत बनायी कि जैसे कहीं से पिटकर आया है और बोला-हुज़ूर, अभी तक यहां रसद का कोई इन्तिज़ाम नहीं हुआ । ज़मींदार साहब कहते हैं कि मैं किसी का नौकर नहीं हूं ।

मैंने इस निगाह से देखा कि जैसे मैं और ज़्यादा नहीं सुनना चाहता । यह असंभव था कि मजिस्ट्रेट की शान में ज़मींदार से ऐसी गुस्ताख़ी होती । यह मेरे हाकिमाना गुस्से को भड़काने की एक बदतमीज़ कोशिश थी । मैंने पूछा, ज़मींदार कौन है ?

फुटबाल की बांछें खिल गयीं, बोला-क्या कहूं, कुंअर सज्जन सिंह । हुज़ूर, बड़ा ढीठ आदमी है । रात आयी है और अभी तक हुज़ूर के सलाम को भी नहीं आया । घोड़ों के सामने न घास है न दाना । लश्कर के सब आदमी भूखे बैठे हुए हैं । मिट्टी का एक बर्तन भी नहीं भेजा ।

मुझे ज़मींदारों से रात-दिन साबक़ा रहता था मगर यह शिकायत कभी सुनने में नहीं आयी थी । इसके विपरीत वह मेरी ख़ातिर-तवाजो में ऐसी जाँफ़िशानी से काम लेते थे जो उनके स्वाभिमान के लिए ठीक न थी । उसमें दिल खोलकर आतिथ्य-सत्कार करने का भाव तनिक भी न होता था । न उसमें शिष्टाचार था, न वैभव का प्रदर्शन जो ऐब है । इसके बजाय वहां बेजा रसूख़ की फ़िक्र और स्वार्थ की हवस साफ़ दिखायी देती थी और इस रसूख़ बनाने की क़ीमत काव्योचित अतिशयोक्ति के साथ ग़रीबों से वसूल की जाती थी, जिनका बेकसी के सिवा और कोई हाथ पकड़ने वाला नहीं । उनके बात करने के ढंग में वह मुलामियत और आजिज़ी बरती जाती थी जिसका स्वाभिमान से बैर है और अक्सर ऐसे मौक़े आते थे, जब इन ख़ातिरदारियों से तंग होकर दिल चाहता था कि काश इन खुशामदी आदमियों की सूरत न देखनी पड़ती ।

मगर आज फुटबाल की ज़बान से यह कैफ़ियत सुनकर मेरी जो हालत हुई उसने साबित कर दिया कि रोज़-रोज़ की ख़ातिरदारियों और मीठी-मीठी बातों ने मुझ पर असर किये बिना नहीं छोड़ा था । मैं यह हुक्म देने वाला ही था कि कुंअर सज्जन सिंह को हाज़िर करो कि एकाएक मुझे ख़याल आया कि इन मुफ़्तख़ोर चपरासियों के कहने पर एक प्रतिष्ठित आदमी को अपमानित करना न्याय नहीं है । मैंने अर्दली से कहा–बनियों के पास जाओ, नक़द दाम देकर चीज़ें लाओ और याद रखो कि मेरे पास कोई शिकायत न आये ।

अर्दली दिल में मुझे कोसता हुआ चला गया।

मगर मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही, जब वहां एक हफ़्ते तक रहने पर भी कुंअर साहब से मेरी भेंट न हुई । अपने आदमियों और लश्कर वालों की ज़बान से कुंअर साहब की ढिठाई, घमंड और हेकड़ी की कहानियां रोज़ सुना करता । और मेरे दुनिया देखे हुए पेशकार ने ऐसे अतिथि-सत्कार-शून्य गांव में पड़ाव डालने के लिए मुझे कई बार इशारों से समझाने-बुझाने की कोशिश की । ग़ालिबन मैं पहला आदमी था जिससे यह भूल हुई थी और अगर मैंने ज़िले के नक़्शे के बदले लश्कर वालों से अपने दौरे का प्रोग्राम बनाने में मदद ली होती तो शायद इस अप्रिय अनुभव

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

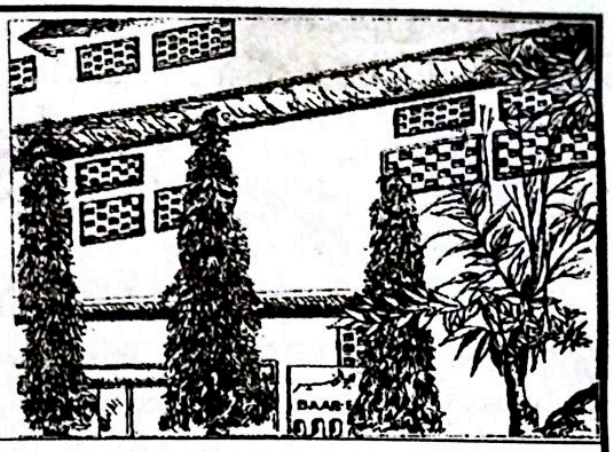

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

● 25 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा ● 6 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई : 6 बैच 70 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 3 बैच 40 छात्राएं ● 1993 ई॰ से 2011 ई॰ तक 66 अनाथ बच्चियों और 41 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 20 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 12,000/- रुपये है-आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 90,000/- रुपये ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में खुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 30040201000904 2

BANK CODE NO. UBININBBJAM में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें-"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, ☎ 0631-2734437 ● Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO.: 300402010007752

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

संस्थापक महासचिव : इक़बाल अहमद ख़ां

की नौबत न आती । लेकिन कुछ अजीब बात थी कि कुंअर साहब को बुरा-भला कहना मुझ पर उल्टा असर डालता था । यहां तक कि मुझे उस अदमी से मुलाक़ात करने की इच्छा पैदा हुई जो 'सर्वशक्तिमान' आफ़सरों से इतना ज़्यादा अलग-थलग रह सकता है ।

सुबह का वक़्त था, मैं गढ़ी में गया । नीचे सरयू नदी लहरें मार रही थी । उस पार साखू का जंगल था । मीलों तक बादामी रेत, उस पर खरबूज़ और तरबूज़ की क्यारियां थीं । पीले-पीले फूलों-से लहराती हुई बगुलों और मुर्ग़ाबियों के ग़ोल-के-ग़ोल बैठे हुए थे ! सूर्य ने जंगलों से सिर निकाला, लहरें जगमगायीं, पानी में तारे निकले । बड़ा सुहाना, आत्मिक उल्लास देने वाला दृश्य था ।

मैंने ख़बर करवायी और कुंअर साहब के दीवानख़ाने में दाख़िल हुआ लंबा-चौड़ा कमरा था । फ़र्श बिछा हुआ था । सामने मसनद पर एक बहुत लंबा-तड़ंगा आदमी बैठा था । सर के बाल मुड़े हुए, गले में रुद्राक्ष की माला, लाल-लाल, ऊंचा माथा-पुरुषोचित अभिमान की इससे अच्छी तस्वीर नहीं हो सकती । चेहरे से रोबदाब बरसता था ।

कुंअर साहब ने मेरे सलाम को इस अंदाज़ से लिया कि जैसे वह इसके आदी हैं । मसनद से उठकर उन्होंने बहुत बड़प्पन के ढंग से मेरी अगवानी की, ख़ैरियत पूछी और इस तकलीफ़ के लिए मेरा शुक्रिया अदा करने के बाद इत्र और पान से मेरी तवाज़ो की । तब वह मुझे अपनी उस गढ़ी की सैर कराने चले जिसने किसी ज़माने में ज़रूर आसिफ़ुद्दौला को ज़िच किया होगा मगर इस वक़्त बहुत टूटी-फूटी हालत में थी ।

यहां के एक-एक रोड़े पर कुंअर साहब को नाज़ था । उनके ख़ानदानी बड़प्पन और रोबदाब का ज़िक्र उनकी ज़बान से सुनकर विश्वास न करना असंभव था । बयान करने का ढंग यक़ीन को मजबूर करता था और वे उन कहानियों के सिर्फ़ पासबान ही न थे बल्कि वे उनके ईमान का हिस्सा थीं । और जहां तक उनकी शक्ति में था, उन्होंने अपनी आन निभाने में कभी कमी नहीं की ।

कुंअर सज्जन सिंह ख़ानदानी रईस थे । उनकी वंश-परंपरा यहां-वहां टूटती हुई अन्त में किसी महात्मा ऋषि से जाकर मिल जाती थी । उन्हें तपस्या और भक्ति और योग का कोई दावा न था लेकिन इसका गर्व उन्हें अवश्य था कि वे एक ऋषि की संतान हैं । पुरखों के जंगली कारनामे भी उनके लिए गर्व का कुछ कम कारण न थे । इतिहास में उनका कहीं ज़िक्र न हो मगर ख़ानदानी भाट ने उन्हें अमर बनाने में कोई कसर न रखी थी और अगर शब्दों में कुछ ताक़त है तो यह गढ़ी रोहतास या कालिंजर के क़िलों से आगे बढ़ी हुई थी । कम-से-कम प्राचीनता और बर्बादी के बाह्य लक्षणों में तो उसकी मिसाल मुश्किल से मिल सकती थी, क्योंकि पुराने ज़माने में चाहे उसने मुहासरों और सुरंगों को हेच समझा हो लेकिन इस वक़्त वह चींटियों और दीमकों के हमलों का भी सामना न कर सकती थी ।

कुंअर सज्जन सिंह से मेरी भेंट बहुत संक्षिप्त थी लेकिन इस दिलचस्प आदमी ने मुझे हमेशा के लिए अपना प्रिय बना लिया । बड़ा समझदार, मामले को समझने वाला, दूरदर्शी आदमी था । आख़िर मुझे उसका बिन पैसों का गुलाम बनना था ।

बरसात में सरयू नदी इस ज़ोर-शोर से चढ़ी कि हज़ारों गांव बरबाद हो गये, बड़े-बड़े तनावर दरख़्त तिनकों की तरह बहते चले जाते थे । चारपाइयों पर सोते हुए बच्चे-औरतें, खूंटों पर बंधी हुई गाय और बैल उसकी गरजती हुई लहरों में समा गये । खेतों में नांव चलती थी ।

शहर में उड़ती हुई ख़बरें पहुंचीं । सहायता के प्रस्ताव पास हुए । सैकड़ों ने सहानुभूति और शौक़ के अरजेंट तार ज़िले के बड़े साहब की सेवा में भेजे । टाउनहाल में क़ौमी हमदर्दी की पुरशोर सदाएं उठीं और उस हंगामे में बाढ़-पीड़ितों की दर्दभरी पुकारें दब गयीं ।

सरकार के कानों में फ़रियाद पहुंची । एक जांच कमीशन तैयार किया गया । ज़मींदारों को हुक्म हुआ कि वे कमीशन के सामने अपने नुक़सानों को विस्तार से बताएं और उसके सबूत दें । शिवरामपुर के महाराजा साहब को इस कमीशन का सभापति बनाया गया । जमींदारों में रेल-पेल शुरू हुई । नसीब जागे । नुक़सान के तख़मीने का फ़ैसला करने में काव्य-बुद्धि से काम लेना पड़ा । सुबह से शाम तक कमीशन के सामने एक जमघट रहता । आनरेबल महाराजा साहब को सांस लेने की फ़ुरसत न थी दलील और शहादत का काम बात बनाने और ख़ुशामद से लिया जाता था । महीनों यही कैफ़ियत रही । नदी किनारे के सभी ज़मींदार अपने नुक़सान की फ़रियादें पेश कर गये, अगर कमीशन से किसी को कोई फ़ायदा नहीं पहुंचा तो वह कुंअर सज्जन

सिंह थे । उनके सारे मौज़े सरयू के किनारे पर थे और सब तबाह हो गये थे, गढ़ी की दीवारें भी उसके हमलों से न बच सकी थीं, मगर उनकी ज़बान ने खुशामद करना सीखा ही न था और यहां उसके बग़ैर रसाई मुश्किल थी । चुनांचे वह कमीशन के सामने न आ सके । मियाद ख़त्म होने पर कमीशन ने रिपोर्ट पेश की, बाढ़ में डूबे हुए इलाक़ों में लगान की आम माफ़ी हो गयी । रिपोर्ट के मुताबिक़ सिर्फ़ सज्जन सिंह वह भाग्यशाली ज़मींदार थे, जिनका कोई नुक़सान नहीं हुआ था । कुंअर साहब ने रिपोर्ट सुनी, मगर माथे पर बल न आया । उनके आसामी गढ़ी के सहन में जमा थे, यह हुक्म सुना तो रोने-धोने लगे । तब कुंअर साहब उठे और बुलन्द आवाज़ में बोले-मेरे इलाक़े में भी माफ़ी है । एक कौड़ी लगान न लिया जाए । मैंने यह वाक़िया सुना और खुद-ब-खुद मेरी आंखों से आंसू टपक पड़े बेशक यह वह आदमी है जो हुकूमत और इख़्तियार के तूफ़ान में जड़ से उखड़ जाए मगर झुकेगा नहीं ।

वह दिन भी याद रहेगा जब अयोध्या में हमारे जादू-सा करने वाले कवि शंकर को राष्ट्र की ओर से बधाई देने के लिए शानदार जलसा हुआ । हमारा गौरव, हमारा जोशीला शंकर यूरोप और अमेरिका पर अपने काव्य का जादू करके वापस आया था । अपने कमालों पर घमंड करने वाले यूरोप ने उसकी पूजा की थी । उसकी भावनाओं ने ब्राउनिंग और शेली के प्रेमियों को भी अपनी वफ़ा का पाबन्द न रहने दिया । उसकी जीवन-सुधा से यूरोप के प्यासे जी उठे । सारे सभ्य संसार ने उसकी कल्पना की उड़ान के आगे सिर झुका दिये । उसने भारत को यूरोप की निगाहों में अगर ज़्यादा नहीं तो यूनान और रोम के पहलू में बिठा दिया था ।

जब तक वह यूरोप में रहा, दैनिक अख़बारों के पन्ने उसकी चर्चा से भरे रहते थे । यूनीवर्सिटियों और विद्वानों की सभाओं ने उस पर उपाधियों की मूसलाधार वर्षा कर दी । सम्मान का वह पदक जो यूरोप वालों का प्यारा सपना और ज़िन्दा आरज़ू है, वह पदक हमारे ज़िन्दादिल शंकर के सीने पर शोभा दे रहा था और उसकी वापसी के बाद उन्हीं राष्ट्रीय भावनाओं के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए हिन्दुस्तान के दिल और दिमाग़ अयोध्या में जमा थे ।

इस राष्ट्रीय कर्तव्य में सरकारी हुक्काम भी बड़ी उदारतापूर्वक हमारे साथ सम्मिलित थे । शंकर ने शिमला और दार्जिलिंग के फ़रिश्तों को भी अयोध्या में खींच लिया था । अयोध्या को बहुत इन्तिज़ार के बाद यह दिन देखना नसीब हुआ ।

जिस वक़्त शंकर ने उस विराट पंडाल में पैर रखा, हमारे हृदय राष्ट्रीय गौरव और नशे से मतवाले हो गये । ऐसा महसूस होता था कि हम उस वक़्त किसी अधिक पवित्र, अधिक प्रकाशवान दुनिया के बसने वाले हैं । एक क्षण के लिए-अफ़सोस है कि सिर्फ़ एक क्षण के लिए-अपनी गिरावट और बर्बादी का ख़याल हमारे दिलों से दूर हो गया । जय-जय की आवाज़ों ने हमें इस तरह मस्त कर दिया जैसे महुअर नाग को मस्त कर देता है ।

एड्रेस पढ़ने का गौरव मुझ को प्राप्त हुआ था । सारे पंडाल में ख़ामोशी छायी हुई थी । जिस वक़्त मेरी ज़बान से यह शब्द निकले-ऐ राष्ट्र के नेता ! ऐ हमारे आत्मिक गुरु! हम सच्ची मुहब्बत से तुम्हें बधाई देते हैं और सच्ची श्रद्धा से तुम्हारे पैरों पर सिर झुकाते हैं-यकायक मेरी निगाह उठी और मैंने एक हृष्ट-पुष्ट हैकल आदमी को ताल्लुक़ेदारों की क़तार से उठकर बाहर जाते देखा । यह कुंअर सज्जन सिंह थे ।

मुझे कुंअर साहब की यह बेमौक़ा हरकत, जिसे अशिष्टता समझने में कोई बाधा नहीं है, बुरी मालूम हुई । हज़ारों आंखें उनकी तरफ़ हैरत से उठीं ।

जलसे के ख़त्म होते ही मैंने पहला काम जो किया वह कुंअर साहब से इस चीज़ के बारे में जवाब तलब करना था ।

मैंने पूछा-क्यों साहब आपके पास इस बेमौक़ा हरकत का क्या जवाब है ?

सज्जन सिंह ने गंभीरता से जवाब दिया-आप सुनना चाहें तो जवाब दूं ।

"शौक़ से फ़रमाइए ।"

"अच्छा तो सुनिए । मैं शंकर की कविता का प्रेमी हूं । शंकर की इज्जत करता हूं, शंकर पर गर्व करता हूं, शंकर को अपने और अपनी क़ौम के ऊपर एहसान करने वाला समझता हूं मगर उसके साथ ही उन्हें अपना आध्यात्मिक गुरु मानने या उनके चरणों में सिर झुकाने के लिए तैयार नहीं हूं ।"

मैं आश्चर्य से उसका मुंह ताकता रह गया । यह आदमी नहीं, घमंड का पुतला है देखें यह सिर कभी झुकता है या नहीं ?

महिला सुरक्षा का सवाल

कुछ माह पूर्व बलात्कार के एक मामले में आये सुप्रीम कोर्ट के फ़ैसले पर विचार कीजिए । लुधियाना में 5 मार्च 1997 को एक महिला से सामूहिक बलात्कार करने वाले तीन आरोपियों को हाल में सुप्रीम कोर्ट ने सिर्फ़ 50-50 हज़ार रुपये का जुर्माना लगाकर छोड़ दिया हालांकि इससे पहले सेशन कोर्ट ने इन्हीं आरोपियों को 10 साल की सज़ा सुनायी थी ।

इस फ़ैसले के ख़िलाफ़ की गयी अपील को पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट ने ख़ारिज कर दिया था । लेकिन अब इसी मामले में सुप्रीम कोर्ट का निर्णय हैरान करने वाला है । इस मामले में अभियुक्त पक्ष की दलील थी कि पीड़ित महिला और बलात्कार के तीनों आरोपियों का अलग-अलग व्यक्तियों से विवाह हो चुका है और अब वे शांति से जीना चाहते हैं ।

सुप्रीम कोर्ट ने इस तर्क के आधार पर आरोपियों को दी गयी सज़ा ख़त्म कर दी और उसकी जगह आर्थिक जुर्माना लगाकर दोषियों को बरी कर दिया । कोर्ट के पास मौक़ा था कि वह बलात्कार के ऐसे मामलों में एक नज़ीर पेश करता ।

महिलाओं के ख़िलाफ़ हो रहे अपराधों को संज्ञान में लेते हुए वह अपने फ़ैसलों में संवेदनशीलता का परिचय दे सकता था पर आर्थिक जुर्माने की सज़ा के उसके फ़ैसलों से अन्याय की संभावना ज़्यादा बढ़ेगी । इस तरह हर बलात्कारी पैसा देकर सज़ा से बच जाने का प्रबंध करने के बारे में सोचने लगेगा ।

हमारे समाज में ऐसे वहशी लोगों की कमी नहीं है जो अपना गुनाह छिपाने और सज़ा से बचने के लिए 50-50 हज़ार रुपये से कई गुना ज़्यादा रक़म चुका सकते हैं । आख़िर कोर्ट ने ऐसा फ़ैसला देकर क्या संदेश देने की कोशिश की है ?

किसी महिला से बलात्कार किसी की हत्या के अपराध से क़तई कम नहीं है । क्या कोर्ट मर्डर के मामले में भी किसी सज़ा को आर्थिक जुर्माने में बदल सकता है ? अगर नहीं तो महिला के जीवन और उसकी आत्मा पर ठेस लगाने वाले बलात्कार के जुर्म में वह ऐसा कैसे कर सकता है ? क्या एक मुआवज़ा महिला की अस्मिता पर लगा कलंक धो सकता है ?

बलात्कार के बारे में आम राय यह है कि इससे अपराधियों को कड़ी से कड़ी सज़ा मिले । अपराधी को

माल का लालच और ईमान दोनों किसी बन्दे के दिल में हरगिज़ जमा नहीं हो सकते ।
मद्रासी
मद्रासी होटल
मालवीय रोड
रायपुर (सी॰जी॰)
फोन : 0771-2539516,2236788
मद्रासी होटल
शॉप नं॰ 1-7
मोतीबाग़ चौपाटी, रायपुर
फोन : 0771-2533946, 5053603

सज़ा दिलाने के साथ इसका ध्येय यह भी है कि पीड़ित लड़की या महिला के पूरी तरह रीहैबलिटेट किया जाए । सिर्फ़ आर्थिक मुआवज़ा उसके साथ हुए अन्याय की भरपाई नहीं कर सकता ।

सुप्रीम कोर्ट के ताज़ा फ़ैसले में मुझे एक भूमिका पुलिस जांच में हुई कोताही की भी लगती है । पुलिस जांच के दौरान इस मामले को बहुत हलके ढंग से लिया गया । जब क़ानून पीड़ित के बजाय दोषियों को बचाने का प्रयास करता है, तब ऐसे मामलों की साफ्ट हैंडलिंग का ख़तरा पैदा होता है और अक्सर ऐसे नतीजे सामने आते हैं जिसमें पीड़ित के सामने समझौते के सिवा कोई विकल्प नहीं बचता । कहीं ऐसा तो नहीं कि महिला अपने संबंधियों के दबाव में ऐसा समझौता करने पर बाध्य हुई हो ? अगर जुर्माना दो और छूट जाओ की ऐसी और भी नज़ीरें पेश की गयी तो सोचना कठिन है कि हमारे समाज में महिलाओं को कितना अत्याचार झेलना पड़ेगा ।

बलात्कार के मामले में मेरी मांग फास्ट ट्रैक कोर्ट बनाने की है । अगर त्वरित न्याय की यह व्यवस्था बनायी जा सकी तो साक्ष्यों को झुठलाने और पीड़िता को फुसलाने या दबाव डाल कर उसका बयान बदलवाने जैसी आशंकाएं कम हो सकेंगी । कुछ माह पहले राजस्थान में एक जर्मन युवती से बलात्कार पर फ़ैसला सिर्फ़ 17 दिन में आ गया । देश में हर महिला की अस्मिता के हनन को इतना ही महत्वपूर्ण मानकर कार्रवाई आख़िर क्यों नहीं होती ? ऐसी स्थितियों में विलंबित न्याय का अर्थ प्रभावित महिला के लिए न्याय की आस धूमिल करना और उसके लिए हादसे की टीस को जारी रखना है ।

कैसी विडंबना है कि महिलाओं के ख़िलाफ़ अपराधों में ज़्यादा बढ़ोतरी यू॰पी॰, दिल्ली और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में हुई है जहां महिला मुख्यमंत्री थीं । उम्मीद थी कि इन राज्यों में ऐसे अपराधों के ख़िलाफ़ ज़ीरो टॉलरेंस पॉलिसी अपनायी जाएगी । पर इन शीर्ष महिलाओं का कहना है कि लड़कियां देर रात घर से बाहर न निकलें और आधुनिक कपड़े पहनने का एडवेंचर न करें । वे अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है, कैरियर के वास्ते उन्होंने एजुकेशन ली है । इसलिए उनकी सुरक्षा के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होने की ज़रूरत है ।

बहरहाल महिलाओं को हमारे देश और समाज में सुरक्षित माहौल मिल सके, इसके लिए मैं पांच सूत्री फार्मूले को तत्काल अमल में लाने की हिमायती हूं । सेक्सुअल असॉल्ड क़ानून को फ़ौरन पारित करना, जेंडर सेंसराइजेशन की ट्रेनिंग हर उम्र की महिला को दिलाना, रेप के मामले में एक स्पेशल टॉस्क फोर्स या ला इन्फोर्समेंट एजेंसी बनाना, फास्ट ट्रैक अदालतों का गठन करना और इस बारे में जागरूकता लाना कि हमारी सोसाइटी के लोग किसी महिला के साथ कैसा भी अपराध होते देखें तो उसका संगठित होकर विरोध करें । मेरे ख़याल से ये पांच पहलक़दमियां ख़ासकर उन शहरों की महिलाओं की ज़िन्दगी थोड़ा आसान बना सकती है ।

● जे॰ के॰ शास्त्री
नागदा जं॰

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 2001 with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1000 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Under Upwardbound .scheme, another project has been launched for preparation of +2 students to compete in Entrance Test for Engineering, Medical and other professional & technical courses.
- Our immediate needs are — Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

Ahle Khair Hazrat are Requested to Donate.

Kindly send your cheque/draft in favour of "Shatabdi Foundation, Gaya".

(ProfZ.H.Khan) Chairman — *(Prof M. B. Zaman)* Secretary

Shatabdi Public School, Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

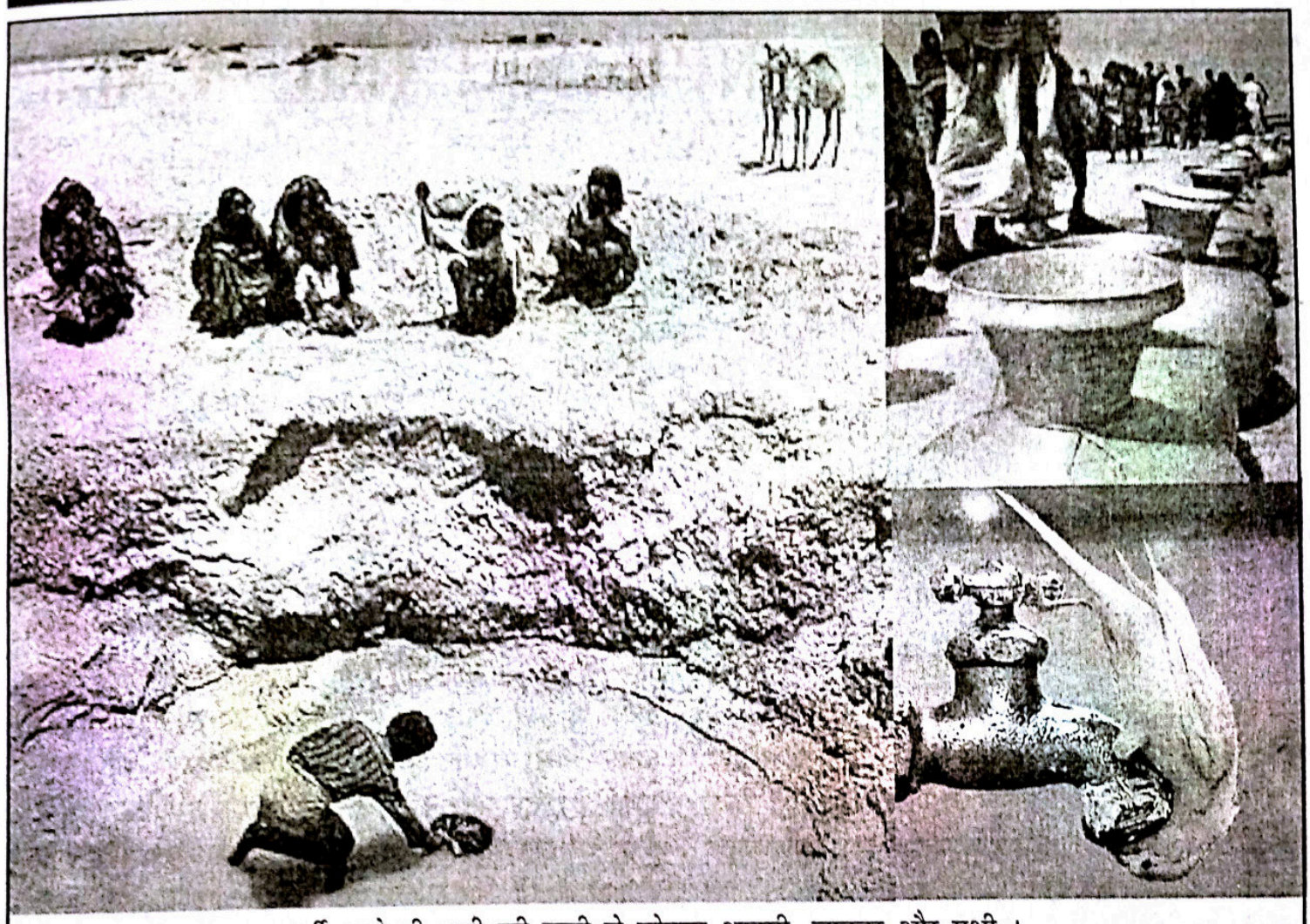

गर्मी आते ही पानी की कमी से परेशान आदमी, जानवर और पक्षी ।

'अल्लाहु अकबर' सर्वश्रेष्ठ नारा

■ स्वामी विद्यानन्द विदेह

संसार की जितनी भी धार्मिक संस्थाएं हैं, सभी के अपने-अपने नारे हैं । सनातन धर्म के नारे हैं–सियावर रामचन्द्र की जय, कृष्ण बलदेव की जय, पवनसुत हनुमान की जय, उमापति महादेव की जय, बम-बम महादेव, हर-हर महादेव, गङ्गे हर । जैन मत का नारा है, जय जिनेन्द्र । बुद्ध मत का नारा है, बुद्ध शरण गच्छामि । ईसाइयों का नारा है, ईसा मसीह खुदा का बेटा । आर्य सामाजियों का नारा है–वैदिक धर्म की जय, जगद्गुरु महर्षि दयानन्द की जय, भारत माता को जय, गौ माता की जय । मुसलमानों का नारा है, अल्लाहु अकबर । सिखों का नारा है, सत् श्री अकाल । इत्यादि ।

संसार भर में जितने भी धार्मिक नारे हैं, उन सब में केवल 'अल्लाहु अकबर' नारा मेरे मानस को पूर्णतया अपील करता है । ईश्वर के मानने वाले जितने भी धर्म-सम्प्रदाय हैं, उन सब में निस्संदेह इस्लाम का 'अल्लाहु अकबर' का नारा-ए-तकबीर सर्वश्रेष्ठ है । हिन्दी में इस नारे का अर्थ होगा, 'ईश्वर महान और अंग्रेज़ी में 'God is Great' । वेद ने भी कहा है, 'त्वं महां असि' (प्रभो ! तू महान है)।

अल्लाहु अकबर, 'God is Great', ईश्वर महान–यह सारी सृष्टि का नारा है और सर्वश्रेष्ठ भी । ईश्वर विश्वासी सब धर्म-सम्प्रदाय इस नारे को अपनाकर धार्मिक सद्भावना की दिशा में एक महत्वपूर्ण पग बढ़ा रहे होंगे ।

वरिष्ठ नागरिक : सम्मान एवं सेवा के पात्र

❖ अमित कुमार लाडी
(फ़रीदकोट, पंजाब)

मानव जीवन इस सृष्टि की अमूल्य देन है। ग़ौरतलब है कि अन्य जीवों की अपेक्षा सृष्टि ने मानव को अधिक बुद्धिमान, श्रेष्ठ एवं सुन्दर बनाया है । आमतौर पर देखा जाए तो मानव जीवन तीन अवस्थाओं में से होकर गुज़रता है–बाल्यावास्था, युवावस्था व वृद्धावस्था । पहली दोनों अवस्थाएं तो सही निकल जाती हैं, परंतु वृद्धावस्था एक ऐसी अवस्था है जिसमें एक ओर तो व्यक्ति बीमारी से पीड़ित रहता है, वहीं दूसरी ओर घर में अपनत्व और सम्मानीय व्यवहार का अभाव-सा होता है ।

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति संसार की सबसे पुरानी संस्कृतियों में से एक है । हमारी सभ्यता में संस्कारों व परम्पराओं को सर्वोपरि माना गया है । हमारी सभ्यता में वृद्ध अथवा बुज़ुर्ग नागरिकों को सम्मानीय स्थान प्राप्त है । किंतु आधुनिक युग के प्रभाव में हम दिशाहीन और मुल्यविहीन हो रहे हैं । हमारी ग़लत सोच हमारी भारतीय संस्कृति और समाज के लिए ख़तरनाक स्थिति है । हम एक ऐसे मोड़ पर खड़े हैं, जहां हमारी ऐसी सोच हमारे समाज की जड़ों को खोखला कर रही है ।

उम्र और वक़्त पर किसी का वश नहीं हुआ और न ही कभी होगा । वृद्धावस्था उम्र की ऐसी दहलीज है जहां व्यक्ति को सहारे की ज़रूरत होती है । सहारा ऐसा होना चाहिए जो उस संबंधित वृद्ध व्यक्ति को प्यार व सहानुभूति दे और उसे उसका खोया हुआ अतीत लौटा दे । देखा जाए तो सरकार अपनी ओर से बुज़ुर्गों के कल्याणार्थ विभिन्न सुविधाएं दे रही है । जैसे हर माह पेंशन दी जाती है । रेल, बस और हवाईजहाज़ पर सफ़र करने के लिए किराये में काफ़ी छूट दी जा रही है । आयकर में भी विशेष छूट दी गयी है । कई बीमा योजनाएं भी चल रही हैं । बैंकों में भी बुज़ुर्गों को उनकी जमा-राशि पर आधा प्रतिशत ब्याज सामान्य ब्याज-दर से अधिक मिलता है । कुछ स्थानों पर उनके लिए अलग से काउंटर भी बने होते हैं । कुछेक समाज-सेवी संस्थाएं भी हैं जो वरिष्ठ नागरिकों की सहायता तन-मन-धन से कर रही हैं । लेकिन घरों में वृद्धों को जो मुश्किलें हैं, उन पर सरकार का ध्यान कम ही है ।

माता-पिता की ओर देखें तो वे जीवन की इस आपा-धापी में अपनी नौकरी की सारी कमायी अपने बच्चों के लालन-पालन में लगा देते हैं । यहां तक कि बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए किसी ऋण आदि का सहारा भी लेना पड़े तो उससे भी नहीं चूकते । उनका लक्ष्य सिर्फ़ एक ही होता है–अपने बच्चों के लिए जो उन्होंने सुनहरे सपने देखे हैं, उनको सच होते देखना । अपने बच्चों की ज़िंदगी के बारे में सोचते हुए उन्हें न ही अपने भविष्य का ख़याल रहता है और न ही अपने स्वास्थ्य का । अपना सब कुछ बच्चों में बांट जब वह वृद्धावस्था में पहुंचते हैं तो उनके अपने पास अपना कहने के लिए कुछ भी नहीं बचता । उनके पास न पहले जैसी शारीरिक क्षमता बचती है और न ही वैसी मानसिक शक्ति । बेचारे अपना सब कुछ लुटाकर किसी ओल्ड ऐज होम (वृद्ध-आश्रम) का रास्ता देखने के लिए मजबूर से हो जाते हैं । मैंने देखा है कई नौनीहालों को, जो अब बड़े हो चुके हैं, अपने माता-पिता पर हाथ उठाते हुए । ऐसी स्थिति में उन बुज़ुर्ग माता-पिता पर क्या गुज़रती है, इसका अंदाज़ा हम और आप नहीं लगा सकते है, केवल वह ही जानते हैं ।

मैं कई बार यह सोच कर हैरान भी होता हूं और दुखी भी कि माता-पिता अकेले अपने चार-चार बच्चों की देखभाल तो कर सकते हैं, लेकिन वही चार बच्चे बड़े होकर आपस में मिलकर अपने माता-पिता की देखभाल नहीं कर पाते । क्यों ? इस क्यों का जवाब मुझे नहीं देना है, इस क्यों का जवाब तो हम सबको देना होगा । क्यों हम अपने माता-पिता को ओल्ड ऐज होम का रास्ता दिखा देते हैं ? क्यों हम अपने बूढ़े माता-पिता, जिन्होंने कभी हमारे लिए सुनहरे सपने देखे थे, के लिए सुनहरे सपने नहीं देख पाते? जिन्होंने हमारे लिए अपना समस्त जीवन कुरबान कर दिया, क्यों हम उनके लिए अपने जीवन के कुछेक पल भी

कुरबान नहीं कर सकते ? सुख देना तो दूर की बात है, क्यों हम अपने माता-पिता पर थोड़ा-सा तरस भी नहीं खा सकते ? आख़िर क्यों–कमी कहां है ? वजह क्या है ? आज की तेज़ रफ़्तार ज़िंदगी में बच्चे चाहते हैं कि कोई भी उनके निजी जीवन में दख़लंदाज़ी न करे, ऐसी स्थिति में जो बच्चे अपने माता-पिता की देखभाल ख़ुशी-ख़ुशी कर रहे हैं, उन्हें लाडी का सलाम और जो नहीं कर रहे उन्हें सोच-विचार करने की सलाह देता हूं ।

देश में संयुक्त परिवारों का प्रचलन तेज़ी से घट रहा है व एकल परिवार प्रथा में निरन्तर वृद्धि हो रही है । घर के वृद्धों को आज के युवा अपने पर बोझ समझ रहे हैं तथा उन्हें अपनी आज़ादी में रुकावट मानते हैं । हमें कोई हक़ नहीं कि हम अपने जन्मदाताओं को दर-दर ठोकरें खिलाएं, हमें अपनी इस प्रवृत्ति पर जल्दी ही अंकुश लगाना होगा । घर के बुजुर्गों की अवहेलना तो हमारे समाज के लिए कलंक है । ध्यान देने लायक़ बात है कि हमारी परंपरा में घर के बुजुर्गों को एक ऐसे स्तंभ के समान माना गया है जिसकी वट वृक्ष जैसी निश्चल छाया में परिवार को स्नेह व लाड-प्यार मिलता है । ग़ौरतलब है कि वरिष्ठ नागरिक तो सम्मान एवं सेवा के पात्र होते हैं और उनके सम्मान का विशेष ध्यान हर हालत में रखा जाना चाहिए । जिस देश में बच्चों के भविष्य तथा बुजुर्गों के सम्मान का विशेष ध्यान रखा जाता है वह देश सदैव प्रगति कि पथ पर अग्रसर रहता है । भाव यह कि देश की प्रगति भी बुजुर्गों के सम्मान के साथ जुड़ी हुई है ।

वरिष्ठ नागरिक देश व समाज की अमूल्य पूंजी हैं । उनका कार्य-क्षेत्र कोई भी रहा हो, समाज व देश के विकास में उनके योगदान को नकारा नहीं जा सकता । समाज व देश का कर्तव्य है कि वे अपने वरिष्ठ नागरिकों का उचित सम्मान करें व उनके कल्याणार्थ विभिन्न सरकारी योजनाओं को लागू करने में तीव्रता लाएं । 'कान्ति' के माध्यम से मैं वर्तमान पीढ़ी से अपील करता हूं कि वह घर में बुजुर्गों की अवहेलना न करें, उन्हें कभी भी दुख न दें तथा उनके अनुभवों से लाभ उठाकर अपने सौभाग्य का निर्माण करें । हमेशा यह याद रखें कि यदि हम अपने वर्तमान को सुंदर तथा भविष्य को सुखद बनाना चाहते हैं तो हमें बुजुर्गों का विशेष ध्यान रखना होगा उनकी सेवा और उन्हें सम्मान देकर हम अपने जीवन को सुगंध से भरपूर कर सकते हैं ।

"हज़रत इब्न उमर (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : सबसे बड़ी नेकी यह है कि आदमी अपने बाप के दोस्तों के साथ अच्छा सलूक करे ।"

(मुस्लिम)

एक हमदर्द

जमशेदपुर

कम खाने से दिल के दौरे का ख़तरा कम

आपने 'कम खाओ, ग़म खाओ' कहावत तो ज़रूर सुनी होगी किन्तु अब वैज्ञानिकों ने कम खाने की कहावत का संबंध दिल के दौरे के ख़तरे को दूर भगाने से भी जोड़ दिया है ।

वैज्ञानिकों का कहना है कि हालांकि भोजन करना स्वास्थ्य के लिए बहुत ज़रूरी है और यह ईश्वर द्वारा दी गयी सबसे बड़ी नेमत है लेकिन अगर हम बिना सोचे-समझे इसका ज़रूरत से ज़्यादा उपयोग करते रहें तो ईश्वर प्रदत्त यही नेमत हमारे लिए मुसीबत का सबब बन सकती है ।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि जो व्यक्ति असामान्य रूप से गरिष्ठ अथवा ज़्यादा मात्रा में भोजन लेते हैं, उन्हें आगामी दो घंटे की अवधि के भीतर दिल का दौरा पड़ने की संभावना चार गुना तक ज़्यादा बढ़ जाती है और भोजन के एक घंटे बाद तक तो यह ख़तरा 10 गुना तक ज़्यादा होता है और उसके बाद जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, यह ख़तरा कम होता चला जाता है ।

यह निष्कर्ष स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने हृदयाघात की वजह से अस्पताल में भर्ती क़रीब 2000 मरीज़ों द्वारा दिल का दौरा पड़ने से पहले लिए गये भोजन के बारे में जानकारी एकत्रित करने के बाद निकाला है । यह जानकारी एकत्रित करने के बाद स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने पाया कि इन व्यक्तियों ने हृदयाघात वाले दिन अन्य दिनों की अपेक्षा ज़्यादा भारी भोजन किया था ।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार हालांकि हृदयाघात की कई वजहें हो सकती हैं लेकिन जिन लोगों को पहले हृदयाघात हो चुका है, उन्हें खाने-पीने के मामले में विशेष सावधानी बरतनी चाहिए तथा सीमित मात्रा में भोजन करना चाहिए ।

विशेषज्ञों का कहना है कि उच्च वसायुक्त भोजन के परिणामस्वरूप हार्मोन्स, थक्के बनाने वाले कारकों व शर्करा में वृद्धि हो जाती है तथा इसका प्रभाव वही हो सकता है, जो अत्यधिक शारीरिक श्रम व भारी व्यायाम का होता है ।

इस्लामी पुस्तकें

आपकी अमानत आपकी सेवा में	(मौलाना कलीम सिद्दीक़ी)	₹10
मय्यित के अहकाम व मसाइल	(शाहिद हुसैन नदवी)	₹25
कुरआन, बाइबल और आधुनिक विज्ञान	(डॉ॰ ज़ाकिर नाइक)	₹50
इस्लाम और हिन्दू धर्म में समानताएँ	(डॉ॰ ज़ाकिर नाइक)	₹25
दुनिया के बड़े धर्मों में ईश्वर की कल्पना	(डॉ॰ ज़ाकिर नाइक)	₹25
पवित्र क़ुरआन और आधुनिक विज्ञान	(डॉ॰ ज़ाकिर नाइक)	₹35

पुस्तक विक्रेता और दावती काम करनेवालों के लिए विशेष छूट

KHALID BOOK DEPOT

Head Office: Chander Ghata, Maqbara, Kota - 6 (Raj.)
Branch Office: B-138, Shaheen Bagh, Jamia Nagar, N.Delhi-25
Ph.: 0744-2381650, 08233318955 E-mail: mkkhan123456@gmail.com

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन: 011-26949430
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह के
रसूल (सल्ल॰) ने बताया :
अल्लाह तआला क़ियामत के दिन
एक आदमी से कहेगा, ऐ आदम के बेटे,
मैं बीमार पड़ा था, तू मेरी इयादत को नहीं आया ।
वह कहेगा, ऐ मेरे रब, कैसे तेरी इयादत को आता
और तू तो रब्बुल आलमीन है । अल्लाह कहेगा
क्या तुझे मालूम नहीं, मेरा फ़लां बन्दा बीमार
पड़ा था पर तू उसकी इयादत को नहीं गया ।
क्या तुझे मालूम न था अगर तू उसकी इयादत
को जाता तो मुझे उसके पास पाता ।
(हदीस)

EK KHAIRKHAH
MUMBAI

Posted on 20-21 May 2012
June 2012
E-mail: kantimonthly@hotmail.com
Publishing Date: 18.05.2012

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14

BHARAT INDUSTRIAL TRAINING CENTRE (BITC)

Director's view
(from the chamber of director)



It was long cherished desire to the SKILl DEVELOPMENT & EDUCATIONAL SOCIETY (SDES) established a Technical Institute. to benefit the minority and backword communities of Chhotanagpur region. In this hard and competition age with the major problem of unemployment, it was felt to be most burning need of the time to prepare the present generation confirming to the requirement of the modern time, thus the idea was conceived and after much sweet and toil, the SDES achieved its goal in 2001.

We have gathered speed and are now taking longer strides towards the development of BHARAT INDUSTRIAL TRAINING CENTRE (BITC). Supported by a team of officiant and qualified faculty and an excellent and full fledged infrastructure. We have succeeded in making this institute highly reputable in the state.

We have planned and involved ourselves in creating a community development centre where our faculties is successfully conducting the courses in the field of Engineering under N.C.V.T., D.G.E. & T. ministry of labour & employment Govt. of India. Like : FITTER, ELECTRICIAN and non ITI short term technical job oriented courses in the field of Engineering.

1. Instrumentation & Control Engg.
2. Industrial Safety Management
3. Electrician (Industrial)
4. Quality Control (QC)
5. Pipe Fitter & Fabricator
6. TIG & ARC Welding (6G)
7. Water Treatment
8. Mobile Crane Operator
9. Excavator & Shovel Operator
10. JCB Operator
11. Crawler Crane Operator
12. Tower Crane Operator
13. Auto Cad/CNC Operator
14. AC+Refrigeration Technician
15. Turner Operator